॥ श्रीः ॥

भिक्षु यश रसायण।

संशोधकः—

दुर्जनदास सेठिया।

प्रकाशकः—

भीनासर निवासी

हुकमचन्द मूलचन्द सेठिया।

मुद्रकः—

महालचन्द बयेद।

"ओसवाल प्रेस"

१९, सीनागोग स्ट्रीट, कलकत्ता।

मिलने का पता:—

हुकमचन्द मूलचन्द सेठिया
पो० मु० भीनासर
(बीकानेर)

हुकमचन्द भारमल सेठिया
मु० दुबराजपुर
(बीरभूम)

वीर निर्वाणाब्द २४६५

पञ्चमावृत्ति १,०००] विना मूल्य [विक्रम सम्वत १९९४

प्रकाशक—
भीनासर निवासी
हुकमचन्द मूलचन्द सेठिया।



मुद्रक—
महालचन्द बयेद।
ओसवाल प्रेस।
१६, सीनागोग स्ट्रीट, कलकत्ता।



भूमिका

श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बियों में तेरापंथी सम्प्रदाय वालों के लिये इस पुस्तक का परिचय प्रदान अनावश्यक है।

प्रातः स्मरणीय श्रीमदाचार्य्य स्वामी भिक्षुजी महाराज एक क्षण जन्मा महापुरुष थे। पुरातन शिथिल ते को दूर करके स न प्रकाश के लिये उन्होंने जो संकल्प किया को कितनी बाधा विपत्तियां सहते हुए पूर्ण कि सो इस पुस्तक में वर्णन किया गया है।

यह पुस्तक पुरुष का ौकिक जीवन वृत्तान्त तो है ही, साथ साथ उनके सम-सामयिक मतों का पता भी इस से प्र ा है। इसके श्रीमद् जीत जी स्वामी हैं। जो आचार्य्य श्री के चतुर्थ पट्टधर हुए।

भाषा म ड़ी है। वर्त्तमान काल के ढंग से यह नहीं लिखा है। पर हमारी में यही इसका विशेषत्व है। ऐतिहासिक धा तत्वविद् पण्डितों के लिये इस पुस्तक का समादर इसी लिये होना चाहिये। क्योंकि कोई धर्म मत के प्रच महात्मा की जीवनी उनकी जीवनकालिक घटनावली तथा उनकी उपदेशावली यथा सम्भव उसी की भाषा में होने से उसका यथार्थ स्वरूप ठीक २ मालूम हो ता है।

तेरापन्थी मात्र इस पुस्तक को सादर अपनावेंगे इसमें कोई शङ्का नहीं, परन्तु अन्यान्य मत वाले इस पुस्तक से तेरापन्थी मत के प्रतिष्ठाता के धार्मिक जटिल प्रश्नों पर ल व सहज दृष्टान्त द्वारा समाधान की शैली देख के मुग्ध होंगे।

स्थानकवासी सम्प्रदाय से अलग होने के वक्त पूज्यपाद श्रीमद् भिक्षु स्वामी के अनुयायी साधु व श्रा बहुत ही थोड़े थे। प्र- दायिक व धार्मि भेद से भारत के जल वायु के प्रभाव से भीषण ईर्षा द्वेष उ होता है, यह देश के लोगों का स्वभाव सा ही है। परन्तु प्रबल बाधा के सन्मुखीन होकर जो महापुरुष अपने ध्येय व लक्ष्य पर अटल अचल रहकर पहुंचते हैं वे क्रमशः लोगों के वन्दनीय व नमस्य हो जाते हैं। भारत के या के प्रसिद्ध २ जितने धर्म मत प्रचारक महापुरुष आविर्भूत हुए हैं प्रायशः प्रथम जीवन में उनको विषम बाधाओं का ना करना पड़ा है। पर यह सब बाधायें उनका निहित अदम्य तेज को अधिकतर प्रज्वलित वि । ज्यों ज्यों बाधायें बढ़ी है त्यों त्यों महापुरुषों के महत्व का अधिकाधिक परिचय मनुष्य मात्र पाकर चकित विस्मित व पुलकि हुए हैं। जो अदम्य अध्यवसाय, दृढ़चित्तता पर आस्था और अलौकिक भावों से मुग्ध हो उनके भक्तों में सम्मिलित हुए हैं ऐसे दृष्टांत इतिहास में बहुत मिलते हैं और यह पुनः आचार्य्य प्रवर श्रीमद् भिक्षु स्वामी के जीवन में भी परिस्फुट है।

भारत की आर्य्य भूमि आध्यात्मिक उन्नति प्रयासी महापुरुषों का आविर्भाव क्षेत्र है। युग युगान्तर से यह बात बार सिद्ध हो चुकी है। अवश्य कुछ लोकमान्य महापुरुष नवीन मत के प्रवर्तक होकर अनेक शिष्य व भक्त पाये हैं। और अब भी उन लोगों का मत प्रचलित है। परन्तु जैन धर्म जैसा "अहिंसा" की दृढ़ भित्ति पर स्थापित सनातन शाश्वत धर्म को शताब्दियों का शिथिलाचार से मुक्त करके प्रबल प्रतिद्वन्द्वियों के सामने खड़ा होने का साहस अकेला भिक्षु

स्वामी ही किया था। सिंह विक्रम से उन्होंने सबका कुतर्क-जाल छिन्न भिन्न करके । का र किया। जहां पहले पहल १३ साधु व इतने ही श्रा थे आज वहां सैंकड़ो श्र श्रमणी व लाखों श्रा श्राविका श्री पूज्य भिक्ष स्वामी के मार्ग को अङ्गीकार किये हुये हैं।

आगमों का रहस्य सरल सुबोध्य भाषा में मनुष्य के भ्राने के उद्देश्य से ढाल दोहा चौपाई आदि छन्दों में र्य्य प्रवर के भाषणों का सार संग्रह करके है। साधारण अल्प वाले निरक्षर व्यक्ति भी सुललित ध धर्म ग्रन्थ को सहज में कण्ठस्थ रख सके इस लिये प्रायशः रण जनता में का आदर होता है। हिन्दी में तुलसीदासजी की रामायण, बङ्गला में कृत्तिवासी रा णं काशीराम दास का महाभारत, चैतन्य चरिता आदि ग्रन्थ जैसा आबाल वृद्ध वनिता आदर की दृष्टि से देखते हैं वैसे ही जैन ज में भी धार्मिक । व उपदेशावली अधिकतर पद्य में ढाल दोहा चौपाई आदि में होने के आदरनीय है।

इस ग्रन्थ के कर्त्ता परम पूज्य श्री १००८ श्री जीतमलजी स्वामी (जो 'जय गणि' से प्र है) का संक्षेप में परिचय देना यहां अप्रासंगिक न होगा। अतः आपका शुभ-जन्म " मारवाड़ में रोयट ग्राम में ओसवाल वंश में गोलेछा जाति में सं० १८६० आश्विन शुक्ला २ को हुआ था। श्रीमद् भिक्षु स्वामी का स्वर्गवास १८६० भाद्र शुक्ला १३ को हुआ था। अतः ग्रन्थकर्त्ता श्री र्ये भिक्षु स्वामी के जीवन चरित्र जो 'भिक्षु यश रसायण' से प्रकाशित किया वह प्रमाणिक होने में कोई सन्देह नहीं हो स । साधुओं की रीति अनुसार आचार्य्य के जीवन की प्रधान प्रधान घटनावली का उल्लेख करके रखा जाता है इसके अलावे श्रीमद् भिक्षु ी के स मयिक साधु मुनिराजों से श्रवण करके ग्रन्थ रचा गया इस लिये इसमें वर्णित घटनावली बड़ी ही प्रमाणिक मानी जाती है।

श्री मज्जयाचार्य्य का पाण्डित्य का वर्णना करना मादृश अल्प बुद्धि वालों के लिये असंभव है। इनका रचा हुआ "भ्रम विध्वंस" ग्रन्थ जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी मत का एक बड़ा ही अमूल्य ग्रन्थ है। तेरापंथी मत से दूसरे सम्प्रदाय का जो जो बातों में फरक है उसका समाधान शास्त्रीय प्रमाणों से बड़ा ही विस्तार से करके हरएक की शङ्का दूर करने का सहज व सरल उपाय रख गये। आप श्री भगवती सूत्र की भाषा में जोड़ करके अपनी अपूर्व प्रतिभा व पाण्डित्य का निदर्शन रख गये हैं। आपका रचा हुआ लगभग ३–३॥ लाख गाथा होगा इसीसे आपका विद्वत्व कवित्व व पाण्डित्य का सामान्य दिग्दर्शन हो जायगा।

इस ग्रन्थ की भाषा मैंने ऊपर में ही कहा है कि "मारवाड़ी" है। इसलिये शुद्ध संस्कृत बहुल हिन्दी भाषा जानने वाले इसके बहुत से शब्दों के वर्णविन्यास से चौंक न उठें। मारवाड़ी भाषा के अनुसार ही शब्दों के वर्ण विन्यास हैं। व्याकरण दोष नहीं है।

हिन्दी व बङ्ग-भाषा के विद्वानों से प्रार्थना है कि वे मारवाड़ी भाषा के इस महापुरुष की जीवनी पठन व अध्ययन करके अन्यान्य भाषा के चरित्र ग्रन्थ से इसकी तुलनात्मक समालोचना करें। धर्म की परीक्षा के लिये नहीं परन्तु मत प्रचार के जीवन से उनके उपदेशावली से लाभ उठाने के उद्देश्य से अपनावें। जै के खास कर तेरापन्थी सम्प्रदाय के आचार्य्य तथा साधु महाराजों के बनाये हुए बहुत से ग्रन्थ विद्वानों के देखने व मनन करने लायक है। इन ग्रन्थों से ऐतिहासिकों को भाषा तत्वविदों को धर्म मत समालोचकों को दार्शनिकों को बहुत सी सामग्री उनके गवेषणा के लिये मिलेगी। तेरापन्थी सम्प्रदाय के वर्त्तमान आचार्य्य श्रीमद्‌ भिक्षु स्वामी के नवम पट्टधर परम पूज्य श्री १००८ श्री तुलसीरामजी स्वामी का व उनके शिष्य वर्ग का दर्शन सेवा करने से अन्य मतावलम्बी विद्वान जैन श्वे० तेरापन्थी सम्प्रदाय के अमूल्य ग्रन्थराजि का परि-

पा   गे। साथ साथ साधुओं का दैनन्दिन कार्य्य कलाप व उपदेश व्याख्यान सुन कर कृतार्थ होंगे। जिन महापुरुष की जी कथा को दृष्टान्त में रखके जिनका   रसायन से उत्तरोत्तर अधिकतर पाण्डित्य व प्रतिभाशाली अधिकतर तपस्वी, वैरागी, त्यागी मुनिराजों ने   में तेरापन्थी सम्प्रदाय को अलंकृत कर   है उनके दर्शन की आकांक्षा इस वर्त्तमान पुस्तक के पठन से होगा स्वभाविक है। तेरापन्थी सम्प्रदाय के साधु-मुनिराज   से बिलकुल विरक्त रहते हैं। पुस्तकादि   छपवाते नहीं। समस्त हस्तलिखित रखते हैं। कोई कोई श्रावक अध्यवसाय पूर्वक   ो कण्ठस्थ कर दू   हस्तलिखित प्रति बनवा के पीछे छ   ते हैं। श्रीयुक्त महालचन्दजी बड़ा ही परिश्रम व उद्योग करके यह पुस्तक छपाया है। आशा है समाज में तो उनका इस पुस्तक का आदर होगा ही परन्तु दूसरे   वाले इसका यथोचित पठन व आलोचना करके इसपर योग्य सम्मतियां देंगे एवं तेरापन्थी समाज के अन्यान्य प्रकाशित हस्तलिखित ग्रन्थराजि पर औतसुक्य प्रगट करेंगे।

निवेदक—

छोगम चोपड़ा।

संशोधक के दो शब्द।

मुझे शुद्धाशुद्धिका विशेष ज्ञान नहीं है। इसलिये मैंने इसका संशोधन ओसवाल प्रेसके अध्यक्ष श्रीयुत् बाबू महालचन्दजी बयेद की सह ।से किया है। यद्यपि प्रूफ संशोधन में भरसक सावधानी से काम लिया गया है तथापि भूल करना मनुष्य का स्वभाव है। छपते समय भी कुछ अक्षर और मात्राऐं टूट जानी सम्भव है। अतः कुछ भूलें रहजानी स्वाभिक है। जो भूलें पाठकों की नज़र तले आवें उनसे मुझे सूचित कर दें। इस कृपा के लिये मैं उनका चिर कृतज्ञ रहूंगा और आगामी आवृत्ति में हठ त्याग कर उन भूलों को सुधार दूंगा।

पेज नं० २३५ की पंक्ति १३ गाथा ३ के ४ चरणों के स्थान में केवल-२ चरण छपे हैं। अर्थात् २ चरण छूटे हुए हैं। तलाश करने पर प्रथम संस्करण की कापी नहीं मिली इस लिये वे छूटे हुए दो चरण इसमें नहीं दिये जा सके, अगले संस्करण में सुधारने की चेष्टा करूंगा।

भवदीय—

दुर्जनदास सेठिया।

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

भिक्खु यश रसायण ।

॥ दोहा ॥

सिद्ध साधु प्रणमी सखर, आणी अधिक उलास ।
सुख दायक आखूं सरस, चारू भिक्खु विलास ॥१॥
गुणवंतना गुण गावतां, उत्कृष्ट रसायण आय ।
पद तीर्थंकर पामियें, कह्यो सु ज्ञाता मांय ॥२॥
शासन वीर तणे श्रमण, कह्या अधिक अधिकाय ।
गुण बुद्धि तप अरु ज्ञान करि, चउदश सहंस सुहाय ॥३॥
सर्वज्ञ जिन मुनि सत सय, अवधि तेर सय आण ।
मन पज्जव सय पञ्च मुनि, चिउंसय वादी पिछाण ॥४॥
पूर्वधर तिण सय पवर; वैके सत सय वाघ ।
समणी सहंस छतीस शुद्ध, चउदस सय निरुपाधि ॥५॥
सुधर्म्म जम्बू तिलक शिव, अन्य मुनि अमर विमाण ।
हिवड़ाँ पञ्चम काल में, भिक्खु प्रगट्या भाण ॥६॥
चतुर्थ आरा ना मुनि, नयणां देख्या नांय ।
धन २ भिक्खु चरण घर, प्रत्यक्ष दर्शन पाय ॥७॥

किहां उपना जन्म्या किहां, परभव पद किहां पाय ।
किया चौमासा किण विधे, सांभलज्यो सुखदाय ॥८॥
चिउंसय सत्तर वर्ष लग, नन्दीवर्द्धन निहाल ।
त्यां पीछे विक्रम तणो, साम्प्रत सम्वत् संभाल ॥६॥

॥ ढाल पहली ॥

सुण वाई अप मण हेस्रो लागै ॥ पदेशी ॥

सकल द्वीप शिरोमणिरे लाल। जम्बू द्वीप सुतंत। अष्टमो चन्दकला इसोरे लाल भरत क्षेत्र झलकंत। भवजीवांरे॥ रूड़ो लागै भिक्खु ऋष-राय। रूड़ो लागै स्वामी सुखदाय ॥१॥ बत्तीस सहंस देशां मझरे लाल। नरधाम मरुधर देश। कांठै नगर कंटालियोरे लाल, कमधज राज करेस ॥ २ ॥ साह बलूजी तिहां बसैरे लाल, ओसवंश अवतंस। जाति संकलेचा जाणज्योरे लाल, बड़े साजन सुप्र-शंस ॥ ३ ॥ दीपांदे तसु भारज्यारे लाल, सरल भद्र सुखकार। उदरे भिक्खु उपनारे लाल, देख्यो सुपन उदार ॥ ४ ॥ मृगपति महा महिमा निलोरे। पुण्य-वंत सुत सुपसाय। सफल स्वप्न सुखदायकोरे लाल, देखो हरषी माय ॥५॥ यशधारी सुत जन्मियोरे लाल, अनुक्रम अवसर आय। सम्वत् सतरैसे तियासियै रे लाल, पञ्चांग लेखै ताहि ॥ ६ ॥ आषाढ़ सुदी

ोपतोरे , तेर ति जणाय। सर्व्वं सिद्धा योदशीरे , कहै गत ॥ ७ ॥ दशां मांहिलो दीपतोरे , नक्षत्र मूल निहाल। यो चौथो परवरोरे । , न्म थयो तिण ॥ ८ ॥ न्म कल्याण थयां पछैरे । , भात य। उत्पत्तिया बुद्धि ति घणीरे । , बिविध वै न्याय ॥ ६ ॥ सुन्दर इ परण्या हीरे , सु - दाई बिनीत। भिक्ष ने परभव त ीरे लाल, चि धिकी चित्त ॥ १० ॥ केता दिन गछवास्यां कन्हेरे , । -गुरु ण। पाछे पोत्याबंध न्हेरे ल, णना ग्या ब ाण ॥११॥ पछै । रु थजीरे । , छो पोर बंध। ते हि ं ज सरधै नहींरे, न रधै ध ॥ १२ ॥

ि तो बित्यां पछैरे , शील ादरियो ार। भिक्ष ने तसु भारज्यारे , रित्रनी चित्त धार ॥ १३ ॥ लेवां त्यां ै रे ाल, ए ान्तर वधार। भिग्रह एहवो आदर्योरे । , बिर पणौ बिचार ॥ १४ ॥ तठा पछै ः । त ोरे , पड़ियो ताम वियोग। गपण मि ता बहुरे । , गि न बंछ्या भोग ॥ १५ ॥ दीक्षा ने त्यारी थयारे , अनुमति न दिये माय। रुघ-

नाथजो ने इम कह्योरे लाल, म्हे सिंह स्व देखाय ॥ १६ ॥ तब बोल्या रुघनाथजीरे लाल, सां वाई वाय। सिंह तणो पर गूंजसीरे लाल, ए भो छै चवदां मांय ॥१७॥ अनुमति मा पी तदारे ला , सहंस रोकड़ उन्मान। भिक्खु दिया ननी भणीरे ल, चारित लेवा ध्यान ॥ १८ ॥ दीख्या महोछव दीपतोरे लाल, बगड़ी शहर वखाण। द्रव्ये चारित्र धारियोरे लाल, भावे चरण म जाण ॥ १६ ॥ सम्वत् अठारै आठे समेरे लाल. घर छोड्यो विप जाण। द्रव्य गुरु धास्या रुघनाथजीरे लाल, पिण नाई धर्म्म नी छाण ॥२०॥ प्रथम ढाल प्रगट पणेरे ल, कह्यो भिक्खु नो जन्म कल्याण। वलि द्रव्य दीचा वरणवी रे लाल, वारु गैं वखाण ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

प्रत्य दिवसं आंतरे, सीख्या सूत्र सिद्धन्त।
तीव्र बुद्धि भिक्खु तणी, सुखदाई शोभन्त ॥१॥
विविध समय रस चांपतां, चारू कियो विचार।
अरिहंत वचन आलोचतां, ऐ असल नहीं अणगार ॥२॥
यां थापिता थानक आदरया, आधाकर्म्मी अजोग।
मोल लिया मांहे रहे, नित्य पिण्ड लिये निरोग ॥३॥

पडिलेह्यां विण रहे पड्या, पोथ्यां रा गज पेख ।
विण आज्ञा दीक्षा दिये, विवेक विकल विशेष ॥४॥
उपधि वस्त्र पात्र अधिक, मर्यादा उपरन्त ।
दोष थापै जाण जाण ने, तिणसूं ऐ नहीं सन्त ॥५॥
सरधा पिण साची नहीं, असल नहीं आचार ।
इण विध करै आलोचना, पिण द्रव्य गुरु सूं अति प्यार ॥६॥
पूछ्यां जाब पूरो न दे, काल कितो इम थाय ।
पीत द्रव्य गुरुसूं परम, ते करै शोभ सवाय ॥७॥
पूछै बात आचारनीं, जाणै वैरागी जेह ।
तिण सूं पूछै पलिवली, पिण नहीं और सन्देह ॥८॥
पटधारक भिक्खु प्रगट, हद आपस में हेत ।
इतलै कुण विरतन्त हुवो, सुणज्यो सहू सचेत ॥९॥

॥ ढाल २ जी ॥

परभवो मन में चिन्तवे मुझ आंग ॥ पदेशी ॥

इह अवसर मेवाड में, राज नगर सुजाण । राज मुद्र पासे वस्यो, अधिका त्यां आइठाण ॥ १ ॥ त्यां बस्ती घणी महाजनां तणी, जाण सूत्रांना जेह । वंदणा छोडी निज गुरु भणी, दिल में पड़ियो संदेह ॥ २ ॥ मरुधर में रुघनाथजी, सांभली सहु बात । भिक्खु ने तिहां भेजिया, शङ्का मेटण साख्यात ॥ ३ ॥ बुद्धिवंत विण म ना मिटै, तिण सूं थे बुद्धि-

वान। जाय शंका मेटो जेहनी, इम कहि मेल्या ते स्थान ॥ ४ ॥ टोकरजी हरनाथजी, वीरभाणजी साथ। भिक्खु स्वप भारीमालजी, दीक्षा दी निज हाथ ॥ ५ ॥ ऐ साथ लेई भिक्खु आविया, राज नगर मझार। सम्वत् अठारै पनरै समै, चौमासो गुणकार ॥ ६ ॥ चूंप धरी चरचा करी, भायांथी तिण वार। ते कहै वात भिक्खु भणी, आप देखो आचार ॥ ७ ॥ आधाकरमी-थानक आदर्या, मोल लिया प्रसिद्धि। उपधि वस्त्र पात्र अधिकही, आ पिण थे थाप कीधी ॥ ८ ॥ जाण किंवाड़ जड़ो सदा इत्यादिक अवलोक। म्हे वन्दना करां किण रीतसूं, थेतो थाप्या दोष ॥ ६ ॥ द्रव्य गुरुनो वैण राखवा, भिक्खु बुद्धिना भण्डार। अकल चतुराई करी तदा, दिया जाव तिवार ॥ १० ॥ कला विविध केलवी करी, त्यांने पगां लगाया। ते कहै शंक मिटी नहीं, पिण निसुणो मुझ वाया ॥ ११ ॥ आप वैरागी बुद्धिवन्त छो, आपरी परतीत। तिण कारण वन्दना करां, आप जगत में वदीत ॥ १२ ॥ इम कहिने वन्दना करी, इह अवसर मांय। भिक्खु रे असाता वेदनी, उदय आवी अथाय ॥ १३ ॥ अधिक ताव अति आकरो, सीओदोहरो सहणो। उत्तम नर ने ते

अवसरे, रूड़े चित रह्यो ॥ १४ ॥ अधम पुरुष दुःख उपनां, करै हायतराय। समचित वेदन ना सहै, पापे पिण्ड भराय ॥ १५ ॥ तीव्र तापनी वेदना, भिक्खु ने अधिकाय। तिण अवसर में आविया, एहवा अध्यवसायं ॥ १६ ॥ म्हे साचां ने तो झुठा, किया, श्री जिन बचन उठाय। आउ आवे इह अव-सरे, तो माठी गति पाय ॥ १७ ॥ द्रव्य गुरु काम आवै कदी, तो हिवे बात विचारूं। कारण मिटियां निर्वसूं, साचो मारग धारूं ॥ १८ ॥ जेम सिद्धन्त में जिन कह्यो, चूंपधरी तिम चालूं। काण न राखूं केहनी, झट जिन मारग झालूं ॥ १९ ॥ एहवो अभि-ग्रह आदर्यो, भिक्खु ताव मझार। उत्तम पुरुष ने आवै घणो, भय पर भवनो अपार ॥ २० ॥ दूजी ढाले आविया, राज नगर सुरीत। आंख अभ्यन्तर उघड़ी, निर्मल धारी नीत ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

तुरत ताव तब उतर्यो, विषसूं कियो विचार।
हिवे साचो मत आदरी, करूं आतम तणो उद्धार ॥१॥
रखे जूठ लागेला मो भणी, तो करणी पकी पिछाण।
इम चितवि सिद्धंतने, वांच्या अधिक सुजाण ॥२॥

जो साचा ने झूठा कहूं, तो परभवरे मांय ।

जीभ पामणी दोहिली, विविध पणें दुख पाय ॥३॥

पख राखी द्रव्य गुरु भणी, जो कहूं सांचा सोय ।

तो पिण परभवने विषे, काम कठिन अति होय ॥४॥

श्रो दूधारोखांडो अछे, एहवी मन में धार ।

दोय वार सूत्रां भणी, वांच्या धर अति प्यार ॥५॥

सूत्र विविध निर्णय करी, गाढी मन में धार ।

सम्यक्त चारित विहुं नहीं, एहवो कियो विचार ॥६॥

भायां ने भिक्खु कह्यो, थे तो साचा सोय ।

म्हे झूठा गुरु सूं मिली, शुद्ध मग लेस्यां जोय ॥७॥

भाया सुण हरष्श घणा, बोल्या एहवी वाय ।

अब म्हारी शंका मिटी, दिल में रही न काय ॥८॥

प्रतीत आप तणी हुंती, जिसी म्हारा मन मांय ।

तिसी दिखाडी तुरत ही, इम कही हरषित थाय ॥९॥

ढाल ३ जी ॥

(राणी भाषे सुणरे सूड़ा ॥ एदेशी ॥)

राजनगर थी कियो विहार । चौमासो उतरियां सार । आवै मुरधर देश मझार रे । मन प्यारा भिक्खु यश र यण सुणिजै ॥ १ ॥ साधां में सहु बात सुणाई, रधा किरिया ओल ई । ते पिण सुण हरष्या मन मांहीरे ॥ २ ॥ टो रजी हरनाथजी ताय

भारीमा घणा सुखदाय। भी गा पू रे पाय रे॥ ०॥ ३॥ वीरभाणजी थिए तिणवार। आद । भिक्खु ण उदार। वै गोजत शहर र रे॥ ०॥ ४॥ बीचे गाम नान्हा णी सोय। दोय थ किया ञलोय। सीख इण पर दीधी जोयरे॥ म०॥ ५॥ वीरभाणजी ने है वाय। जो थे पहिलां वो गुरु पाय। तो या बात म रज्यो कांय रे॥ म०॥ ६॥ पहिलां बात ं भिड़ य। न हुवै न मांय। तो पछै - भ दोरा रे॥ म०॥ ७॥ नेम तो ते पां रा गुरु है। न च्यां समभणा हु र है। विग-ड़ियां पछै म न रहै रे॥ म०॥ ८॥ क । विनय री हूं हस्यूं। दि । ै । ी देसूं। युक्ति म ई ले रे॥ म०॥ ६॥ स्वामी एम स्यांने सम या। वीरभाणजी गुंच या। रुघनाथजी सो पा रे॥ म०॥ १०॥ करजोड़ी ने वन्दना कीधी। पूछै द्रव्य रु प्रसिद्धि। भायांरी शङ्का मेट दीधी रे॥ ०॥ ११॥ वीरभाणजी बोल्या यो। तो चा भेदज गो। शङ्क वै तो मि यो रे॥ ०॥ १२॥ धाकर्मी थान यु आहार। बिन कारण नित्यपिण्ड र। पिं भोगवां

ए अणाचार रे ॥ म० ॥ १३ ॥ वस्त्र पात्र धिका
ञां। विन गन्या दीख्या देवां। विवेक विक
ने मूंड लेवां रे ॥ म० ॥ १४ ॥ दिन रात्रि में जड़ां
किंवाड़। इत्यादिक बहु दोप विचार। त्यांरी थाप
आपांरे धार रे ॥ म० ॥ १५ ॥ भाया तो कही साची
साख्यात। तिणमें झूठ नहीं तिलमात। द्रव्य गुरु
निसुणी ए वात रे ॥ म० ॥ १६ ॥ द्रव्यगुरु कहै यूं
कांई बोलें। वीरभाणजी पाछो झखोले। कूड़ो तो
भिक्खु पास अतोल रे ॥ म० ॥ १७ ॥ म्हारे कन्हें
तो वानगी तास। कूड़ो रास भीखणजी पास। इम
सांभल हुवा उदास रे ॥ म० ॥ १८ ॥ वीरभाणरे
नहीं समाही। तिणसूं आगुंच वात जणाई। हिवें
आया भिक्खु ऋपराई रे ॥ म० ॥ १९ ॥ तंत ढाल
कही ए तीजी। वीरभाण नो वात कहीजी। ऋप
भिक्खु नी वात रहीजी रे ॥ म० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

हिव भिक्खु द्रव्य गुरु भणी, वन्दे वेकर जोड़ ।
माथे हाथ दियो नहीं; चरमा देख्या ओर ॥१॥
जब भिक्खु मन जाणियो; आगुंच आवी वात ।
पहिलां मनड़ो फिर गयो; तो पूछूं साख्यात ॥२॥
कर जोड़ी ने इम कहे; यूं क्यूं स्वामी नाथ ।

चित्त उदास तिण कारणे; माथे न दियो हाथ ॥३॥
द्रव्य गुरु माले तांहरे; शंक पड़ी सुविचार ।
तिण नूं कर शिर ना दियो; मन पिण फाटो धार ॥४॥
वलि घरि ने मांहरे; भेजो नहीं आहार ।
वचन सुणी भिक्खु कहै, शंक मेटो इहवार ॥५॥
वलि भिक्खु मन चिन्तवे, म्हांमें दांमें जाण ।
संजम समगत को नहीं; पिण हिवड़ां न करणी ताण ॥६॥
प्रायश्चित लेई एहने, यूं प्रतीत उपजाय ।
पछे तरकर समझायने; आगूं मारग ठाय ॥७॥
इम चिन्तव द्रव्य गुरु भणी; बोलै पहली वाय ।
शंक जाणो तो मुझ भणी; प्रायश्चित दो सुखदाय ॥८॥
इम परतीत उपजायने, मेलो कियो आहार ।
हिवे समझावे किण विधे; ते सुणज्यो विस्तार ॥९॥

॥ ढाल ४ थी ॥

(हे राणी ने हो समझावे पण्डिता धाय—एदेशी)

हिवे द्रव्य गुरुने हो समझावे भिक्खु स्वाम । निसुणो वात अमाम । सूत्र वयण दिल सरदहो ॥ १ ॥ अरि अघ हणिवे हो देव कह्या अरिहन्त । गुरु जाणो निग्रन्थ । धर्म जिनेश्वर भाखियो ॥ २ ॥ साची सरधा हो ए जाणो तंत सार । पामें तिणसूं पार । आज्ञा वारें धर्म को नहीं ॥ ३ ॥ यां तीनूं में

हो भेल म जाणो लिगार। अन्तर आंख उघार। सूत्र सीख सरधो सही ॥ ४ ॥ और वस्तु में हो भेल पड़े जो आंय। तो रूड़ी पिण विगड़ाय। तो पुन्य पाप भेला किम हुवें ॥ ५ ॥ शुभ जोगां सूं हो वंधै पाप एकन्त। शुभ सूं पुण्य वधन्त। पुण्य पाप भेला किसा जोग सूं ॥ ६ ॥ एके करणी हो वंधै पुन्य के पाप। तिणमें मिश्र म थाप। करणी तीजी जिण ना कही ॥ ७ ॥ भिक्खु भाखें हो द्रव्य गुरुने वलोय। जिन वच साहमो जोय। ग्रही टेक ने परिहरो ॥ ८ ॥ शुद्ध श्रद्धा हो हाथ न आई श्रीकार। असल नहीं चार। थाप दीसै घणा दोपरी ॥ ९ ॥ जो थे मानो हो सूत्र नी वात। तो थेइज म्हारा नाथ। नहिंतर ठीक लागै नहीं ॥१०॥ म्हे घर छोड्यो हो आतम तारण काम। और नहीं परिणाम। तिण सूं वार वार कहूं आपनें ॥ ११ ॥ प मानो हो स्वामी सूत्र नी वात। छोड़ देवो पक्षपात। इक दिन परभव जावणो ॥ १२ ॥ पूजा प्रशं । हो ही अनन्ती वार। दुर्लभ श्रद्धा श्रीकार। निर्णय करो प एहनो ॥ १३ ॥ विविध विनय सूं हो ख्या वयण उदार। मान्या नहीं लिगार। क्रोध करी उलटा पड्या ॥ १४ ॥ भिक्खु भारी हो स्वामी बुद्धि

ना भण्डार। मन सूं कियो विचार। ए हिवड़ां न दीसै समझता ॥ १५ ॥ धीरे २ हो समझावस्यूं धर पेम। प विचारी एम। तिण सूं आहार णी तो थो नहीं ॥ १६ ॥ भिक्खु भाखै हो भेलो करां चौमास। चरचा करस्यां विमास। साच झूठ निर्णय रां ॥ १७ ॥ साची सरधा हो आदरस्यां सुख दाय। झूठी देस्यां छिटकाय। तब बोल्या रुघनाथ ाो ॥ १८ ॥ म्हारा धां ने हो तूं लेवै फंटाय। जो चौमासो भेलो थाय। भिक्खु कहै रा ो जढ़ ज ने ॥ १९ ॥ ते चरचा में ो समझे नहीं लिगार। करो चौरासो ोकार। दुर्लभ सामग्री ए लही ॥ २० ॥ इण विध ोधा हो भिक्खु नेक उपाय। तो पिण नाया ठाय। कर्म घ । तिण कारणे ॥ २१ ॥ बि मिरि हो भिक्खु दूजी बार। बगड़ी शहर झार। य द्रव्य गुरुने इ हे ॥ २२ ॥ स्वामी भू । हो द्धा आचार। मन में करो विचार। विविध रे मझाविया ॥ २३ ॥ पिण नहीं मानी हो द्रव्य गुरु बात लिगार। ण लियो तिणवार। ए तो न दी म ता ॥ २४ ॥ निज त्म नो हो हिव रूं निस्तार। एहवी मन में धार। आहार णी तो निस । ॥ २५ ॥ चौथी ढाले हो ल्यो

चा।चा सरूप। छो रीत नूप। गल बात सुहामणी ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

थानक बारे निसरया, तड़के आहारज तोड़।
जब द्रव्यगुरु मन जाणियो, बात हुई अति जोर ॥१॥
रहिवा जागां न मिलें, तो फिर थानक आय।
सेवक फिरियो शहर में, जागां न दीघी काय ॥२॥
जो रहिवा भिक्खु भणी, जागां दीधी जाण।
सर्व साथ सुणाव्यो सही, संघ तणी छै आण ॥३॥
कड़णी कुबुद्धिज केलवी, आसी पाछा एम।
जब भिक्खु मन जाणियो, करिवो विचार केम ॥४॥
पुर में जागां ना दिये, जो फिर थानक जांय।
तो पाछो फन्द में पड़ं, दुखे निसरणो थाय ॥५॥
एहवी करे विचारणा विहार कियो तिण वार।
शूरवीर सिंह नी परें, न डरया मूल लिगार ॥६॥
आया बगड़ी बारणे, बायल अधिक विशेष।
बानी तब पग थांभिया, भिक्खु परम विवेक ॥७॥
जैतसिंहजी री जिहां, छत्रयां अधिक उदार।
देखी ने आया जिहां, बैठा छत्रया मझार ॥८॥
पुर मांहि जाण्यो प्रगट, सुणयो द्रव्य गुरु सोय।
आया छत्रयां ने विषे, साथे बहुला लोय ॥९॥

ढाल ५ मी

(राम कहै सुग्रीवने रे लङ्का केतियक दूर पदेशी)

बगड़ी री छत्रयां मझेरे, बहु लोक बोलै इ वाय। टोलो छोड़ी मत नीकलोरे। धैर्य धरो मन मांय। चतुर नर भिक्खु बुद्धि ना भण्डार ॥ १ ॥ रुघनाथजी इसड़ो कहै रे, थें मानो भीखणजी बात। अठारूं आरो पांचमुं रे नहीं निभोला साख्यात ॥ च० ॥ २ ॥ भिक्खु बलता भाखै भलो रे, म्हे कि मानां तुझ बात। म्हें सूत्र बांच निर्णय कियो रे, शङ्का नहीं तिल मात ॥ च० ॥ ३ ॥ तीर्थ श्रीजिन-वर तणो रे, छेहड़ा तांई विचार। श्री जिन आणा सिर धरी रे, शुद्ध पालस्यूं संजम भार ॥ च० ॥ ४ ॥ ए वचन सुणो द्रव्य गुरु भणी रे, तूटी आश तिवार। मोह आयो तिण अवसरे रे, चिन्ता हुई अपार ॥ च० ॥ ५ ॥ सामजी ऋष नो साध थो रे, उदैभाण कहै एम। टोला तणा धणी आजने रे, आंसूं पच करो केम ॥ च० ॥ ६ ॥ किणरो एक जावै तरै रे, आवै फिकर अपार। म्हांरा पांच जावै सही रे, गण में पड़ै बिगाड़ ॥ च० ॥ ७ ॥ मोह देखी द्रव्य गुरु भणी रे, दृढ चित्त भिक्खु धार। मैं घर छोड्यो तिण दिने रे, मुझ माता रोई अपार

॥ च० ॥ ८ ॥ भागलां भेखो हूं रहूं रे, तो परभव में पेख। विविध परे रोवणुं पड़े रे, पामें दुः विशेष ॥ च० ॥ ६ ॥ कठिन छाती इण विध करी रे, वारुं ज्ञान विचार। सेंठा रह्या तिण वसरें रे, उत्तम जीव उदार ॥ च० ॥ १० ॥ द्वेप स्यूं तुरत नर ना डीगैरे, राग दे तुरत चलाय। द्रव्य गुरु मोह आणयो नहीं रे, पिण कारी न लागी . यं ॥ च० ॥ ११ ॥ फिर बोल्या रुघनाथजी रे, जासी कितियक दूर। आगो थांरो ने पूठो मांहरो रे, लोक लगावस्यूं पूर ॥ च० ॥ १२ ॥ परीपह खमण री मुझ मन मझे रे, भिक्खु भाखें विशाल। इम तो डरायो नहीं डरूं रे, जीवणुं कितोएक काल ॥ च० ॥ १३ ॥ विहार कियो बगड़ी थकी रे, द्रव्य गुरु लारें देख। चरचा करी बड़लु मझे रे, सांभलज्यो सुविशेष ॥ च० ॥ १४ ॥ रुघनाथजी इसड़ी कहे रे, सांभल भिक्खु वात। पूरो साधुपणुं नहीं पलें रे दुखमकाल ख्यात ॥ च० ॥ १५ ॥ भिक्खु कहे इम भाखियो रे, सूत्र आचारांग मांय। ढी । भागल इम भा सीरे, हिवड़ां शुद्ध न च य ॥ च० ॥ १६ ॥ बल संघयण हीणा घणा रे, पञ्चम का प्रभाव। पूरो चार पलें नहीं रे, नहिं उत्सर्ग प्रस्ताव ॥ च० ॥ १७ ॥ आगूंच

जिनजी भाखियो रे, इम कहसी भेष र। ए ब्र
णी रुघनाथजी रे, तिणवार ॥ च० ॥१८॥
गुरु रे हुई घणीरे, चरचा मांहों मांय। क्षेप
त्र ही इहां रे, पूरी केम हाय ॥ च० ॥ १६ ॥
द्रव्य ह है भिक्खु भणी रे, दोय घड़ी शुभ
ध्यान। चो तो चारित्र पालियां रे, पा के न
॥ च० ॥ २० ॥ भिक्खु कहै इण विध है रे, बे घड़ी
केवल ज्ञान। तो दोय घड़ी तांई रहूं रे, श्वास रुंधी
धरूं ध्य ॥ ० ॥ २१ ॥ प्रभव शि ज्जंभव आदि दे
रे, बे घड़ी पालयो के नाहिं। केव त्यांने न उपनो
रे, सोच विचारो मन मांहि ॥ च० ॥ २२ ॥ चवदै
हंस शिष्य वीरना रे, त सौ केवली सोय। तेर
सहंस ने तीन सौ रे, छद्मस्थ रहिया जोय ॥ च० ॥
२३ ॥ त्यांने के नहीं उपनो रे, त्यां बे घड़ी लयो
के हिं। थारे ले त्यां पिण नहीं पालियो रे, बे
घड़ी चरण सुहाय ॥ च० ॥ २४ ॥ रै वर्ष तेरह पखे
रे, वीर रह्या छद्मस्थ। थारे ले त्यां पिण नहीं
पालियो रे, दोय घड़ी चारित ॥ च० ॥ २५ ॥ इत्या-
दि हुई घणी रे, चरचा मांहों मांहि। समझाया
मझ नहीं रे, किया नेक उपाय ॥ च० ॥ २६ ॥
पवर ढाल ही पांचमी रे, चर्चा विविध प्र र।

हिव भिक्खु किण रीत सूं रे, करै आत्तम नो उद्धार ॥
चतुर नर सांभलो भिक्खु विलास ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

द्रव्य गुरु तो समझ्या नहीं, खप बहु कीधी ताहि ।
जैमलजी काका गुरु, आया त्यांरे पांहि ॥१॥
भद्र सरल प्रकृति भली, जैमलजी री जाण ।
भिक्खु तास भली परे, समझावै सुविहाण ॥२॥
जैमलजी रे युक्ति सुं; दी सरधा बैसार ।
भिक्खु रे साथे भला, ते पिण हो गया त्यार ॥३॥
बात सुणी रुघनाथजी, भांग्यां तसु परिणाम ।
फकीर वाली दुपटो हुसी, न हुवे थांरो नाम ॥४॥
बुद्धिवन्त साधु साधवी, लेसे त्यांने लार ।
लांडे कोडे घर छोडिया, और होसी निराधार ।.५॥
थाने रोसी सहु जणा, थे म विचारो बात ।
थारे बहु परिवार छै, घणा तणा थे नाथ ॥६॥
थांरा साधां रा जोग सूं, होसी भिक्खु रो काम ।
टोलो भिक्खु रो बाजसी, थारो न हुवे नाम ॥७॥
इत्यादिक वचनां करी पाड्या तसु परिणाम ।
तब जैमलजी बोलिया, सुणो भीखणजी आम ॥८॥
गला जितो हूं कल गयो, थे शुद्ध पालो सोय ।
पंडितां रे जाणी वर्ते, इम बोल्या अवलोय ॥९॥

॥ ढाल ६ ठी ॥

(सुण सुण रे शिष्य सयाणा—पदेशी)

शिष्य भिक्खु ना महा सुखकारी। भारीमाल सरल भद्र भारी॥ त्यांरो तात कृष्णोजो तास। बेहु घर छोड्या भिक्खु रे पास॥ सुण सुणरे शिष्य सयाणा रूड़ो भिक्खु जश रसायणा॥ भिक्खु जश रस अमृत भारी। शिव सम्पति सुख सहचारी॥ १॥ आसरै दशमें वर्ष आया। भारीमाल सरल सुखदाया॥ भेषधार्‌यां माहि छता सोय। सुत तात भिक्खु शिष्य होय॥ सु०॥ २॥ त्यांरे चेला तणी छै रीत। तिण सूं शिष्य किया धरि प्रीत॥ त्यांमें रह्या आसरै वर्ष चार। पछै निसरिया भिक्खु लारै॥ सु०॥ ३॥ कृष्णाजी री प्रकृति करड़ी जाणी। भारी माल भणी वदै वाणी॥ संजम लायक नहीं तुझ तात। तुम तो उत्तम जीव विख्यात॥ सु०॥ ४॥ आपां नवी दीख्या लेस्यां सोय। लागू होता दिसै बहु लोय॥ आहार पाणी वचनादिक ताय। कृष्णा जीने दुक्कर अधिकाय॥ सु०॥ ५॥ तुझ मन मुझ पास रहिवा रो। के निज जनक कन्हे जावारो॥ इम पूछ्यो भिक्खु धर प्रेम। भारीमाल उत्तर दियो एम॥ सु०॥ ६॥ म्हांरे तात थकी कांई काम। हूं तो

श्र ।प कन्हें रहस्यूं ताम ॥ संजम पालस्यूं रूड़ी रीत।
मोने आप तणी परतीत ॥ सु० ॥ ७ ॥ कृष्णजीने
भिक्खु कहै ताम। थांसूं मूल नहीं म्हारे म ॥
चारित्र पालणो दुक्कर कार। तिण थाने न लेवां
लार ॥ सु० ॥ ८ ॥ कृष्णोजी कहै मोने न वो।
तो म्हारो पुत्र मो ने सूंप देवो ॥ सुत ने राखसूं
मुझ साथ। इण ने लेजावा न देऊं विख्यात ॥
सु० ॥ ६ ॥ भिक्खु कहै पुत्र ए थांरो। वै तो
न वरजां लिगारो ॥ जब आयो भारीमा पास।
और जागां लेईगयो तास ॥ सु० ॥ १० ॥ भारीमा
पिता ने भाखै। कृष्णाजी री काण न राखै ॥ थांरे
हाथ तणु अन पाण। म्हारै जाव िव पच्च ाण ॥
सु० ॥ ११ ॥ भारी ल िभग्रह कीधो भारी। दिन
दोय निस ा तिवारी ॥ रह्या सुरगिर जेम सधीरा।
हलुकर्मी मुलक हीरा ॥ सु० ॥ १२ ॥ तब बाप
थाको तिण वार। भिक्खु ने ाण प्यो उदार ॥
थांसूंइज राजी छै एह। म्हांसूं तो नहीं मूल नेह।
सु० ॥ १३ ॥ इण ने हार पाणी आण दीजै।
रूडा जतन करी राखी ै ॥ म्हांरी पण गति कांइक
कीजै। किण ही ठिकाणै मोने मेलीजै ॥ १४ ॥ थे
नहीं लियो जम भारो। जितरे करो ठिकाणो

म्हांरो ॥ भिक्खु सूंप्यो जैम जीने ।ण। जैमलजी हरष्या ति जाण ॥ सु० ॥ १५ ॥ जैमलजी बो । तिणवारी । देखो भीखणजी री बुद्धि भारी ॥ सूंप्यो कुम्भोजी म्हाने सोय। तीन घरां वधावणा होय ॥ सु० ॥ १६ ॥ कुम्भो हर्ष्यों ठिकाणै हूं आयो। म्हे पिण हर्ष्या चेलो एक पायो ॥ भिक्खु हर्ष्या टलियो गालो। तीनां घरां वधावणा न्हालो ॥ सु० ॥ १७ ॥ भारीमालरो सङ्कट टलियो। मन वाञ्छत कारज फलियो ॥ छट्ठी ढाल भारीमाल भारी। रह्या अडिग अचल गुणधारी ॥ सु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

हिव भिक्खु भारीमालजी, संत आदि दे तेर।
मनसोबो मोटो कियो, चारित लेणो फेर ॥१॥
सहर जोधाणा में सही, तेरह श्रावक ताहि।
सामायक पोसा करी, बैठा बाजार रे मांहि ॥२॥
फतेचन्द सिंघी प्रगट, दीवाण पद दीपंत।
चोहटै देख्या चालता, अत्यन्त तब पूछंत ॥३॥
सामायक पोसा सखर, कीधा चोहटै केम।
थानक में क्युं ना किया, उत्तर आपो एम ॥४॥
तज थानक मन थिर कियो, मुझ गुरु महिमावंत।
भिक्खु आप भारी घणा, परहर दियो कुपंथ ॥५॥

कहै दीवाण किम निसरया, वलि श्रावक बोलंत ।
वात घणी थिरता हुवै, जब सुणाजो घर संत । ६॥
दीवान कहै थिरता अवहि, वर्णवो सगली वात ।
श्रावक तब आखे सकल, विवरा सुध विख्यात ॥७॥
आधाकर्मी आदि दे, दूर किया सब दोष ।
सिंघी सुण हर्ष्यो सही, पायो परम सन्तोष ॥८॥
साधु नो ओहिज शुद्ध, मारग मोटो माण ।
प्रशंसे सिंघी प्रगट, चारुं करै बखाण ॥९॥

॥ ढाल ७ मी ॥

(आप हणी नहीं प्राण ने०—पदेशी)

फतेचन्द दीवान ते, वलि पूछा करै वारु हो । श्रावक थे केता सही, धार्या धर्म उदारु हो । शिव साधन सारु हो ॥ भिक्खु जश सांभलो वारु हो ॥१॥ श्रावक कहै तेरे अछां, आतम तारण हारु हो । सिंघी वलि पूछै सही, संत किता सुखकारु हो । नौका शिव ने तारु हो ॥ भि० ॥ २॥ श्रावक कहै तेरे सही, साधु सखर श्रद्धालु हो, भिक्खु समण शिरोमणि, वर माग विशालु हो ॥ भि० ॥ ३ ॥ सिंघी कहै आछो मिल्यो, वर जोग विचारु हो । श्रावक पिण तेरे सही, तेरे संत तंत सारु हो । भिक्खु बुद्धि ना भण्डारु हो ॥ भि० ॥ ४ ॥ सिंघी मुख प्रशंसा

सुणी, सेव उभो सुधारु हो। ततृहि ण तिण जोड़्यो तुको, तेरापंथ ए तारु हो। त्रिस्त ो नाम रु हो ॥ भि० ॥ ५ ॥

॥ सेवककृत दोहा ॥

साध साधरो गिलो करै, ते तो आप आपरो मंत।
सुणजो रे शहर रा लोकां, ए तेरापन्थी तंत ॥१॥

॥ ढा तेहि ॥

लोक कहै तेरापन्थी, भिक्खु सवली भावै हो। हे प्रभु ओ पन्थ है, गौर दाय न त्रै हो। मन भ्रम मिटावै हो ॥ सो ही तेरापन्थ पावै हो ॥ ६ ॥
पंच महाव्रत पालता, शुद्धि सुमति सुहावै हो। तीन गुप्त तीखी तरे, भल आतम भावै हो। चित्त सूं तेरा ही चाहवै हो ॥ ७ ॥

भिक्षुकृत छन्द ।

गुण बिन भेष कुं मूल न मानत,
जीव अजीवका किया निवेरा।
पुन्य पाप कुं भिन्न भिन्न जानत,
आस्रव कर्मा कुं लेत बरेरा ॥
आवत कर्मा ने संवर रोकत,
निर्जरा कर्मा कुं देत बिखेरा।
बन्ध तो जीव कुं बांधया राखत,
शाश्वता सुख तो मोक्ष में डेरा ॥

इसी घट प्रकाश किया,
भव जीव का मेट्या मिथ्यात अंधेरा ।
निर्मल ज्ञान उद्योत कियो,
ए तो है पन्थ प्रभु तेरा ही तेरा ॥१॥
तीन सौ तेसठ पाखण्ड जगत में,
श्रीजिन धर्म सूं सर्व अनेरा ।
द्रव्यलिंगी केई साध कहावत
त्यां पिण पकड्या त्यांराइज केड़ा ॥
ताहि कुं दूर तजे ते संत
विधि सूं उपदेश दिया रुड़ेरा ।
जिन आगम जोय ण किया,
जब पाखण्ड पन्थ में पड्या विखेरा ॥
व्रत अव्रत दान दया बतावत,
सावद्य निर्वद्य करत निवेरा ।
श्रीजिन आगन्या मांहें धर्म बतावत,
ए तो है पन्थ प्रभु तेरा ही तेरा ॥२॥

॥ ढाल तेहिज ॥

पन्थ अनेरा में रह्यो, तिण सूं भमण भमावै हो। प्रभु अव यो तेरा पन्थ में, तेरी ाज्ञा सुहावै हो। तेह थी शिव पद आवै हो ॥८॥ तेरा वचन ागै री, चारू धर्म चलावै हो। तेहिज छै तेरापन्थी, थिर कीरत थावै हो। भिक्खु समचित भावै हो ॥ ६ ॥ हिन्सा झूठ दत हरे, मैथुन परिग्रह मिटावै हो। तीन करण तीन जोग सूं, त्याग करी तन ावै

हो, त ै हो ॥ १० ॥ इर्या भाषा एषणा, रूड़ी रीत वै हो। । ण भण्ड न वणा, पर ठण ैणा रावै हो। ति सुमति सुह ै हो ॥११॥

मन नहीं आदरै, वच । वश वै हो। डुई परिहरै, तीन गुप्त तंत वै हो। थिरता पद चि थ ै हो ॥ १२ ॥ र ढा । ी, गुण भिक्खु गावै हो। नाम तेरापन्थ निरमलो, र्थ अ पम वै हो। खरो सुजश णावै हो ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

भारी बुद्धि भिक्खुतणी, निर्मल मेल्या न्याय।
अरिहन्त आज्ञा थाप ने, श्रद्धा दी ओलखाय ॥१॥
कर त्यारी हुवा, तेर जणा तिणवार।
नाम कहुं हिव तेहना, भि ु गण श्रृङ्गार ॥२॥
थि लजी फतेचन्दजी, बड़ा सुत वेह।
भिक्खु आचारज भला, ज्ञान । गुण गेह ॥३॥
टोकरजी हरनाथजी, भारीमाल सुविनीत।
भद्र सुखदायका, पूज्य सूं प्रीत ॥४॥
वीरभाणजी सातमो, ति मीचन्दजी लार।
म ने गुलाबजी, दूजो भारमल धार ॥५॥
रूपचन्द ने पेमजी, प तेरां रा नाम।
नवी दीक्षा लेवा तणा, तेरां रा परिणाम ॥६॥
रुघनाथजी रा पञ्च छै, छः जयमलजी रा जोय।
दोय अन्य टोला तणा, पं तेरह ही होय ॥७॥

चर्चा केयक बोलरी, करी मांहोमा तास।
केइक अलपज्ञ करचिया, ऊपर आयो चौमास ॥८॥
चौमासा हां मणी, ि दिया भलाय।
आसाढ़ सुदि पुनम दिने, संजम लीञ्यो ताय ॥६॥

॥ ढाल ८ मी ॥

(सीहल नृप कहै चन्दने परदेशी)

भिक्खु मुख सूं इम भणे, मुणिन्द मोरा। चौमासो उत ां जाण हो। सरधा चार मींढ्यां पछे मु० भेलो करस्यां आहार ण हो। र गुण कर ोभतो न्याय भिक्खु गुण निलो मु० थिक ओ ागर ाप हो ॥ १ ॥ जो श्रद्धा । ार मिली नहीं ० तो भेलो न करां ाहार हो। इम पहलां मझावियां ० देश में ड़ हो ॥ २ ॥ सम्वत् अठारे तरे मैं, मु० पञ्चाङ्ग ले पिछाण हो। । ढ़ सुदी पुनम दिने, मु० केलवे दीक्षा ल्याण हो ॥ ३ ॥ रिहन्त नी लेई न्या, मु० पचख्या पाप ठार हो। सि खे ी जी ० ाधो ज ार हो ॥ ४ ॥ हरनाथजी हाजर हुंता, मु० टोकरजी ि हो। परम भग भारीमालजी, ० पूरो ज्यांरो विश्वा हो ॥ ५ ॥ तरोतरे केलवा मझे, ० चौमासो हो देवल अंधारी ओरी तिहां, मु० कष्ट सह्यो सुविशेष

हो ॥ ६ ॥ हिवै ी सो थ्यो, ० भे हुवा
सहु हो। र ने गुलाबजी, ० -
दी हुवा हो ॥ ७ ॥ तत्त्व ी,
० वि जीव हो। जे सिद्धां में
नहीं; ० रखे दीत्र हो ॥ ८ ॥ थिर-
जी फतेचन्द ी, ० भि
हो। टो ी हरनाथजी, ० भारीमाल बहु जाण
हो ॥ ६ ॥ रूड़े चित्त भेला रह्या, ० वर
वदीत हो। जीव ग णज्यो, ० परम
हों हिं प्रीत हो ॥ १० ॥ त णा भे
रह्या, ० केयक धुर ही थी र हो। ोय पाछे
न्यारो ो, ० न पोंहता र हो ॥ ११ ॥
वि वीर णजी, ० रह्या भि रे हजूर हो।
अवि व रो, ० तिण निषेध ने
वि यो दूर हो ॥ १२ ॥ पछे ा पिण फिर गई;
० वीर णरी विशेष हो। इन्द्रियां श्रद्धने,
० द्रव्य ाव जीव ए हो ॥ १३ ॥ ने बो
धा प , ० वि ड़ी विनय थी हो।
से गण बारे कियो, ० पछे णाने मूं यो
ात हो ॥ १४ ॥ रह्या ते मांहेला, ०
ात हुवा इ दूर हो। पिण पुण्य भिक्खु.

तणां, ० दिन दिन चढ़ते नूर हो ॥ १५ ॥ शूरा सिंह तणी परे, मु० सुर-गिर जे धीर हो। अङ्गज ओ गर ति घणा, मु० बिड़द निभावण वीर हो ॥ १६ ॥ टोला छोड़ी ने निस ा, ० त्यांरी पिण नहीं त ाय हो। ्न ा हजारां ोड़ीने, मु० ा दीधी ो य हो ॥ १७ ॥ तिशय धारी ओपता, ० ा ण शिरमणि मोड़ हो। आचार्य इण का‹ में, मु० वर न एहनी जोड़ हो ॥ १८ ॥ सावद्य निर्वद्य शोधने, मु० दान दया ओ ाय हो। ब्रत अब्रत वर वारता, मु० भि २ भेद बताय हो ॥ १९ ॥ उत्पत्ति बुद्धि ापरी, मु० ाछी धिक अनूप हो। दृष्टान्त विविधज दीपता, मु० चि चरचा ति चूंप हो ॥ २० ॥ भली ए ाठमी, मु० भिक्खु गुणरा ाडार हो। उमङ्ग री चरण आदर्यो, ु० ण शिरोमणि ार हो ॥२१॥

दोहा

स्वाम मारग सच्चो लियो, करवा जन्म कल्याण।
कुगुरु कुबुद्धि अति केलवी, जन भरमाया जाण ॥१॥
भागल भेषधारयां तणे, उपनो द्वेष अत्यन्त।
लोकां भणी लगाविया, विविध विलपन्त ॥२॥
कोई सङ्ग यांरो कीज्यो मती, लाग जावेला लाल।
निन्हव छै ए निकल्या, कोई कहै जमाली गोशाल ॥३॥

यां देव गुरु ने उत्थापिया, दान दया ने उत्थाप।
जीव बचावे तेह में, ए कहै अठारे पाप ॥४॥
भग्गु भिड़काया पुत्रां भणी साधां में चूक बताय।
ज्यूं भिक्खु सूं भिड़काविया, ओहिज मिलियो न्याय ॥५॥
जिहां जिहां भिक्खु विचरता, आगुंच जोवै बाट।
कह्यो कन्हैं जायज्यो मती, थोड़ा में होय जाय थाट ॥६॥
कोई तो प्रश्न पूछवा, केयक देखण काज।
कुगुरां ग भरमाविया, ऊंधा बोलता नाणे लाज ॥७॥
उपसर्ग अनेक दे रह्या, बदे वचन विकराल।
पिण क्षमा भिक्खु तणी, बाद अधिक विशाल ॥८॥
अधिक नीत आचार नी, सुमति अधिक उपयोग।
अधिक गुप्त गुण आगला, जशधारी शुभ जोग ॥९॥

॥ ढाल ६ ठी ॥

(ब्रजवासी लाल कान्ह तें मेरी गागर कांय मारी एदेशी)

भिक्खु स्वाम भारी, जगत उद्धारक जशधारी ॥ ए आंकड़ी ॥ भारी रे खिम्यां गुण भिक्खु ना भाल २। निर्लोभी मुनि निर्मल न्हाल ॥भि० ॥१॥ कपट रहित शुद्ध सरल कहाय २। निरहंकार रुड़ी नरमाय ॥ भि० ॥ २ ॥ लाघव कर्म उपधि वर लाज २। सत्य वचन स्वामी सुख साज ॥ भि० ॥ ३ ॥ वारु रे भिक्खु नो संजम वाह वाह २। लीधो मनुष्य जनम नो लाह ॥ भि० ॥ ४॥ वारुरे भिक्खु

नो तप तहती २। रूड़ै चि नि । रमणीक ॥ भि० ॥ ५ ॥ रु रे द नि ने दे आण २। नित्य ति गोचरी रत प्रधान ॥ भि० ॥ ६ ॥ घोर ब्रह्म भिक्खु नो सार २। सङ्ग रहित तिहुं ोग श्री कार ॥ भि० ॥ ७ ॥ इर्या धुन भिक्खु निराज २। णकै चाल रह्यो गजरा ॥ भि० ॥ ८ ॥ भ सुमति भिक्खु नी २। निर्वद्य निर्मल ह्वा ॥ भि० ॥ ९ ॥ एषणा ि अनुपम ार २। देखनहारो पा चमत्कार ॥ भि० ॥ १० ॥ व ादि लेतां जैणा विशेष २। म्हेलतां अति उपयोग संपे ॥ भि० ॥ ११ ॥ पञ्चमी सुमति भिक्खु नी पिछाण २। सावचेत भिक्खु सुविहाण ॥ भि० ॥ १२ ॥ व गु ण २। ील दया निग्रन्थ ॥ भि० ॥ १३ ॥ अष्ट सम्पदा गुण अधिकार २। आचार्य भिक्खु अणगार ॥ भि० ॥ १४ ॥ आचारज गुण सु छती २। भिक्खु में शोभै निश दि ॥ भि० ॥ १५ ॥ पञ्च महाव्रत निर्मल पालंत २। च्यार कषाय भिक्खु टालंत ॥ भि० ॥ १६ ॥ वश करै इन्द्रिय पञ्च विचार २। पञ्च सुमति त्रिण गुप्ति उदार ॥ भि० ॥ १७ ॥ चार पञ्च भिक्खु अमो २। ड़ हित

धिक तो ॥ भि० ॥ १८ ॥ उत्पत्ति बुद्धि भि नी उदार २। ततक्षिण ब दिये तंत ार ॥ भि० ॥ १६ ॥ न्यमति मति णै वच सार २। चित्त माहें चम ार ॥ भि० ॥ ॥ २० ॥ रु रे भिक्खु थारा न्त २। यंकारो धिक अत्यन्त ॥ भि० ॥ ॥ २१ ॥ वारु रे भिक्खु तुझ बुद्धि ना जाब २। पूछतां उत्तर देवै सिताब ॥ भि० ॥ २२ ॥ वारु रे भिक्खु तुझ वीर्य ाचार २। तें वि यो उद्यम अधिक उदार ॥ भि० ॥ २३ ॥ ब रे भिक्खु नीत ग २। तूं थ्यो बहु ने भाग ॥ भि० ॥ २४ ॥ रु रे भिक्खु तूं गिरवो गम्भीर २। तूं ण-दधि कुण तीर। भि० ॥ २५ ॥ ब रे भि मुद्रा ऐन २। पे त मे चित्त में ॥ भि० ॥ २६ ॥ ी सूरत दीर्घ देह विशाल २। नयण हस्ती नी ॥ भि० ॥ १७ ॥ जीव घणा तिरणा इण २। ागुंच देख्या दीन दया ॥ भि० ॥ २८ ॥ त्यां जीवां रे तरण रे । २। तूं प्रगट्यो मोटो मुनिरा ॥ २६ ॥ याद ावे भिव दिन रैन २। न वि सावे नैन ॥ भि० ॥ ३० ॥ न धार्यो शुद्ध २। म भजन मुनि

तू महा भाग ॥ भि० ॥ ३१ ॥ नघ अथग गुण भिक्खु मझार २। मैं संक्षेप कह्यो सुविचार ॥ भि० ॥ ३२ ॥ नवमी ढाले भिक्खु हृदय न्हाल २। महिमा गर मोटा गुण माल ॥ भि० ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

भारी गुण भिक्खु तणा, कहा कठा लग जाय।
मरण धार शुद्ध मग लियो, कमिय न राखी काय ॥१॥
परम दुर्लभ श्रद्धा ट, आखी श्रीजि आप।
तीजे उत्तराध्ययन तन्त, थिर भिक्खु चित्त थाप ॥२॥
बहुलकर्मी जीव बहु, उपजिया इण आर।
दिलमें वैसणी दोहिली, श्रद्धा महा सुखकार ॥३॥
परम पूरी धूर-पगथियो, श्रीजिन श्रद्धा सार।
शुद्ध सरध्यां समकित सही, भिक्खु कियो विचार ॥४॥
धर्म तणा द्वेषी घणा, लागू बहुला लोग।
समझाया समझे नहीं, अधिका मूढ़ अयोग ॥५॥
जद भिक्खु मन जाणियो, कर तप करूं कल्याण।
मग नहीं दिखे चालतो, अति घन लोग अजाण ॥६॥
घर छोड़ी मुझ गण मझे, सजम कुण ले सोय।
श्रावक ने वलि श्राविका, हुन्ता न दिसे कोय ॥७॥
पहवीं करै आलोचना, एकन्तर अवधार।
आतापन वलि आदरी, सन्ता साथे सार ॥८॥
चौविहार उपवास चित्त, उपधि ग्रही सहु तत।
आतापन लेवन मझे, तप कर तन तावंत ॥९॥

॥ ढाल १० मीं ॥

(पूज्यजी पधारो हो नगरी सेविया पदेशी)

थिरपालजी स्वामी फतेचन्दजी, संत दोनूं सुखकार हो महामुनि। तात सुत दोनूं तपसी भला, सरल भद्र सुविचार हो ॥ मं० ॥ थे भला ने अवतरिया हो भिक्खु भरत क्षेत्र में ॥ १ ॥ टोला में छतां बड़ा स्वामी भिक्खु थकी, त्यांने बड़ा राख्या भिक्खु स्वाम हो। म०। यांने छोटा करने हूं बड़ो होऊं, इण में सूं परमार्थ ताम हो ॥ मं० ॥ २ ॥ एकान्तर भिक्खु ऋष भला, लेवै आतापना लाभ हो। मं०। व्रत अव्रत लोकां ने बतावता, जन हर्षे सुण जाब हो। म० ॥ ३ ॥ सरल भद्र केइक लागा समझवा, वारु केइक बुद्धिवान हो। म०। ओलखणा आई श्रद्धा आचारनी, पायो धर्म प्रधान हो। म० ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

पंच वर्ष पहिचाण रे, अन्न पण पूरो ना मिल्यो।
बहुल पणे वच जाणरे, घी चोपड़ तो जिहांई रह्यो ॥

॥ ढाल तेहिज ॥

थिरपालजी फतेचन्दजी इम कहै, स्वामी भिक्खु ने सोय हो। म०। क्यूं तन तोड़ो थे तपस्या करी,

समझता दिसे वहु लोय हो। म० ॥ ५॥ थे वुद्धि वान थांरी थिर वुद्धि भली, उत्पत्तिया अधिकाय हो। म०। मझावो वहु जीव सैण भणी, निर्मल वतावो न्याय हो । म० ॥ ६॥ तपस्या करां म्हे त्तम तारणी, अधिक पहोंच नहीं और हो। म०। आप तरो थे तारो अवर ने, जाझो वुद्धि नो जोर हो। म० ॥ ७॥ संत वड़ांरो वचन भिक्खु सुणी, धार्यो धर चित्त धीर हो। म०। न्याय विशेष वतावता निर्मला, हरख्यो हिवड़ो हीर हो। म० ॥ ८॥ दान दया हद न्याय दीपावता, ओलखावता आचार हो। म०। जिन वच करी प्रभु माग जमावता, समझया वहु नर नार हो। म० ॥ ९॥ प्रगट मेवाड़ पूज्य पधारिया, युक्ति आचार नी जोड़ हो। म०। अनुकम्पा दया दान रे ऊपरे, जोड़ां करी धर कोड़ हो। म० ॥१०॥ अति उपकार करी पूज्य आविया, मुरधर देश मझार हो। म०। सखर पणे वर जोड़ां सुणावता, इम करता उपगार हो। म० ॥ ११॥ व्रत अव्रत मांड वतावता, सखरी रीत सुचङ्ग हो। म०। श्री जिन आज्ञा में धर्म श्रद्धावता, सुण जन पावे उमङ्ग हो। म० ॥ १२॥ यशधारी भिक्खु नो जगत में, वाध्यो जश विख्यात हो। म०। वुद्धि प्रबल

गुण पुण्य पोरसो, स्वाम भिक्खु साख्यात हो। म०। १३ ॥ भद्र प्रकृति बुद्धि पुण्य गुणे भला, परम पूज्य सूं प्रीत हो। म० ॥ १४ ॥ दशमी ढाल पूज्य दयाल नी, जाभी कीरति जाण हो। म०। देश प्रदेश मांहें जश दीपतो, विस्तरियो सुविहाण हो। म० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

साध श्रावक ने श्राविका, सखर भला सुविनीत।
समणी न हुई स्वाम रे, वर्ष किता इम बीत ॥१॥
किण ही भिक्खु ने कह्यो, तीर्थ धारे तीन।
साधं श्रावक ने श्राविका, समणी नहीं सुचीन ॥२॥
तिण कारण छे थांहरे, मोदक मोटो माण।
समणी विण खाण्डो सही, प्रत्यक्ष देख पिछाण ॥३॥
भिक्खु ऋष भाखे इसो, लाडू खाण्डो लेख।
पण चौगुणी तणो पवर, स्वाद अनूप संपेख ॥४॥
आछी बुद्धि उत्पात सूं, उत्तर दियो अनूप।
दिन केते हुई दीपती, समणी तीन सद्रुप ॥५॥
तीन बायां त्यारी हुई, संजम लेवा साथ।
भिक्खु ऋष भाखे भली, सुन्दर सीख साख्यात ॥६॥
संजम लेवो साथ त्रिण, पण तीनां में पेख।
वियोग एक तणुं हुवां, स्यूं करिवो सुविशेष ॥७॥
सलेषणा करणी सही, त्यां दोयां ने ताम।
करार पक्को इम करी, संजम दीधो स्वाम ॥८॥
कुशलांजी मट्टू कही, जोजी अजबू ताय।
एक साथ अदरावियो, साधपणुं सुखदाय ॥९॥

॥ ढाल ११ मीं ॥

(स्वामी म्हय रायचन्द राजा परदेशी)

गजब गुण ज्ञान करी गाजै रे, गजब गुण ज्ञान करी गाजै। गुरु भिक्खु पै अजब छटा हद भारी-माल छाजै॥ ए आंकड़ो॥ सरल भद्र भल श्रमण शिरोमणि. म्हय रूड़ा राजै। चरण करण धर समच्यां चित्त सूं. भ्रम कर्म भाजै॥ ग०॥ १॥ चान्त दांत चित्त शान्ति खरालज, उभय थकी लाजै। परम विनीत ""त हद पूरण, शिव रमणी साजै॥ ग०॥ २॥ जोड़ी गोयम वीर जिसी वर, शिष्य वारु जै, कार्य भलायां वेकर जोड़ी, करत मुक्ति जै॥ ग० ॥ ३॥ परम पीत पूज्य सुज पयसी पद भव दधि पाजै। कठिन वचन गुरु सीख कहै तो, समचित मुनि साजै॥ ग०॥ ४॥ उत्तराध्ययन छत्रीसे अध्ययने, उभा छता अधिकारी। वार अनेक गुणियां विध सूं, धुर गुरु आज्ञा धारी। गजब गुण ज्ञान गरव गारी रे॥ ग०॥ गुरु भिक्खु पैं जब छटा हद भारी माल भारी ॥ ५॥ भिक्खु भापै भारी-माल ने सांभल सुखकारी। काढै खूंचणो गृहस्थ कोई तो तेलो डंड त्यारी ॥ ग०॥ ६॥ भारी भापै भिक्खु ने, साचो कहै सारी। तब तो तेलो

तन्त रो, पिण द्वेष गत् धारी ॥ ग० ॥ ७ ॥
झूठो नाम लिये कोई जन, लागू अति री।
करिवो ते स्वामी प्र शो, आज्ञा धिकारी ॥ ग० ॥
८ ॥ भिक्खु कहै जो गो भाषै, तो तेलो त्यारी।
अण तो कोई आल दिये, तो सञ्चित सम्भारी ॥
ग० ॥ ६ ॥ पूरव संचित पाप उदय नो, तेलो तंत
री। स्वामी नो वच द्ध कियो कर जोड़ी अंगी
री ॥ ग० ॥ १० ॥ भारीमाल सुवनीत इसा भड़,
सुगुणा सु कारी। पुण्य प्रबल थी भिक्खु पाया,
ममत म मारी ॥ ग० ॥ ११ ॥ घोर घटा घन
गरजारवसी, बाण सुधा उवारी। भि २ भेद भली
पर भाषत, दा त दमि री ॥ ग० ॥ १२ ॥ हृद
ना त सुण जन हर्षंत, निर त नर नारी। नयना
नन्दन मति निकन्दन, पद सूरत प्यारी ॥ ग० ॥
१३ ॥ हिये निर्मल हरनाथ मुनि, टोकरजी तंत
री। परम विनोत भार जो, भल सन्त साता
री ॥ ग० ॥ १४ ॥ घर छोड़ी बहु थया मुनि,
धन्य ज्ञान गर्व गारी। समणी पिण बहु थई सयाणी
रण री ॥ ग० ॥ १५ ॥ दिन २ भिक्खु
नो ग दीपत, सरण शिणगारो। पंचम का स्वाम
परगटिया, तसु बलिहारी ॥ ग० ॥ १६ ॥ एकाद

शमी ढाल अनोपम, वारु विस्तारी। कठे तलक भिक्खु गुण कहिये, पामत किम पारो॥ ग०॥ १७॥

आगम रहिस अनुपम लही, स्वाम भिक्खु सार।
शुद्ध श्रद्धा शोधी सही, वलि आचार विचार॥१॥
दान सुपात्रे दाखियो, सन्त मुनी ने सार।
असंजती ने आपियां, एकन्त पाप असार॥२॥
भगवती अष्टम शतक मल, षष्ठम उद्देशे आप।
असंजती ने आहार दे, प्रभु कह्यो एकन्त पाप॥३॥
दे गृहस्थ ने दान ते, अनुमोदे अणगार।
निशीथ पनरमें निरखल्यो, डंड चौमासी धार॥४॥
सावज दान प्रशंसियां, हिन्सा रो वांछणहार
सूयगड़ा अङ्ग सूत्र में, आख्यो मुनि आंचार॥५॥
श्रावक सामायक मम्हे, अधिकरण अति जाण।
भगवती सप्तम शतक मल, प्रथम उद्देशे पिछाण॥६॥
श्रावक गृहिनी वर्णवी, अणाचार में आम।
दशवैकालिक देखल्यो, तीजे अध्ययने ताम॥७॥
श्रावक नो खाणो सर्व, अव्रत में अधिकार।
वर्णे उववाई वीसमें, वलि सूगडांग विचार॥८॥
इत्यादिक जिनवर अखी, शोधी भिक्खु स्वाम।
वले संक्षेपे वर्णवूं, सूत्र साख सुख ठाम॥९॥

ढाल १२ मीं।

(पूज्यने नमें शोभो गुण करै पदेशी)

पुत्र भगुनो परवरो, उत्तराध्ययन उमंग। सुज्ञानी रे। त्रि जिमायां तमतमा, चउदमे ज्झयण सुचंग सुज्ञानी रे॥ श्रद्धा दुर्लभ देवां कही॥

१ ॥ आद्रमुनि इम आखियो, सूयगडांग छट्ठे संम्भ। ।सु०। ब्राह्मण वे सहंस जिमावियां नरय तणा फल म्हाल ।सु० ॥ श्रद्धा० ॥ २ ॥ आणन्द श्रावक लियो अभिग्रहो, सात में अङ्ग अीकार ।सु०। अन्य तीर्थी ने आपूं नहीं असणादिक च्यारूं ।हार। सु० ॥३॥ प्र द गोशालाने पिया, सकडाल सेज्झा संथार। ०। उपासग सातमें ।खियो नहीं धर्म तप लिगार । सु० ॥ ४ ॥ देतो लेतो वतमान देखने, मून नही तिणकाल। सु०। पंचम अध्येने परखरो, सूयगडा ङ्ग म्भ । ० ॥ ५ ॥ दुःखी गालोढो देखने, प्रभुने गौत पुछन्त ।सु०। 'किंद ।' इण दान किसो दियो, विपाक सूत्रमें वृतन्त। सु० ॥६॥ अव्रत भात्र शस्त्र भाखियो ठाणा-अंग दश में ठाण। सु०। कोई व्रत सेवायां धर्म कहै, जिन मारग रा अजाण। सु० ॥ ७ ॥ नव प्रकारे पुण्य नीपजे, नवमा ठाणा म्हाल। सु०। समचे नवूं ही कह्या सही, समचै मन वचन संभाल। सु० ॥ ८ ॥ करणी धर्म अधर्म नी कही, जुजई दोनूं सुजाण। सु०। आचारंग चोथा ध्ययनमें, तीजो मिश्रनी करणी म ताण। सु० ॥ ६ ॥ आज्ञा माहें धर्म आखियो, वोलवो जुगतो न बाहार। सु०।

उत्कृष्टी चरचा आचारंगमें ।। छट्ठे अध्ययन रे दूजै विचार । सु० ॥ १० ॥ जिन आज्ञा तणा अजाणने, समकित दुर्लभ सुजाण । सु० । ाचारंग चौथे ध्ययनमें, चौथे उदेशै पिछाण । सु० ॥११॥ उद्यम करै आज्ञा विना, आज्ञामें लस य । सु० । सुगुरु कहै वे बोल होज्यो मती, आचरंग पांचमारे छट्ठा मांय । सु० ॥ १२ ॥ आज्ञा लोपी छान्दै चालै आप रै, ज्ञान रहित गुण हीण । सु० ॥ ाचारंग दूजा अध्ययन में, छट्ठै उदेशै सुचीन ॥ सु० ॥ १३ ॥ प्रमादी द्रव्यलिंगी पासत्था, वीर कह्या आज्ञाबार अवधार । सु० । आचारंग चौथा अध्ययनमें, पिण धर्म न कह्यो आज्ञा वार सु० ॥ १४ ॥ साधां छोड्यो उन्मार्ग सर्वथा, आदर्यो मार्ग उदार । सु० । आव-सग चौथा अध्ययनमें, साधां छोड्यो, ते अधिक असार । सु० ॥ १५ ॥ चार मंगल उत्तम शर्णा त्रिहुं, केवली परूप्यो धर्म मंगलीक । सु० । एहिज उत्तम शरणो पिण एहनो, तंत आवसगमें तहतीक । सु० । ॥ १६ ॥ इत्यादिक बोल अनेक छै, आगममें अधि-काय । सु० । स्वामी भिख्खु शोध शोधने; आछी रीत दिया ओलखाय ॥ सु० ॥ १७ ॥ पाखंडियां प्रभु पंथ उत्थापियो, उलट्यो जिन वचन अमोल

। सु० । भिक्खु आगम न्याय शोधी भला, प्रगट कीधी पा गडो री पोल । सु० ॥ १८ ॥ व दानमें धर्म छ्रायने, मतिहीण न्हाखै फन्द मांय । ० स्वामी सूत्र सम्भालने; व्रत अव्रत दीधी ब य । सु० ॥ १९ ॥ धम आगन्या बारै धारने, भेषधा ां मां ो भ्रम जाल । सु० । थिर नीव ज्ञा भिक्खु थापने, बारु जिन वच थाप्या विशा । सु० ॥ २० ॥ आगन्या वारै धर्म पा ां आद ां वर भिक्खु पूछ्यो इम वाय । सु० । आगन्या बारै धर्म किण परूपियो, इणरो मोने नाम बत । ० ॥ २१ ॥ विकल कहै म्हारी म । बांजणी, दियो तिणरो दृष्टान्त । सु० । वेश्याना पुत्र तणुं बलि, रा न्याय मेल्या धर न्त । सु० ॥२२॥

भि खु स्वाम कृत

जिण धर्म री जिन ाज्ञा दिये, जिन धर्म सि वै जिनराय । भविक जन हो । ाज्ञा बारै धर्म केणे सिखाविर्यो, इणरो आज्ञा देवै ण ताय । । भ० । श्री जिण धर्म जिन आज्ञा तिहां ॥१॥ कोई कहै म्हांरी माता है बांजणी, हूं छूं तिणरो अंग त । भ० । ज्यूं मूरख कहै जिन आज्ञा बिना, करणी कियां धर्म साख्यात । भ० ॥ २ ॥ मा बिन

बेटारो जन्म हुवै नहीं, जनमें ते वांज न होय।भ०। धर्म छै तो जिन आगन्या, ाज्ञा नहीं तो धर्म नहीं कोय। भ० ॥३॥ वेश्या पुत्र ने पूछा करै, थारी कुण माय ने ण तात। भ०। तो ओ नाम बतावै किण तात रो, ज्यूं । आगन्या बारला धर्म नी बात। भ० ॥४॥ वेश्या रो अंग जात ऊपनो, उणरो कुण हुवै उदेरी ने बाप। भ०। ज्यूं गन्या बारै धर्मने पुण्य तणो, जिन धर्मी तो कुण करै थाप। भ०॥ ५ ॥ वेश्या रो अंग जात ऊपनो, उण लखणो हुवै उदेरी ने बाप। भ०। ज्यूं आज्ञा बारै धर्मने पुण्य तणी, भेषधारी र कह्या थाप। भ० ॥ ६ ॥ इण ाज्ञा बारला धर्म रो कुण धणी, कुण ज्ञा देवै जोड्यां हाथ। भ०। देव गुरु मून साझ न्यारा हुवा, इणरी उत्पत्ति रो कुण नाथ। भ० ॥ ७ ॥ दुष्ट जीव मंजारी ने चीतरा, छल सूं करै पर प्राणी नी घात। भ०। ज्यूं दु हिंसा धर्मी जीवड़ा, छल सूं घालै लोकांरे मिथ्यात। भ० ॥८॥

॥ दा तोहि ॥

इत्यादिक ाज्ञा ऊपरै, स्वामी न्याय मेल्या सुखदाय। सु०। भाख्या भिन्न २ भेद भली परै, कसर न राखी काय। सु० ॥ १२ ॥ चारु ढाल कही

ए रमी. दान आ ऊपर सार। ु०। वलि श्रद्धा तणी बहु बार , तिणमें सूत्र स तंत सार। सु० ॥ २४ ॥

दोहा

पुण्यरी करणी, परवड़ी, श्रीजिन आगम सिन्ध।
भिक्खु. भली परै, प्रगट करी प्रबन्ध ॥१॥
निर्जरारी करणी निमल, जिन आज्ञा में जाण।
ते शुभ जोग निर्वद्य त्यां; पुण्य बन्ध पहिचाण ॥२॥
विरुई आज्ञा बारली, सावद्य करणी सोय।
पाप बन्धे तेहथी प्रगट, जिण थी पुण्य म जोय ॥३॥
शुद्ध बहिरावै साधने, कहि निर्जरा एकन्त।
भगवती अष्टम शतक भल, छट्ठे उद्देशे सुचिन्त ॥४॥
शुभ लाम्बो आऊ सखर, तसु बन्ध तीन प्रकार।
हिन्सा झूठ सेवे नहीं, सन्त भणी दे सार ॥५॥
बहिरावै वन्दना करि, आहार मनोज्ञ उदार।
भगवती पंचम शतक भल, छट्ठे उद्देश विचार ॥६॥
वन्दना ना फल वर्णव्या, नीच गोत क्षय नाश।
ऊंच गोत नो बन्ध इम, उत्तराध्ययन उजास ॥७॥
व्यावच कीधां बन्ध वलि, तीर्थंकर पुण्य ताम।
गुणतीसम ज्ञानी कह्यो, उत्तराध्ययने आम ॥८॥
इत्यादिक आज्ञा तिहां, पुण्य नो बन्ध पिछाण।
समय शोध भिक्खु सखर, आखी उज्झम आण ॥९॥

॥ ढाल १३ मी ॥

(पुण्य नीपजे शुभ जोग सूं रे लाल एदेशी)

दाखी व्यावच दश प्रकारनी रे लाल। ठाणा अङ्ग दशमें ठाणा हो। भविकजन। प्रगट दशों ही

।थ पिछाणज्योरे ।ल। जिण सूं पुण्य बंधे निर्जरा जाण हो। भ०॥ स्वामी श्रद्धा देखाई श्रीजिन वयण सूं रे ला ॥ १ ॥ कालोदाई पूछ्यो कर जोड़ने रे लाल। भगवती में भाख्यो भगवन्त हो। भ०। पाप स्थानक अठारह परहर्यां रे लाल। कल्याणकारी कर्म बन्धन्त हो। भ० ॥ स्वा० ॥ २ ॥ सेव्यां पाप स्थानक अठारह सही रे लाल। वन्धे पाप कर्म विकराल हो । भ०। सातमें शतक सम्भाल ज्यो रे लाल। दाख्यो दशमें उद्देशे दयाल हो। भ० ॥ ३ ॥ कर्कस वेदनी पिण इमहिज कही रे लाल। अठारह पाप सेव्यां असराल हो। भ०। न सेव्यां अकर्कस भर्त नी परे रे लाल। भगवती सातमा रे छट्ठे भाल हो। भ० ॥ ४॥ आख्यो ज्ञाता रे आठमा अध्ययनमें रे लाल। वीस बोल तीर्थङ्कर पुण्य बंधाय हो। भ०। वीसूं ही निर्वद्य वर्णव्यारे लाल। श्री जिन आज्ञामें शोभाय हो। भ० ॥ ५ ॥ सूत्र विपाक में सुबाहु तणी रे लाल। गौतम पूछा करी प्रभु पास हो। भ०। 'किं दच्चा' इण दान किसो दियो रे लाल। बारु निर्वद्य करणी विमास हो। भ० ॥ ६ ॥ अणुकम्पा सर्व जीवांरी आणियां रे ला । प्राणी ने दुख नहीं उपजाय हो। भ०। सातावेदनी तिणरै

बन्धै सही रे लाल। शतक सातमें भगवती सुहाय हो। भ० ॥७॥ करणी आठ कर्म बन्धनी कही रे लाल। भगवती आठमारे नवमे भेद हो। भ०। तिणमें निर्वद्य करणी पुण्य तणी रे लाल। सावद्य पापरो करणी संवेद हो। भ० ॥८॥ जयणा सूं साधु अहार करै जिहांरे लाल। पाप न बन्धै पिछाण हो। भ० ॥९॥ साधुरी गोचरी असावज सही रे लाल। दशवैकालिक देख हो। भ०। अध्ययन पंचमें आ यो रे लाल। बाणमी गाथा विशेष हो। भ० ॥१०॥ त कर्म ढीला पड़े सहीरे लाल। शुद्ध आहार करतां सार हो। भ०। पहिले शतक भगवती नवमें पे ल्यो रे लाल। एहवा श्रीजिन वचन आराध हो। भ० ॥ ११ ॥ इ ादिक बहु बोल नेक छै रे ल। िजिन आज्ञामें सोय हो। भ०। तिणसूं निर्जरा हुवै पुण्य बन्धै तिहांरे लाल ामी ओल या सूत्र जोय हो। भ० ॥ १२ ॥ सावज करणी आज्ञा बारै सही रे लाल। प्रगट थाप्यो पाखण्डयां पुण्य हो। भ०। भिक्खु आगम न्याय शोधी भला रे लाल। ज्यांरी श्रद्धा देखाई जबून हो। भ० ॥ १३ ॥ तंत ढाल कही ए तेरमो रे लाल। निर्वद्य करणी पुण्य री निर्दोष हो। भ०।

भिक्खु ओलखाई भांत भांत सूं रे ला । मिलै तिण सूं विच मोद हो । भ० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

सूत्र में समचै कही, अणुकम्पा अधिकार।
भिक्खु न्याय भली परें, शोध काढ्या तन्तसार ॥१॥
जीव असंजती जेहनो, जीवण वान्छे जाण।
सावज अ_ म्पा सही, मोहराग महि माण ॥२॥
मरणो बंछ्या द्वेष महि, जीवण राग जिवार।
पाप अठारमें प्रगट, भ्रमण करावै भार ॥३॥
मोहराग अनुकम्प में, आज्ञा न दिये आप।
इण कारण सावद्य छे, प्रगट राग है पाप ॥४॥
तरणो वांछे ते सही, श्रीजिन आज्ञा सार।
पाप टलावे पार को, ते निर्वद्य इकतार ॥५॥
निर्वद्य करुणा निर्मली, सावज अधिक असार।
विविध सूत्र निर्णय सखर, स्वाम दियो तंतसार ॥६॥
प्रायश्चित आवै प्रगट, अरिहन्त आज्ञा बार।
अनुकम्पा सावज छे, वारु हिये विचार ॥७॥
गाय भेंस आक थोर नो, ए च्यारूं ही दूध।
ज्यूं अनुकम्पा जाणज्यो, मनमें राखी सुध ॥८॥
आक दूध पीधां थकां, जुदा हुवै जीव काय।
ज्यूं सावज अणुकम्पा कियां, पाप कर्म बंधाय ॥९॥

॥ ढाल १५ वीं ॥

(दया धर्म श्री जिनजी री वाणी एदेशी)

अनुकम्पा स जीवनी आणी, बान्धै छोड़े धुतिण वारोजी। छोड़ताने अनुमोद्यां चौमासी, निशीथ

बारमें निरधारोजी ॥ स्वाम भिक्खु निर्णय कियो सूत्र सूं ॥ १ ॥ बाघ सिंह हिंसक जीव त्रिलोकी, मार न कहै मतिवन्तो जी। मति मार नहीं कहै राग आणी मुनि, सूयगडांग इकवीस में संतोजी ॥ २ ॥ वीर असंजम जीतब बरज्यो, दशमें सूयगडांग दयालोजी दशमें ठाणे बलि आचारङ्गमें, बारु बचन अनेक विशालो जी ॥ ३॥ उत्तराध्यायन बावीसमें अध्येने, नेम पाछा फिरया जीव न्हालोजी। इतरा जीव हणै मुझ अर्थे, बारु फल पर भवन विशालोजी ॥४॥ मिथिला नगरी बलती जाण नमि मुनि, स्हामो न जोयो सोयोजी। उत्तराध्ययन रे नवमें अध्ययने, करणा सावज नाणी कोयोजी ॥ ५ ॥ मनुष तिर्यंच देव मांहो मांहीं, विग्रह देखी विशेषोजी। जीत हार बांछणी बरजी जिन, दशवैकालिक सात में देखोजी ॥ ६ ॥ बायरो वर्षा शीत तावड़ो कलह उपद्रव रहित सुकालोजी। बोल सातूं ही बांछणा बरज्या, दशवैकालिक सात में दयालोजी ॥७॥ दूजै आचारङ्ग अध्ययन दूसरे, प्रथम उद्देशे सुपन्थोजी। माहोंमा गृहस्थ लड़ता देखी ने मुनि, मार मत मार न कहै महन्तोजी ॥ ८ ॥ तीन आत्मरक्षक तीजा ठाणा रे तीजै, देणो उपदेश हिन्सक देखीजी। न समझे

तो मून राखणी निरम , वलि एकन्त जाणो विशेषी जो ॥९॥ उत्तराध्ययन रे इकवीस में अध्ययने, तस्कर ने मारतो देखी तायोजी। समुद्रपाल लियो वर संयम, मोह करुणा नाणी मन मांयोजी ॥ १० ॥ समचे अनुकम्पा कही ते साम्भलो, लखण आज्ञा थकी मींढ लीज्योजी। प्रभु आज्ञा देवै तेतो निर्वद्य प्रत्यक्ष, आज्ञा नहीं ते सावज ओलखीज्योजी ॥११॥ अणुकम्पा सुलसांरी आणी, सुर हरण गवेषी सो'योजी। पुत्र देवकीरा म्हेलया प्रत्यक्ष, अन्तगढ़ में अवलोयो जी ॥ १२ ॥ ईंट उपाड़ मूकी कृष्ण आवत, अणु-कम्पा पुरुष नी आणीजी। अन्तगढ़ दशा में पाठ अनोपम, जिन आगन्या नहीं जाणीजो ॥ १३ ॥ उत्तराध्ययन बारमें अध्ययने, अणुकम्पा हरकेशी नो आणीजो। छात्रांने ऊंधा पाड्या यक्ष छलकर, प्रत्यक्ष सावद्य पिछाणीजी ॥१४॥ रेणादेवीरो करुणा करी जिन ऋष, स्हामो जोयो साक्षातोजी। नवमें अध्ययने ज्ञाता मांहें न्हालो, अनर्थ दुःख उत्पतो जी ॥ १५ ॥ कोई कहै कलुणरस छै करुणा, अणुकम्पा नहीं आखीजी। अनुकम्पा करुणा दया अनुक्रोस ए, कलुण रसना नाम अमर साखीजी ॥ १६ ॥ करी नेम जीवांरी अनुकम्पा, अनुक्रोस पाठ

आछोजी। तिण अनुक्रोस नो अर्थ करुणा टीका में, सावज निर्वद्य कलुणरस साचोजी ॥ १७ ॥ सम्यक्त बिन मेघ गज भव साम्प्रत, अणुकम्पा सुसखारी आणीजी। प्रत संसार मनुष्य आयु प्रगट, प्रथम व्ययन ज्ञाता में पिछाणीजी ॥ १८ ॥ निज गर्भरी णुकम्पा निमते, रूड़ो भोगव्यो धारणी राणीजी। प्रथम अध्ययन ज्ञा हीं प्रत्यक्ष, जिहां जिन आगन्या किम जाणीजी ॥ १९ ॥ अभयकुमार नी र णु या, दोहलो पूरयो धारणी रो देवोजी। ए पिण ज्ञाता रे प्रथम अध्ययने, म्प्रत सा णो स्वयमेवोजो ॥ २० ॥ ि तेजू लेश्या म्हेली ह ी, अनुकम्प गोशाला री णीजी। सूत्र भगवती पनरमें शतके, वृत्ति मांहें सराग ब ा-णीजी ॥ २१ ॥ प न्नणा सूत्र रे छत्रीसमें पद, लब्धी तेजू फो ं ि या ागैजो। तिणरा दोय भेद उष्ण शीतल तेजू छे, शी तेजू फोड़ी वीर ागैजी ॥ २२ ॥ हो साधुरो हर्ष छेद्यां वैद्य ने किया, नहीं धुरे वि या निहालोजो। पिण धर्म अन्तराय साधुरे पाड़ी वैद्य, भगवती सोलमारे तीजे लीजी ॥ २३ ॥ इत्यादिक बोल अनेक आख्या छै, चै सूत्र माहीं सोयोजी। जिन ाज्ञा नहीं

ते सावज जानो, आज्ञा ते निर्वद्य अवलोयोजी ॥ २४ ॥ नेम समुद्रपाल ने नमि ऋषि, आतम रूप अवधारोजी । निर्वद्य ।गन्यां में छै निर्मल, सावज भ्रमण संसारोजी ॥ २५ ॥ स्वाम भिक्खु ए सूत्र शोधो, अनुकम्पा ।लखाईजी । विवध हेतु न्याय जुगत्ति बताया, कुमिय न राखी कांईजी ॥२६॥ भेषधारी भ्रम पाड़े भोलाने, दया ।हिरागने दिखाईजी । सिद्धान्तरा जोर सूं भिक्खु स्वामी, असल श्रद्धा ।लखाईजी ॥ २७ ॥ चवदमी ढाल सुन जन चतुर, अनुकम्पा निर्वद्य आदरजोजी । रूड़ी आसता भिक्खुनी राखी, पा एड मत परहरजोजी ॥ २८ ॥ दान दया सूत्र सम्झ देखाई, खंड प्रथम धर खंतोजी । सूत्र नेश्राय ए ज्ञान स्वामनो, ति ज्ञान नो भेद सुतंतोजी ॥ २९ ॥

कलश ।

जय जश कारण दुःख विडारण, सुमग धारण स्वामजी । शुद्ध सुमति सारण कुमति वारण, जगत तारण कामजी । प्राक्रम मृगपति सखर धर चित्त, ज्ञान नेत्रे ऋषि गुणी । जिन मग्ग केतु हद सुहेतु, नमो भिक्खु महा मुनि ॥

ि तीय खण्ड

सोर ।

प्रथम खण्ड पहिचाण रे, रचियो रूड़ी रीत सूं ।
खण्ड दूजे गुण खाण रे, दृष्टन्त कहुं दयाल ना ॥

॥ दोहा ॥

भाख्यो ज्ञान चया असरु, जिम भाख्यो जिनराज ।
बुद्धि उत्पत्तिया महाबली, साध्यो शिव पन्थ साज ॥१॥
मति ज्ञान महिमा निलो, दोय भेद तसु देख ।
सूत्र नेश्राय सिद्धन्त छे, सूत्र बिना सापेख ॥२॥
सूत्र कहीजे बात सहु, निर्मल सूत्र नेश्राय ।
बुद्धि सूं मिलती बात वर, सहु असूत्र नेश्राय ॥३॥
सूत्र   श्रद्धा सखर,   दिखाई सार ।
सूत्र तणो नेश्राय शुद्ध, अ   अर्थ उदार ॥४॥
चार बुद्धि सूं वि   नी, दिये विविध दृष्टान्त ।
असूत्र नेश्राय ओ तो, वर नन्दी वि   ॥५॥
हिवे असूत्र नेश्राय हद, दिया स्वाम दृष्टान्त ।
मति   महा निर्मलो,   तणो शोभंत ॥६॥
केवल   रतो कह्यो, मति ज्ञान महाराज ।
वा लेख पिछाणज्यो, सूत्र भगवती साज ॥७॥
सखरो भिक्खु -   नो, महा मोटो मति ज्ञान ।
साचा न्यायज शोधिया, दृष्टान्त देई प्रधान ॥८॥
उत्पत्तिया बुद्धि सूं अख्या, मिलता न्याय मुणिन्द ।
केशी नी परे शुद्ध कथा, दृष्टान्त अति दीपन्त ॥९॥

॥ ढाल १५ मी ॥

(अमड़ भड़ रावणा इन्दा सूं अड़ियो रे पदेशी)

पाखण्डियां खेत्र दान परूपियो, त्याने भिक्खु पूछ्यो तिणवार। खेत्र में पुन्य श्रद्धियो, ए अंभ ज्यो हेतु उदार॥ स्वामी बुद्धि आगरु, बारु भेल्या न्याय विशाल। अधि बुद्धि आगरु भ उत्पतिया बुद्धि आल॥ १॥ पांच सौरी थो त परखरोजी, चणा तणो चित्त धार। नाज पांचसौ मण चणा निपना, तब म ो कियो तिणवार॥ २॥ घर मांहिं तो धन पांरे घणुंजो, करां दान धर्म कहि वार। एक जणो सौ मण चणा आपिया, बहु भिख्यार्‍यां ने बोलाय॥ ३॥ दिया ीं मण चणारा दूसरे, सेकाय भूंगरा सोय। त्यांरी गुगरी तीजे करायने, जिमाया भिखार्‍यां ने जोय॥ ४॥ चौथे रोट्यां ी मण चणा तणी, कडी पाखती कराय। भि ारी रांकादिक भणी, जुग सुं दिया जिमाय॥ ५॥ सौमण चणा पांचमें वोसराविया, तिणरे हाथ लगावा ना त्याग। कहो धम पुन्य घणो केहने, सखरो उत्तर देवो सताव॥ ६॥ भगवन्तरी आज्ञा किण भणी, कुण ज्ञा र कहात। एम सुणने उत्तर आयो नहीं। ऐसी भिक्खुनी बुद्धि उत्पा ॥७॥

दान ऊपर न्त दूसरो, स्वाम भिक्खु दियो सुखदाय। हलुकर्मी सांभल हर्षे घणां, भारी कर्मी द्वेष भराय ॥ ८ ॥ भिख्या मांगतो डोगरो, भम र यो भ्यागत दुखियो ए । धर्मात्मा मूखाने धान द्यो, विरुआ बोलै बचन विशेष ॥ ९ ॥ एक जणो अणु-म्पा णने, सेर चणा दिया सोय। णग्राम भि री रै घणा, शी देवै तोय ॥ १० ॥ आगै जाई एम बो यो, सेर चणा दीधा सेठ ए । पि दान्त नहीं कोई पीस दो, रु छै कोई धर्मी वि ॥ ११ ॥ एक बाई कम्पा णने, दियो हते पाण। ब गै ई इम बोलियो, कोई धर्मी पिछाण ॥ १२ ॥ ए सेठ सेर चणा पि ा, पीस दिया दूजी पुण्यवान। ो फा णी नहीं, जिण रोटी कर दो ध न ॥ १३ ॥ कम्पा तीजी आणने, सेर चणारा फांफड़ा सोय। न्धो घा र दीधा सही, जीमी तृप्त हो गयो जोय ॥ १४ ॥ तृषा लागी तिण रे, आगै जाई बोल्यो न। सेर चणा दिया एक सेठ, पी दिया दूजी पुन्यव ॥ १५ ॥ झट रोट्यां कर तीजी जीमाविया, अति लागी है तृषा थाय। है धर्मात्मा एहवो, ण ताने पाणी

पाय ॥ १६ ॥ चौथी बाई अणुकम्पा चित्त धरो, पायो त्रस सहित काचो पाणि । कहो धर्म घणो हुवो केहने, पाछै कह्या च्यारूं ही पिछाण ॥ १७ ॥ आज्ञा बारला दान ऊपरै, दियो स्वामो भिक्खु दृष्टन्त। प्रत्यच्च कारण पापनो, किण विध पुन्य कहंत ॥१८॥ हलुकर्मी सांभल हर्षे हिये, भारी कर्मी भिड़कन्त। सूत्र न्याय साचा सही धारे उत्तम पुरुष धर खंत ॥ १६ ॥ पत्रर ढाल कही पनरमी, स्वामी थापी है श्रद्धा सार। उत्पत्तिया बुद्धि ओपती, वलि आगलि बहु विस्तार ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

जाब सुणी बुद्धिवान जन, चित्त पामे चमत्कार।
सांभल केइक समझिया, पाम्या हर्ष अपार ॥१॥
केयक वलि इण पर कहै, थे दान दया दी उथाप।
श्रद्धा किहां ही ना सुणी, प्रत्यक्ष श्रद्धो पाप ॥२॥
भिक्खु वलता इम भणै, पज्जुसणा में पेख।
आबा आटो आदि दे, आपै नहीं अशेष ॥३॥
पर्व्व दिवस पज्जुसणा, धर्म्म तणा दिन धार।
अधिक धर्म्म तिहां आदरै, पाप तणो परिहार ॥४॥
दान अनेरा ने दियां, जाणे धर्म्म जिवार।
कीधो बंध किण कारणे, चित्त सूं करो विचार ॥५॥
ए वात है आगली, परम्परा पहिचाण।
कहो ए थाप करी किणे, वारु करो विनाण ॥६॥

हूं तो हिवड़ाइज हुवो, जद तो नहीं थो जाण।
जाब दियो अति जुगत सूं, सुण हरष्या सुविहाण ॥७॥
सूत्र न्याय शुद्ध परम्परा, सखर मिलावे ।
जग पूरब धारी जिसा, ओजागर अरि म ॥८॥
अपर दान रे ऊपरे, दीधा बलि दृष्टान्त।
विविध न्याय वर वारता, सांभलजो चित्त शांति ॥९॥

ढा १६ ी ।

(घोड़ी री देशी)

शहर रवै पध स्वामी, ओटो शाल प्र पूछ्यो एम। श्रावक कसाई गिणो थे रीखा, कहै खोटी श्रद्धा इसड़ी धारां म्हें केम॥ स्वाम भिक्खु रा न्त सुणजो॥ १॥ र है किम गिणा सरीखा, जब ते कहै ावक ने दियां पाप णो। कसाई ने दियां पिण पाप कहो छो, प्रत्य दोनूं सरीखा इण न्याय पिछाणो॥ २॥ स्व कहै इम नहीं सरीखा, श्रावक कसाई बे जुआ पे। ोटो कहै दोनूं थया सरी ा, दोयां ने दियां पाप कहो ते लेख॥ ३॥ पूज कहै थारी माता ने पायो, ्चित पाणी री लोटी भर सोय। कहो तिणमें थारो निपनो कांई, ओटो कहै पाप छै अवलोय॥ ४॥ पुनरपि स्वाम ओटा ने पूछयो, पाणी लोटी भर वेश्या ने पायो। धर्म्म थयो के पाप हुवो थाने, ोटो

कहै तिण में पिण पाप थायो, ॥ ५ ॥ पूज कहै दोयां में पाप थायो, थारी माता ने वेश्या रीखी थारे न्यायो । जो माता वेश्या ने न गिणो सरीखी, तो श्रावक कसाई सरी । न थायो ॥ ६ ॥ अति क थयो गोक कहै ओटेजी, माता ने वेश्या सरी ी मानी । चित्त माँहिं चमत्कार लहे चातुर, अणहुन्ता अवगुण धारै अज्ञानी ॥ ७ ॥ सम्वत् अठारै पैंता- ीसे स्वामी, प्रगट चौमासो कियो पींपार । जनक हस्तु छ्तु नो जगु गांधी, वारु चरचा सूं श्रद्धा चित्त धार ॥ ८ ॥ भेषधारी तिण ने गा भड़- का ; खोटी द्धा भीखणजी री खार । ए गृहस्थ श्राव ने बासती आपी, पाप कहै तिण हीं पार ॥ ६ ॥ वलि किण गृहस्थ री बासती चोर ले गयो, तिण रो पिण गृहस्थ ने पाप बतावे । श्रावक ने चोर गिणो इम सरीखो, जब गु स्वामी जी ने पूछयो प्रस्तावै ॥ १० ॥ पूज कहै उणनेज पूछणो, चद्दर थारी एक ले गयो चोर । एक चद्दर थे श्राव ने आपी, जद थाने डंड किण रो वै जोर ॥ ११ ॥ तस्कर चद्दर ई गयो तिण रो, ाश्चित मूल न रधै पेख । श्रा ने दीधां रो प्राश्चित सरधै, जद तो देणोज ोटो ठह ो त्यांरे

लेख ॥ १२ ॥ जाब सुणी समझ्यो जगु गांधी, ऐसी स्वामीजी री बुद्धि उत्पात। सिद्धन्त री सरधा ने थापणा साची, न्याय विविध मेलव्या स्वामी नाथ ॥ १३ ॥ सोलमी ढाल में भिक्खु स्वामी री, ओलखाई बुद्धि श्रद्धा उदार। श्रीजिन आगन्या धारी सिर पर, सरधा दिखाय दोधी तन्त सार ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

श्रद्धे सावज दान में, पुन्य मिश्र एकन्त।
पूछ्यां कहै मुझ मून है, केई इसड़ो कपट करंत ॥ १ ॥
पूछ्यां न कहै पाधरो, पुन्य मिश्र पख एक।
आख्यो हेतु ओपतो, चारु स्वाम विशेष ॥ २ ॥
किण ही पुरुष पूछा करी, नार भणी पिउ नाम।
थारे धणी रो नाम कुण, स्यूं पेमो है ताम ॥ ३ ॥
कहै पेमो क्यांने हुवे, वलि पूछ्यो तिणवार।
नाथू नाम है तेहनो, कन्त तणो अवधार ॥ ४ ॥
कहै नाथू क्यांने हुवे, वलि पूछ्यो सुविशेष।
पाथू है नाम तेहनो, तुझ पीतम संपेक्ष ॥ ५ ॥
कहै पाथू क्यांने हुवे, इम बहु नाम विचार।
सागे नाम आयां थकां, रहै अबोली नार ॥ ६ ॥
सैणो तब जाणे सही, इण रा पिउ रो नाम।
एहिज छै तिण कारणे, मून रही इण ठाम ॥ ७ ॥
जो सावज दान में पाप है कहै क्यांने हुवे पाप।
मिश्र पूछ्यां पिण इम कहै, क्यांने है मिश्र थाप ॥ ८ ॥
पुन्य पूछ्यां सूं मून रहै, न करै तास निषेह।
सैणो जब जाणै सही, इणरी श्रद्धा यह ॥ ९ ॥

॥ ढा १७ मी ॥

(प्रभवो में चिन्तवैं परदेशी)

पूज्य भीखणजी पधारिया, वर गा विम । साध अमरसिंघजी तणा, पूज या त्यां पा ॥ १ ॥ प्रश्न भिक्खु स्वाम पूछियो, अणु । मन आण । मरता ने मूला दिया, जिणमें सूं हुवो जाण ॥ २ ॥ तामस आणी ते कहै, प्र इ गे पूछन्त । जे मिथ्याती जाणिये, भिक्खु वां भाषन्त ॥ ३ ॥ पूछण वाले पूछियो, समकती होवे सोय । थवा मिथ्याती मानवी, जे पिण पूछै जोय ॥ ४ ॥ उत्तर आपै एहनो, जो मिथ्याती होय जाय । उत्तर तो आपो मति, नहीं तो । ओ न्याय ॥ ५ ॥ तव ते बोल्यो तड़क ने, मू । मांहैं पाप । पूज्य कहे पुन्य पाप त्रिहुं, के केवल पाप किलाप ॥ ६ ॥ देण वाला ने दाखिये, पुन्य प पिछाण । जाव न देवै जाण ने, वलि भिक्खु कहे वाण ॥ ७ ॥ केई मू खवायां मि कहै, इम पूछ्यां कहै आम । मिश्र कहे ते पापी सही, तव स्वामी कहै ताम ॥८॥ केई मूला वायां पाप कहै, वलि ते बोल्यो वाण । पाप कहै ते पापिया, झूठा एकन्त जाण ॥ ६ ॥ फिर स्वामी पूछा करी, मू॥

खवायां माण। कई एक पुन्य कहे सही, तब ते बोल्यो जाण ॥ १० ॥ पुण्य कहे सोही पापिया, सुण ने स्वाम विचारै। श्रद्धा पुन्य री दीसे सही, बात तीनूंई बारै ॥ ११ ॥ वलि मन भिक्खु बिचारियो, कहिण वाला ने कह्यो पापी। पिण श्रद्धण वाला पुरुष नी, थिर पूछा करूं थापी ॥ १२ ॥ इम चिन्तवी पूछियो, नुकम्पा ण। मू देवे ते मनुष्य ने, पुन्य केई श्रद्धे पिछाण ॥ १३ ॥ स्वाम तणी पूछा सांभली, वलि बोल्यो ते बाण। मन सी ज्यूं सरधसी, स्वाम लियो ण ॥ १४ ॥ इम चिन्तवी स्वामी उचरे, मूला यां माण। प्रगट पुन्य प्ररूपो नहीं, पिण द्धा पुन्यरी पिछाण ॥ १५ ॥ इत्यादि जाब नेक सूं, क कियो धिकाय। या ठिकाणे पणे, ह मी महा खदाय ॥ १६ ॥ मोटी मति महाराज नी, रु बुद्धि सुविचार। जाब ति गे अति जुगत , ऊपर सूं अवधार ॥१७॥ सखर ढा कही तरमी, गे बहु धिकार। स्वाम द न्त सुणी करी, चतुर लहै चमत्कार ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

भी जी स्वामी भणी, किणही पूछा कीध।
दान असंजती ने दियां, पाप कहो प्रसिद्ध ॥ १ ॥

कड़वा फल किण कारणे, निर्मल बतावो न्याय।
कहै भिक्खु किण सेठ रे, नवली कड़ी बंधाय ॥ २ ॥
ते नवली रुपया तणी, तस्कर देखी ताम।
सेठ तणे लारे हुवो, रुपया ले .ण काम ॥ ३ ॥
पूठे तस्कर पेखने, साहुकार न्हासन्त।
लारै तस्कर दौड़तो, इतले पग अखुड़न्त ॥ ४ ॥
पग आखुड़ हेठो पड़्यो, चित्त बिलखाणो चोर।
इतले किण ही मानवी, अमल खवायो जोर ॥ ५ ॥
ल खवाय पायो उदक, सैंठो कियो शूर।
दुश्मन ते तिण सेठ नो, साम्ह दियो भरपूर ॥ ६ ॥
अमल खवायो ते पुरुष, वैरी सेठ नो थाय।
साम्ह दियो वैरी भणी, अरि थी हुवे उपाधि ॥ ७ ॥
ज्यूं छःकाय नां हिन्सक भणी, जे नर पोपै जाण।
ते वैरी षट काय नो, प्रत्यक्ष हिये पिछाण ॥ ८ ॥
हणणहार षट काय नो, तसु पोषे कियो शूर।
तिण कारण जीवां तणो, वैरी ते भरपूर ॥ ९ ॥

॥ ढाल १८ मी ॥

(सीता दिये रे ओलंभड़ो० एदेशी)

विज दान छ्डायवा, दियो भिक्खु दृष्टान्त। खेत बायो ए करसणी, पाको खेत त्यन्त। तन्त दृष्टान्त भिक्खु तणा ॥ १ ॥ इतले धणी रे बालो हुवो, दूखणी आयो देख। किणहि औषध दे करी, सांतरो कियो विशेष ॥ तं० ॥ जो हुवो तिण वसरै, खेत काढ्यो धर न्त। साम्ह

देण वाला ने सही, लागै पाप एकन्त ॥ ३ ॥ कहै पाप हुवै खेत काटियां, तो काटण वाला ने सोय। साझ देई ने साझो कियो, तिण ने पिण पाप जोय ॥ ४ ॥ तिमहिज और पापी तणे, साता कीधी विशेष। तिण माहें धर्म किहां थकी, दिल माहें दे ॥ ५ ॥ कैकेइक भेषधारी कहै, धन दीधां धर्म। बले कहै ममता उतरी, भोलांरे पाड़े भ्रम ॥६॥ पूज्य भिक्खु तिण ऊपरै, निरमल मेला न्याय। म लोकां रो भांजवा, स्वामी महा सुखदाय ॥ ७ ॥ किणही मनुष्य रे खेती हुन्ती, बीस बिघा विचार। दश विघा ब्रा ण ने दिया, धर्म अर्थे धार ॥ ८ ॥ बीस हलांरी खेती विषे, दश हल ती दीध। ए पिण ममता उतरी, तिणरे लेखे प्रसिद्ध ॥ ९ ॥ क ो परिग्रह नव रनो, दोपद चोपद देख। पांच दास्यां दीधी पर भणी, पांच गायां सं पे ॥ १० ॥ ए पिण ममता उतरी, तिणरे ले तहतीक। धर्म कहे रुपया दियां, तो इणमें पिण धर्म ठीक ॥ ११ ॥ दास्यां ती गायां दियां, पुन्य रो अंश म पे । इमहिज रुपया आपियां, धर्म पुन्य म दे ॥ १२ ॥ प अ रा में पंचमो, परिग्रह महा विकराल। सेव्यां सेवायां पाप छे, भगवती में सम्भाल ॥ १३ ॥

सावद्य ता रै ही, इण ं पाप एकन्त। जिन आज्ञा बाहिर जाणज्यो, सूयगड़ा ङ्ग शोभन्त ॥१४॥

भिक्खु स्वा भली परै, ओलकाया ऐन। हलुकर्मी हरख्या घणा, चित्त में पाम्या चैन ॥ १५ ॥ ी

अट्ठार ी, वरु स्वामी ना वो । बोल साराही सुहामणा, छ्या ने ोल ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

किणहिक भिक्खु ने कह्यो, असंजती अवलोय।
तिण ने दान देवा तणा, त्याग कराबो मोय ॥ १ ॥
भिक्खु स्वामी इम भणे, सरध्या मुझ वच सोय।
प्रतीतिया रुचिया पवर, जिण सूं त्याग सुजोय ॥ २ ॥
के म्हाने भाण्डण भणी, करै इसा पचखाण।
इमं कही कप्ट कियो अति हि. सखर स्वाम बुद्धिवान ॥ ३ ॥
वि हिक भिक्खु ने ो, टोला वाला ताहि।
प्रत्यक्ष पुन्य प्ररूपै नहीं, सावज दान रे मांहि ॥ ४ ॥
स्वाम कहै कोई असतरी, जल लोटो भर जाण।
म्हारे हाटे सूंपज्यो, कह्य किणी ने वाण ॥ ५ ॥
पिउ नो ना लियो, पिण सूंप्यो कर सान।
इम सानी कर पुन्य कहै, पुन्य री श्रद्धा पिछाण ॥ ६ ॥
किणहिक स्वामी ने कह्यो, पड़िमाधारी पेख।
दान निर्दोषण तसु दियां, सूं फल कहो विशेष ॥ ७ ॥
स्वाम कहै ले सूझतो, पड़िमाधारी पिछाण।
तसु फल होवै ते सही, देणवाला ने जाण ॥ ८ ॥
लेण वाला ने पाप कहै, पाप लगायो दातार।
तिण में पुन्य किहां थकी, स्वाम जाय श्रीकार ॥ ९ ॥

॥ ... १६ वीं ॥

(वीर सुणो मोरी विनती परदेशी)

...चो ..णी पायां मांहें पुन्य कहे, स्वामी दीधों हो तेहने दृष्टन्त। कोई खाई लुटावे पारकी, थारै लेखे हो इणमें पुन्य एकन्त ॥ तन्त दृष्टन्त भिक्खु तणा ॥ १ ॥ खाई लुटायां जो पाप है, पाणी पायां हो किम होसी पुन्य। दोनूं बरोबर देखल्यो, सावद्य दोनूं हो कण रहित है शून्य ॥ तं० ॥ २ ॥ अव्रत में अन धन दियां, भेषधारी हो थापै धर्म ने पुन्य। स्वाम भिक्खु दियो शोभतो, हद हेतु हो सुणज्यो तन मन ॥ ३ ॥ लायमां सूं काढ दूजी-लायमें, धन न्हाख्यां हो काम न आवै ते धार। आप कन्हे धन अव्रत में हुन्तो, अव्रती ने हो दियो अव्रत मझार ॥ ४ ॥ लाय लागां गृहस्थ रो घर जलै, बलतो देखो हो किण ही धन काढ्यो बार। ले न्हाख्यो दूजी लायमें, ततखिण आयो हो सेठ पास तिवार ॥ ५ ॥ अहो सेठजी तुझ घर आग थी, सखरी वस्तु हो धन काढ्यो म्हे सार। सेठ सुणी हरष्यो सही, ते धन किहां छै हो आपो वस्तु उदार ॥ ६ ॥ ओ कहै न्हाख्यो दूजो आगमें, सेठ जाणयो हो परो मूरख सोय। लायमां सं काढी

न्हाख्यो लायमें, काम न आवै हो तिण लेखै कोय ॥ ७ ॥ अव्रत रूप लाय हुन्ती आपरै, अव्रती ने हो दीधो और ने धन। लाय लगाई और रे, प्रत्यक्ष देखो हो तिण में किम हुवै पुन्य ॥ ८ ॥ श्रावकरे त्याग तेतो व्रत सही, अव्रत जाणो हो बाकी रह्यो आगार। अव्रत सेवावै और री, तिण माहें हो धर्म नहीं लिगार ॥ ६ ॥ अव्रत व्रत न ओलखै, भेषधारी हो करै भेल संभेल। दृष्टान्त स्वाम दियो इसो, घी तम्वाकू हो भेला कदेय न मेल ॥ १० ॥ औषध जोभ आंख्यां तणो, आहमो साहमो हो घाल्यां दोनूं विलाय। ज्यूं अव्रत में धर्म सरधियां, पाप व्रत में हो सरध्यां दुर्गति जाय ॥ ११ ॥ शोरीगर रा घर में शोर बासदी, न्यारा राख्यां हो घर विणसै नांय। ज्यूं व्रत अव्रत फल जु जूआ, जन जाणयां हो समकित न जलाय ॥ १२ ॥ प्रगट पसारी रे पारखा, न्यारा राखै हो मिश्री सोमल न्हाल। ज्यूं धर्म अधर्म खातो जू जुओ, सैंठी समकित हो शुद्ध सरध्यां संभाल ॥ १३ ॥ कोई कहै गृहस्थ रो छन्दो अछै, दान देवै हो गृहस्थ ने देख। भिक्खु कह्यो छान्दा में तो धूल छै, घृत तो छै हो कूड़ी में संपेख ॥ १४ ॥ मैदो खाण्ड घृत शुद्ध मिल्यां

सखरां कहिये हो लाडू सरस स द। ज्यूं चित्त वित्त पात्र तीनूं जू ां, ति फल लहिये हो, भव दधि तिरिये अगाध ॥ १५ ॥ घृत ाण्ड बिहुं शुद्ध घणा, मैदारी जागां हो लाद है मांय। ज्यूं चित्त वित्त दोनूं चोखा मिल्या, पात्र जागां हो असाधु ने बहिराय ॥ १६ ॥ घृत मैदो चो घणा, खाण्ड जागां हो माहें ी धूल। ज्यूं चित्त पात्र दोनूं ही शुद्ध जूड्या, वित्त जागां हो सूझतो ि तुल्य ॥ १७ ॥ ाण्ड मैदो चोखा रा, घृत जागां हो माहें घाल्यो गौ-मूत। ज्यूं वित्त पात्र दोनूं ही शुद्ध जूड्या चित्त जागां हो देवणवालो कपूत ॥ १८ ॥ त री ठौर गोमूत ै, ण्ड ठामे हो घाली महा खार। ाद मैदारी जायगां, ै मिलिया हो तीनूं अधिक सार ॥ १९ ॥ ज्यूं देण लो हो असूझतो, वस्तु दीधी हो सूझ ै । व्रत हीं ले अंगीकरी, प्रत्यक्ष ै ो हो इणामें किम हुवे पुन्य ॥ २० ॥ चित्त वित्त पात्र चो । मिल्यां, निर्जरा हो पुन्य बन्ध कहि- । एक अधुरो तीनां मझे, थिर चित्त देखो हो तिण में पुन्य न थाय ॥ २१ ॥ दृष्टान्त ऐसा भिक्खु दिया, र मी मेल्या हो सूत्र ने न्थ

सिंध । यां विन इसड़ी कुण कथैं, पूर्वधारी हो जैसा भिक्खु प्रबन्ध ॥ २२ ॥ पञ्चम आरे प्रगट्या, आप ओजागर हो आप सूं अनुराग । हूं पिण हिवड़ां ऊपनो, साची श्रद्धा हो पामी ए मुझ भाग ॥ २३ ॥ आखी ढाल उगणीसमी, चित्त उमग्यो हो भिक्खु आया चीत । याद आयां हो हियो हुलसै, गुण गावत हो हुवो जन्म पवित्र ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

सखरो मारग शोध ने, दियो स्वाम उपदेश ।
कुबुद्धि कुकला केलवी, पूछे प्रश्न अशेष ॥ १ ॥
थांने असाध सरधने, दीधो मैं तुझ दान ।
तिणरो मुझने स्यूं हुवो, इम पूछयो किण जान ॥ २ ॥
भिक्खु कहै मिश्री भखी, किण खाधी विष जाण ।
मन सुख पावै के मरै, उत्तर एह पिछाण ॥ ३ ॥
ज्यूं थे असाध जाणने, दियो सूझतो दान ।
अजाण पणो घट थांहरे, पात्र उत्तम फल जाण ॥ ४ ॥
इत्यादिक बहु आखिया, दान ऊपर दृष्टन्त ।
किञ्चित् मात्र मैं कथ्या, बधतो जाणी ग्रन्थ ॥ ५ ॥
विविध दया ऊपर वलि, हेतु महा हितकार ।
आक थोहर रा दूध सम, सावज दया असार ॥ ६ ॥
अनुकम्पा इहै लोकरी, जीवणो वांछै जाण ।
मोह राग माहें तिका, तिणमें धर्म म ताण ॥ ७ ॥
जे आरम्भ सहित जीवणो, असंजती रो अंस ।
जिण वांछ्यो ए जीवणो, तिण वांछ्यो आरंभ ॥ ८ ॥

सूत्रे श्री जिव बरजियो, असंजम जीतब आस।
भिक्खु स्वाम भली परे, मेल्या न्याय विमास ॥ १ ॥

॥ ढा २० मी ॥

(नगर सौरीपुर राजवी रे० पदेशी)

केई पा ाडी इम कहे रे, लाय बुझावै लोयो। अल्प प बहु निर्जरारे, दम्भ करी थापे दोयो ॥ दम्भ करी दोय थापे बेशर्मो, तेउ जीव मुआ ते पाप कर्मो। आगला जीव बच्या तिणरो धर्मो। भोलां तणे मन पाड़े भ्रमो जी, सहु कोई जी हो ॥ १ ॥ उत्तर भिक्खु आखियो रे, सांभलज्यो चित्त लायो। हलुकर्मी सुण हर्षियेरे, भारी र्मी भिड़कायो। भारीकर्मी भिड़के लहै तापों। तेउ जीव वां रो कहै पापो। और बच्या तिण रो धर्म थापो। कर रह्या मूरख कूड़ किलापो। तिणरी श्रद्धा रो लेखो सुणो आपो। नाहर मा ं एकलो नहीं पापो जी ॥ २ ॥ नाहर हिल्यो एक आकरो रे, करै मनुषां रो खेंगालो। गायां भैंस्यां जा बाकरा रे, सांभर रोझ सियालो। सांभर रोझ सिया पिछाणो। प्रत्यक्ष लूट रह्यो पर प्राणो। जीव घणा रो करै घमसाणो। पङ्क प्रभा उर ष्टी पयाणो जी ॥ ० ॥ ३ ॥ किणही बिचार इसो

कियो रे, एतो है ां आहारी। ए ंत्रियां जीव रै घणारे, एहवा अध्यवसाय धारी। एहवा अध्यव ाय स्यूं सिंह मारी। उणरी श्रद्धा रे ले विचारी। नाहर रो पाप हुवो निरधारी। और बच्यारो धर्म हुवो भारी जो ॥ ०॥४॥ बीजो दृष्टन्त भिक्खु दियो रे. छै एक पी कसाई। पांच पांच सौ भैं । ने मारतो रे, करुणा न आणै ाई। मन माहें रुणा आणै न काई। किण ही विचार कियो मन मांही। एहने मा ां बहु जीव बचाई। एम विचारी ने मा यो साई, घणा जीवांने बचा-वण तांई ी ॥ ०॥५॥ ाय बुझायां मि कहै रे, तिणरी द्धा रे ले यो। साई ने । ां पिण मि छै रे, पोतानी श्रद्धा पेखो। पोतारी द्धा पे यो निज नैणो। पाप कसाई नो ए त्य वैणो। जीव घणा बच्यां रो धर्म लेणो। पोतारी श्रद्धा लेखै कहिदेणो, साई ने मार्यां एकन्त पाप न हिणो जी॥ स० ॥६॥ तीजो दृष्टन्त स्वामी दियो रे, उरपुर एक अजोगो। घणा ऊंदारां रा गटका करै रे, मनुष्य पहुंचावै पर लोको। मनुष्य मार परलोक पहुंचावै। घणा पंख्यां ना अराडा पिण खावै। पं घणा जीवां ने तावै,

उर ष्टे धूमप्रभा ढग जावै जी ॥ स० ॥ ७ ॥ किण हो विचार इसो कियो रे, सर्प घणा ने सतावै । एक सर्प मा ां थकां रें, जीव घणा सु पावै । जोव घणा सु पावै सुजाणी । नुकम्पा बहु जीवांरो जाणी । सर्प मार बचाया बहु पाणी । य बुझायां कहै मिश्र बाणी, तिणरे ले इणमें मिश्र पिछाणीजो ॥ स० ॥ ८ ॥ चौथो दृष्टान्त स्वामी दियो रे, कोई पुरुष नो एहवो आचारो । बाप मुवां पहलो कह्यो रे, काल करतां तिणवारो । काल रतां सुत कही थो बाणो । सुखे तुम्हारा निसरो णो । थां लारै अटव्यादिक बालस्यूं जाणो. घणा ग्राम नगर बाल करस्यूं घमसाणोजो ॥ स० ॥९॥ मनुष्य ढांढा घणा मारस्यूं रे, बाप ने एहवो सुणायो । पिता पहुंतो परलोकमें रे, पछै करवा लागो सहु तायो । करवा लागो छैं जीवां रो घमसाणो । किणहिक मनमें विचारयो जाणो । एक मारयां सूं बचै बहु प्राणो, इम चिन्तव ते पुरुष ने मारयो अयाणो जी ॥ स० ॥ १० ॥ लाय बुझायां मिश्र कहै रे, तिणरे लेखे ए पिण मि होयो । एक मा ो पाप तेहनो रे, बहु बचिया तिणरो धर्म जोयो । बचिया रो धर्म त्यांरे लेखे बाजै । अल्प

पाप वहु पुन्य फल राजे। एक मास्यो घणा राखण काजे, इण में पिण मिश्र कहितां कांय लाजे जी॥ स० ॥ ११ ॥ पूज्य कह्यो वलि पांचमो रे, दृष्टान्त अधिक उदारो। कोई तुरकादिक आकरो रे, साथ सेना ले अपारो। सेना लेई देश ऊपर आयो। ग्राम नगर कतल करवाने ध्यायो। मनुष्य तिर्यंच मारण उमाह्यो, सैन्य अधिकारी ना हुक्म थी थायो जी॥ स० ॥ १२ ॥ किण ही विचार इसो कियो रे, करसी घणा जीवाँरो संहारो। सैन्य अधिकारी नें मारियां रे, सवजीव वचें इणवारो। जीव वचें कतल नहीं हुवें तायो। इम जाण अधिकारी नें परभव पहुंचायो। मास्यो ते पाप वच्यो पुन्य थायो, तिण रे लेखें इण में पिण मिश्र कहिवायो जी॥ स० ॥ १३ ॥ वच्चियारो धर्म वताय ने रे, कहै लाय वुझायां धर्म। जीव अग्निरा जीविया रे, तिणसूं घणा मरें ते अधर्म। अग्नि जीव्यां घणा मरें ते पापो। इण विध कर रह्या कूड़ किलापो। अग्नि जीव हणियां मिश्र थापो। तेहनो न्याय सुणो चुप चापो, तिणरे लेखें गायां मास्यां केवल न पापो जी॥ ॥स०॥ १४ ॥ गायां भैस्यां आद जीवसी रे, ते पिण घणी छः काय हणतो। मनुष्यादि पवन छतीस छै रे, मच्छा-

दिक जलचर जन्तो। जन्तु मच्छादिक जलचर जाणी। ते पिण हणै छःकाय ना प्राणी। श्वि जीवने हणयां मिश्र णी, तिणरे ए वं हणया मिश्र जाणी, जी ॥ स० १५ ॥ संसार मांहिं साधु बिनां रे, सर्बहिंसा रा त्याग न दीसै। प त्रणा पद बोल में रे, भाख्यो ो जगदीश। ो जगदीश भा ी इम रेंसो। प्राणातिपात बेरमण सु अशेषो मनुष्य बिनां और रे न कहेसो। बुद्धिवन्त जोय बिचारज्यो रेंसो जो ॥ स० ॥ १६ ॥ साधू बिना संसारी सहुरे, हिंसक जीव कहायो। त्यां सगलां ने मारियां रे, एकलो पाप न थायो। किण ही ने मा ां एकलो पापो। जण ने मा ो तिणरो महा तापो। और बच्या तिणरो पुन्य मिलापो। साधु ने मा ां रो एकन्त पापो। खोटी श्रद्धारा लेखा री ए थापो जी ॥ स० ॥ १७ ॥ लाय बुझायां मिश्र कहै रे, तिणरी श्रद्धारे न्यायो। हिंसक ने मारण तणा रे, त्याग करावणा नहीं तायो। त्याग करावे छै किण न्यायो। हिंसक बच्या घणा जीव हणायो। हिंसक मार्यां मिश्र धर्म थायो। ऊंधी सरधा रो तो ओहिज न्यायोजी ॥ स० ॥ १८ ॥ दृष्टन्त स्वाम भिक्खु दिया रे, सूत्र न्याय तंत सारी। जीव बच्या धर्म थापने

रे, भूल गया भेषधारी। भूल गया भ्रम में भेषधारी मोहराग माहैं दया विचारी। भिक्खु ओल तसु कियो परिहारी। तिरणो बछै जिन पर नो तिवारी, तिण माहैं धर्म कह्यो तंतसारी जी ॥ स० ॥ १६ ॥
बीसमी ढाल विषै कह्यारे, दया ऊपर दृष्टन्तो। सूत्र सिद्धन्तरा जोर सूं रे, न्याय मिलायो तंतो। स्वाम भिक्खु शुद्ध न्याय मिलायो। दानदया रूड़ी रोत दि ायो हलुकर्मी सुण २ हर्षायो, भारी र्मा रे तो मन नहीं भायो जी ॥ स० ॥ २० ॥

दोहा

पाली शहर पधारिया, पूज्य भवादधि पाज।
एक जणो तिहां आवियो, चरचा करवा काज ॥१॥
ऊंधो बोलतो कहै, दुष्ट श्रावक तुझ देख।
फांसी कोई रा गलहुन्ती, काढे नहीं संपेख ॥ २ ॥
थारा म्हारा मति करो, स्वामी भाखै सोय।
समचे वात करो सही, न्याय हिये अवलोय ॥ ३ ॥
फांसी ली किण रूंख थी, देख्यो जावत दोय।
क ढ़ै नहीं ते केहवो, काढ़ै ते केहवो होय ॥ ४ ॥
ते कहे फांसो काढ़ ले, उत्तम पुरुष ते तन्त।
जाणहार शिव स्वर्ग नो, दयावन्त दीपन्त ॥ ५ ॥
नहिं काढ़ै ते नरक रो, जाणहार दौभाग।
भिक्खु कहै तुम तुझ गुरु, जाता दोनूं माग ॥ ६ ॥
कुण फांसी काढ़े कहो, कहै हूं काढूं तिहां जाय।
मुझ गुरु तो कांढ़ै नहीं, मुनि ने कल्पे नांय ॥ ७ ॥

स्वाम कहै शिव स्वर्ग नो, जाणहार तूं पेख।
तुझ गुरु नरक निगोदना, जाणहार तुझ लेख ॥ ८ ॥
दुण ने कष्ट हुवो घणो, आय देन असमर्थ।
ऐसी बुद्धि स्वामी तणी, उर में अधिक ओपंत ॥ ६ ॥

॥ ढाल २१ मी ॥

॥ पर नारी संग परिहरो ए देशी ॥

सावद्य उप र सं र तणा छै, तिणमें । जाणज्यो गो। पूज्य भिक्खु ओल ायवा प्रगट, दियो इसो दृष्टतो ॥ स्वाम भिक्खु रा दृष्टान्त सुणज्यो ॥ १ ॥ एक नृपति चोर पकड़्या इग्यारह, हुवो मारण रो दीधो। साहुकार एक अरज करी इम, सांभलज्यो प्रसिद्धो ॥ स्वा० ॥ २ ॥ पंच पंच सौ रुपया प्रकट, इक इक चोर ना लीजे। आप कृपानिधि अरज मानी ने, चोर इग्यारा छोड़ीजे ॥ स्व ० ॥ ३ ॥ राजा भाखै महा अपराधी, दुष्ट घणाई दु दाता। छोड़वा जोग नहीं छै तस्कर, मान मछर मद माता ॥ स्वा० ॥४॥ सेठ कहै दश मूको स मी, लाभ रुपयां रो लीजे। तो पिण नृप नहीं छोड़े तस्कर, कहे चोरां रो पख नहीं कीजै ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ नव तस्कर मूको कृपानिधि, आठ सात आदि जाणी। इण पर अरज करी अधिकेरी, महिपति तो नहीं मानी ॥ स्वा० ॥६॥ रोकड़ा पांच सौ देई रा

ने, चोर एक छोड़ायो। ते पिण विनती अधिक करी तव, तस्कर मूक्यो तायो ॥ स्वा० ॥७॥ पुर ना लोक करै गुण प्रगट, सेठ तणा सहुकोयो। धन्य धन्य लोक कहै यो धर्मी, हर्ष हिये अति होयो ॥ स्वा० ॥ ८ ॥ वन्धीछोड़ लोकां में वाजै, अधिक कियो उपगारो। तस्कर पिण गुण गावै तेहना, सुयश फैल्यो संसारो ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ महिपति दश चोरां ने मराया, इक निज स्थानक आयो। समाचार न्यातीला ने सुनाया, परियण दुख अति पायो ॥ स्वा ॥ १० ॥ तस्कर दश ना न्यातीला ते, भारी द्वेष भराणा। वैर वाल ने भेला हुवा, वहु प्रत्यक्ष ही प्रगटाणा ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ चोर सारां ने साथ लई चाल्यो, पुर दरवाजे पिछाणो। चिट्ठी वांध लोकां ने चेतायो, सांभलज्यो सहु वाणो ॥ स्वा० ॥ १२ ॥ मुझ तस्कर दश मार्या तिणरो, इग्यारे गुणो वैर गिणस्यूं। मनुष्य एक सौ दश मार्यां स्यूं, पछै विपटालो करस्यं ॥ स्वा० ॥ १३ ॥ साहुकार ना पुत्र सगा ने, मित्र भणी नहीं मारूं। अवर न छोडूं उराणे आयो, पंथ रह्या पिण पारूं ॥ स्वा० ॥ १४ ॥ एम कही जन मारण उमग्यो, सुत किण ही रो संहारै। किण ही रो तात भाई हणै किणरो, माता

वि ण री मारै ॥ स्वा० ॥ १५ ॥ किण री नार हर्यो ति कोप्यो, बहन कोई री बिणासै। किणही री भूः भतीजो किण री, तस्कर इम न त्रासे ॥ स्वा० ॥ १६ ॥ भयङ्कर नगर में प्रगट्यो, होय रह्यो हा कारो। सेठ ने निंदवा लागा सहु न, भवै वचन प्रहारो ॥ स्वा० ॥ साहुकार रे घर ई ।, रोवे ोग लुगाई। कोई हे ऋ मराई, कोई कहे प्रिय भाई ॥ ० ॥ १८ ॥ पा तु घर ब थो, तो कू में नहीं न्हाख्यो। चोर छोड़ाई म्हारा ष मराया, र जीवतो राख्यो ॥ र ॥ १९ ॥ सेठ रियो शहर छोड़ी ने, बीजे म बस्यो जाई। इण भव फिट २ हुवो धिको, परभव दुर्गति ई ॥ स्वा० २० ॥ जे ण । तेहिज़, अवगुण करत थागो। संसार नो उपगार इसो छै, मो तणो नहीं ागो ॥ ० ॥ २१ ॥ मोख तणो उप र है मोटो, र शिव पद चरिये। जिण ागन तिण हें जाणी, उ ट धरी आदरिये ॥ स्वा० ॥ २२ ॥ भिक्खु स्वाम ली पर भाख्यो, दया ऊपर दृष्टन्तो। उत्पत्ति बुि अधिक ोप , हलुकरमी हरषंतो ॥ ० ॥ २३ ॥ बीसमी ढ में आख्यो, अघ

हेतु उपगारो। त्यत्त ही फल सेठज पाया, गलि वहु धिकारो ॥ स्वा० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

शिव संसार तणा सही, कह्या दोय उपगार।
भिक्षु तिण ऊपर भला, दृष्टन्त दिया उदार ॥ १ ॥
उदपुर साधो एक ने, उजाड़ में अन्धार।
किण झाड़ो देई करी, ताजो कियो तिवार ॥ २ ॥
पिता कहै मुझ सुत दियो, भाई बहिन भापंत।
ते म्हाने भाई दियो, स्त्री कहै दीधो कंत ॥ ३ ॥
चूड़ो चूंदड़ी अम रही, ते थारो उपगार।
इम कहै मंत्रणहार ने, स्वजन सगा परिवार ॥ ४ ॥
ए उपगार संसार नो, तिण में नहीं तंत सार।
बंध कारण कह्यो, नहीं धर्म्म पुण्य लिगार ॥ ५ ॥
उदपुर साधो एक ने, साधां ने कहै सोय।
यन्त्र मन्त्र बूंटी जड़ी, औषध आपो मोय ॥ ६ ॥
संत कहै कल्पै नहीं, वलि बोल्यो ते वान।
करामात हो तो कहो, के लियो भेष तुफान ॥ ७ ॥
करामात मुनि कहै इसी, दुखी कदे नहीं थाय।
ते कहै मुझ ते पिण कहो, अणशण मुनि राय ॥ ८ ॥
शरणा सूंस दिया घणा, शिवगामी सुर थाय।
मोक्ष तणो उपगार ए, स्वाम दियो ओलखाय ॥ ९ ॥

॥ ढाल २२ मी ॥

(डाभ मुंजादिक नी डोरी एदेशी)

दूजो दृष्टन्त भिक्खु दीधो, सांभलज्यो प्रसिद्धो।
लोक मोक्ष ने मग नहीं मेले, तेतो कठे ही न थावे

भेल ॥ १ ॥ साहुकार रे हि यां दोय, एक श्राविका शुद्ध वलोय। वैराग त्यन्त बखाण, किया रोवण रा पच ाण ॥ २ ॥ दूजी धर्म्म में समझे नाहीं, चित्त म भोग री चाहि। केतलाइक काल विचार, पर-देश माहें भरतार ॥ ३ ॥ काल कर गयो ते किण बार, त सांभली छै बेहुं नार। तिण रे रोवणरा छै त्याग, ते तो रोवे नहीं धर राग ॥ ४ ॥ समता धार बैठी सोय, कियो नेम न भांगे कोय भ श्र भ कर्म्म स्वभावै, प्रत्यच्च ओल लियो प्रभावे ॥ ५ ॥ दुः पाप प्रभावे देखै, बलि कर्म्म बांधू किण ले । उदै बांध्या जिसाइज ाय, इम चित्त ने दियो समझाय ॥ ६ ॥ बीजी रोवे करत विलाप कहै वण उदय हुवा प। छाती माथो कूटे तन झाड़े, ति रोवती बांगा पाड़े ॥ ७ ॥ हाहाकार हुवो तिण वेलां, लोक कड़ा भेला। रोवे तिण ने अधिक सरावै,, पतिव्रता ये दुः पावै ॥ ८ ॥ वले बोले घणा लोग लुगाई, धन्य धन्य ये नार सुहाई। इण रे प्रीतम स्यूं ति प्यार, तिण स्यूं रोवे छै बांगां पाड़ ॥ ९ ॥ नहीं रोवे तिण ने जन निन्दे, ो पापणी थी अपछंदे। तो मुवोज बांछती कन्त, आं में आंसू नहीं आवन्त ॥ १० ॥ सारी रे मन इस भावै,

ोह ँ बसे र ावै। ाधु हो किण ने रावै, परमारथ विर पावै ॥ ११ ॥ मो ने ोक रो न्यारो, बुद्धिवन्त हिया में विचारो। दियो स्व भिक्खु दृष्टान्त, त्यच्च देख दोनूं पंथ ॥ १२ ॥ इम ही ं र नो उपगारो, मोत्त रा मारग ं न्यारो। बारुं रो तणो उपगार, ं सार ने छेदण र ॥ १३ ॥ ऐ भि क्खु उजागर ारो, न् य ` वि तन्तसारी। कही द बातो ी , भिक्खु रा णा रो न ीं ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

श्रद्धा उपर स्वामजी, दिया ा दृष्टान्त।
कहि २ ने कितरो कहूं, न्याय मिलाया तंत ॥ १ ॥
वलि आचार रे ऊपरे, न्याय भि दा सार।
ग्रन्थ बधतो जाण ने, न कियो बहु विस्तार ॥ २ ॥
इन्द्री वादी ऊपरे, काल वादी पर सोय।
दृष्टांत पूज्य दिया घणा, म्हे बहु न कह्या जोय ॥ ३ ॥
प्रस्ताविक प्रगट पणे, हेतु हद हितकार।
आख्या भिक्खु ओपता, उत्पत्तिया अधिकार ॥ ४ ॥
कथा नंदी सूत्रे कही, बुद्धि पहिचाण।
तिण कारण दृष्टांत सुण, चमको मति सुजाण ॥ ५ ॥
केसी स्वामी पिण कह्या, सखरा हेतु सार।
हिज भिक्खु जाणज्यो, पं काल ॥ ६ ॥
मूरख दृष्टांत सुण, उलटा बांधे कर्म्म।

खबर नहीं जिन धर्म्म री, भूला अज्ञानी ॥ ७ ॥
हलुकर्मी दृष्टांत सुण, पामै अधिको प्रेम ।
भारी कर्म्मा सांभली, बोले भावे तेम ॥ ८ ॥
विचरत २ आविया, शहर केलवे स्वाम ।
ठाकुर मोह सिंहजी, वांदण आया तांम ॥ ६ ॥

॥ ढाल २३ ॥

(आगे जातां अटवी ए देशी)

सहु परषदा ऽतां, सिरदार हायो रे । मोह-
सिंहजी, बोलै इम बायो रे ॥ ि खु
भणी ॥ १ ॥ म २ री बिनर , ति ापने
आवे रे । न बहु दे नां, सहु पने चाहवे रे,
भिक्खु ब । ॥ २ ॥ नारी आपने, देखी वै
राजी रे, र जोड़ो रे, जन ोरति ी रे ।
भि० ॥ ३ ॥ पुण्यवन्ता प्रत्यच्च, नर नारी निरखै रे ।
सूरत दे ने, हिवड़े ति हर्षे रे ॥ भि० ॥ ४ ॥
घणा ोक ने बल्लभ लागो रे । ते
ारण किसो, यांरे हर्ष थागो रे ॥ भि० ॥ ५ ॥
इसो ण ई प में, ते मुझ ने बत ो रे ।
पणे सही, दि में द ावो रे । ॥ ६ ॥
भिक्खु इम भा , एक सेठ प्रदेशे रे । वर्ष बहु
ाया, त्रिय छै निज देशे रे ॥ भि० ॥ ७ ॥ ते
नार पति ता, शीले गह गहती रे । निज प्रीतम

थकी प्रेमे अति रहती रे। भिक्खु न्याय भणी ॥ ८ ॥ घणा महीना हुआ, कागद नवी आयो रे। त्रिय चिन्ता करे, मन प्रीतम मांह्यो रे ॥ भि० ॥ ६ ॥ ते सेठ प्रदेश थी, कासीद पठायो रे खरची दे करी, तिण पुर ते आयो रे ॥ भि० ॥ १० ॥ सेठ तणी हवेली, आय ऊभो तायो रे। किणहिक पूछियो, किण पुर थी आयो रे ॥ भि० ॥ ११ ॥ लियो नाम ते पुर नो, नारी सुण हरखी रे। आवी बारणै, नैणां तसु निरखी रे ॥ भि० ॥ १२ ॥ कासीद ने देखो, हिवड़े हरषाणी रे। सुखसाता सुणी, रूं रूं विकसाणी रे ॥ १३ ॥ उन्हा पाणी सूं उणरा पग धोवै रे। आनन्द जल भरया, नेत्रां सूं जोवै रे ॥ भि० ॥ १४ ॥ वर भोजन करने, कन्हे वेस जीमावै रे। पूछै बलि बलि, समाचार सुहावै रे ॥ भि० ॥ १५ ॥ साहजी डी ां में, किसाइ छै जाणी रे। साता छै, पूछै हरषाणी रे ॥ भि० ॥ १६ ॥ साहजी कठे पोढ़े, किण जागां वेसे रे। बात सारी हो, सुण ने ति उलसै रे ॥ भि० ॥ १७ ॥ गेई रण नहीं छै, साहजी रे तन में रे। उ र ांभली, त्रिय हर्षे न में रे ॥ भि० ॥ १८ ॥ ाहजी हो मुझ ने, माचार ह्या छै रे। इहां

आसी कदे, वर्ष बहोत थया छै रे ॥ भि० ॥ १९ ॥ दिन रात्रि हूं तो, दिल आंत चिन्ता करती रे। कागद ना दियो, मन में दुख धरती रे ॥ भि० ॥२०॥

सीद कहै सुणो, साहजी रा जाबो रे। एम कह्यो सही, अवां छां उतावो रे ॥ भि० ॥ २१ ॥ पिण कोइक कारण सूं, अल्प दिन रेजो रे। मुझ ने मेलियो, सुण बाध्यो हेजो रे ॥ भि० ॥ २२ ॥ समाचार आपने, साहजी कहिवाया रे। म्हे ताकीद स्यूं आया के आया रे ॥ भि० ॥ २३ ॥ पैदास घणी छै, सुख से तुम रहिज्यो रे। किण ही बात री, मन फिकर म कीजो रे ॥ भि० ॥ २४ ॥ समाचार ज्यूं ज्यूं कहै, त्यूं त्यूं मनं हरषे रे। राजी हुवे घणी, कासीद ने निरखै रे ॥ भि० ॥ २५ ॥ कासीद ने देखी हर्षे अति नारी रे। ते कहै पिउ तणी, वतका अति प्यारी रे भि० ॥ २६ ॥ एहवो बिरतंत देखो, कहे अजाण एसो रे। इण दलिद्रो थको, पतिव्रता तो पेमो रे ॥ भि० ॥ २७ ॥ सुण बोल्यो सैणो, नहीं इण स्यूं प्यारो रे। पिउ समाचार थी, हरषो है नारो रे ॥ भि० ॥ २८ ॥ और भ्रम मति राखो, आ महा गुणवन्ती रे। सत्यवंती सती, शुद्ध मारग चलंती रे ॥ भि० ॥ २९ ॥ समाचार प्रयोगे, पतिव्रता हर-

षाणी रे। और भरम नहीं, तिमहिज म्हे जाणी रे॥ भि०॥ ३०॥ भगवान रा गुण म्हे, विध रीत बतावां रे। शिव संसार नों, मारग ओलखावां रे ॥ भि० ॥ ३१॥ झीणी २ म्हे, सूत्र रहिंस बतावां रे। लोभ रहित पणै, भिन्न २ दरशावां रे॥ भि०॥ ३२॥ दुःख नरक निगोद ना, दूरा टलजावै रे। ते वातां कहां, तिण कारण चाहवै रे ॥ भि० ॥ ३३॥ घणा लोग लुगाई, इण कारण राजी रे। गामो गाम थो, कित-तियां ताजी रे॥ भि० ॥ ३४॥ कवडी नहीं मांगां, शिव पंथ बतावां रे। नर नाखां भणी, इण कारण सुहावां रे ॥ भि०॥ ३५॥ कासीद निर्गुण थो, पिण पिउ समाचारो रे। तिण मुख स्यूं कह्या तिण स्यूं हरषी नारो रे भि० ॥ ३६ ॥ म्हे महाव्रत धारी जिन वैण सुणावां रे। वहु प्रकार थो, नर नांखां ने सुहावां रे॥ भि० ॥ ३७॥ नरपति सुरपति पिण राण्यां इन्द्राणी रे। ते मुनिवर भणी, निरखें हर-खाणो रे॥ भि० ॥ ३८॥ मुनि नो अभरोसो, कोई नहीं राखै रे। अण समझू तिको, मन आवे ज्यूं भाखै रे॥ भि० ॥ ३६ ॥ ठाकुर मोहकमसिंह, सुण ने दरशाणो रे। सत्य वचन आपरा, स्वामी वैण सुहाणो रे॥ भि० ॥ ४० ॥ ऐसा भिक्खु स्वामी, बुद्धि

अधिक उदारी रे। उत्तर अति भला, सुणतां सुख-कारी रे॥ भि० ॥ ४१ ॥ भिक्खु ना जबाब स्यूं, अनुरागी हर्षे रे। भिक्खु गु भला, गुण ाही परखे रे॥ भि० ॥ ४२ ॥ द्वेषी अगुणी जन, सुण मूंह मचकोड़े रे। ते अवगु थकी, आ ने जोड़े रे ॥ भि० ॥ ४३ ॥ तन्त ल तेवीसमी, सुणतां सुखदाई रे। ह म भिक्खु तणी, वतका मन भाई रे ॥ भि० ॥ ४४ ॥

दोहा

किण ही भिक्खु ने ो, लागूं तुझ बहु लोय।
अवगुण काढ़े थांहरा, ह कहै तब सोय ॥ १ ॥
अवगुण काढ़े मांहरा, छोनी काढ़ता सोय।
म्हारे अवगुण काढ़णा, माहें न राखणा कोय ॥ २ ॥
क तप संयम करी, अवगुण काढ़ौं आप।
क जन अवगुण करे, रहि काटौं पाप ॥ ३ ॥
संवली बेवी स्वामजी, इम बहु बात अनेक।
देपूरी जातां मिल्यो, द्वेषी जन ॥ ४ ॥
तिण यो सूं नाम तुझ, भीक्खण कहीज।
तिण ो तेरापन्थी ते, ह कहै तेहीज ॥ ५ ॥
तब कहै तुझ मुख देखियां, जावे नरक मझार।
पूज्य कहै तुझ मुख देखियां, किहां जावै कहो धार ॥६॥
मुझ मुख देख्यां शि । स्वर्ग, तब बोल्या महाराय।
म्हे तो इसड़ो ना कहां, मुख थी नरक शि ॥७॥

पिण मुख देख्यो थांहरो, म्हारे तो शिव स्वर्ग।
म्हारो मुख देख्यो तुम्हें, तुम कहिणो तुझ नर्क ॥ ८ ॥
सुण ने कष्ट हुवो घणा, ऐसी बुद्धि अधिकाय।
वलि उत्पत्तिया बुद्धि करी, निर्मल मेल्या न्याय ॥ ६ ॥

॥ ढाल २१ मीं ॥

(कहे छे रूप श्री नार सुणज्यो ए देशी)

स्वाम भिक्खु सुखदाय, मणिधारी महा मुनिराय हो ॥ भिक्खु बुद्धि भारी ॥ अति मति श्रुति पर्यव अथाय, जसु गुण पूरा कह्या न जाय हो ॥ भिक्खु बुद्धि भारी ॥ बुद्धि अति अधिक अपारी, ए तो स्वाम सदा सुखकारी हो ॥ भि०॥ १ ॥ धुर देव गुरु ने धर्म्म, पद तीन दिखाया पर्म्म हो ॥ भि० शुद्ध सरध्यां समकित सार, धुर शिव पावड़ियो धार हो ॥ भि० ॥ २ ॥ दियो गुरु ऊपर दृष्टन्त, तकड़ी री डांड़ी रो तन्त हो ॥ भि० ॥ तीन वेच डांड़ी रे समीच, विहु पासे ने इक वीच हो ॥ भि० ॥ ३ ॥ विचले ह्वै फरकज वाण, कहिये तसु न्तर काण हो ॥ भि० ॥ तसु विचलो वेच हुवे तंत, कोई अन्तर काण न कहन्त हो ॥ ४ ॥ ज्युं देव गुरु धर्म्म जाणी, पद गुरु नो वीच पिछाणी हो भि० गुरु होवे शुद्ध गुणवंत, तो देव धर्म्म कहे तंत हो ॥ भि० ॥ ५ ॥ होवे गुरु हीण आचारी, वलि श्रद्धा भ्रष्ट

विचारी हो ॥ भि० पाड़े देव मांहे पिण फेर, धर्म्म में पिण कर दे अंधेर हो ॥ भि ॥६॥ गुरु मिले ब्रह्मण तत् खेव, तो देव कहे महादेव हो भि० अने धर्म्म बतावै एह, जन विप्र जिमावें जेह हो ॥ भि० ॥ ७ ॥ भोपा गुरु मिले भरमाजा, देव कहै देव धर्म्मराजा हो भि० सुरह गायनो बाहरूसावो, धर्म्म पाताल्यो भोपा जिमावो हो भि० ॥ ८ ॥ गुरु मिले कांवरिया कहेजी, देव बताय देवे रामदेजी हो भि० धर्म्म कहै कांबर जिमावो, वले जमारी रात्रि जगावो हो ॥ भि० ॥६॥ अरु गुरु मिल जावे मुल्ला, तो देव बताय दे अल्ला हो भि० धर्म्म जवे करण जलपंता, एर, चरंति आदि कहंता हो भि० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

एर चरति मेरु चरति, खेर चरति बहुतेरा ।
हुक्म आया अल्ला साहिबरा, गला काटूंगा तेरा ॥११॥
ए साखो पढ़ पापिया, करी करे पर जीव ।
ते पाप उदय आयां छतां, पामै दुःख अतीव ॥ १२ ॥

॥ ढाल तेहि ॥

जो गुरु मिले हिंसा धर्म्मी, कहै निगुणा देव कुकरमी हो भि० धर्म्म फूल पाणी में थापे, सूत्रां रा वचन उत्थापे हो भि० ॥ १३ ॥ गुरु मिले असल

निग्रन्थ, देव बताय देवै अरिहन्त हो भि० धर्म्म जिन आज्ञा बतावै, इहां अन्तर काए न आवै हो भि० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

गजो मैमूंदि घासतो, तीनूं एकण गोत।
जिण ने जेड़ा गुरु मिल्या, तिसा काढ़िया पोत ॥ १५ ॥

॥ ढाल तेहिज ॥

इण दृष्टन्त गुरु हुवै जैसा, तिके देव बवै तैसा हो भि० वलि धर्म्म इसोज बतावै नर मक्रू न य मिलावै हो ॥ १६ ॥ उत्तम पुरुष आचारी. गुरु सत वी गुण धारी हो भि० निर्म धर्म्म देव निर्दोष, न सूं सरध्यां हे मोख हो ॥ १७ ॥ वर ले भिक्खु बताया, दि में भि २ दरशाया हो भि० ए कहो चौवीसमो ढा , भिक्खु यश अधिक र । हो ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

ण कैयक कहै, म्हारै करणी सूं नहीं काम।
म्हेतो ओघो मुंहपति, वांदां छां सिर नाम ॥ १ ॥
भिक्खु कहै ओघा भणी, वंदणा कियां तिरन्त।
तो ओघो हुवै ऊनरो, ऊन गाडर उपजन्त ॥ २ ॥
पग गाडर ना पकरना, जो तिरै ओघा थी तास।
धिन है माता तूं सही, सो ओघा करै पैदास ॥ ३ ॥

मुंहपति हुवै कपासनी, सूत्र वणि नो होय।
जो तिरै मुंहपति वांदियां, तो वणिने वंदनो जोय ॥ ४ ॥
धिन है वणि सो तांहरो, हुवै मुंहपति एह।
भेष भणी इम वांदियां, भव दधि केम तिरेह ॥ ५ ॥
गुण लारे पूजा कही, तो निगुण पूजता जाय।
चौड़े भूला मानवी, किम आणीजै ठाय ॥ ६ ॥
जिन मारग में देखल्यो, गुण लारे पूजाह।
निगुणा ने पूजे तिके, ते मारग दूजाह ॥ ७ ॥
गुण गोली लारे भरी, पुरल्यां पांत घपाय।
गुण विन ठाली ठीकरो, देख्यां भूख न जाय ॥ ८ ॥
एक व्रत भांगे इसो, दोषण थापे जाण।
इम इक व्रत भांगां छतां, पाचूं जाय पिछाण ॥ ९ ॥

॥ ढाल २५ मी ॥

(कामण गारो हे कुण ए देशी)

किणहिक स्वाम भणी कह्यो रे, किम ए बात मिलाय। एक महाव्रत भांगां छतां रे, पञ्च वरत किम जाय ॥ सुणज्यो दृष्टन्त भिक्खु तणा रे ॥ १ ॥ स्वाम कहै तुमे सांभलो रे, पाप उदे थी पिछाण। इण भव में पिण दुःख उपजै रे, सुण एक हेतु सुजान ॥ तंत दृष्टन्त भिक्खु तणा रे ॥ २ ॥ एक भिखारी भीख मांगतो रे, फिरतां २ पुर मांहि। पंच रोटी रो आटो पामियो रे, अन्तर भूख अथाय ॥ तं० ॥ ३ ॥ रोटी करण लागो तदा रे, भिक्षु चर भाग्य हीन। एक

रोटी ने उतार ने रे, चुला लारे मेली दीन ॥ तं ॥४॥ स्वान एक आयो तिण समे रे, पाप तणे परमाण। लोयो कठोर्ता रो ले गयो रे, जद ते स्वान लारे न्हाठो जाण ॥ तं० ॥ ५ ॥ स्वान लारे भिख्याचर न्हासतां रे, आखुर पडियो अचाण। हाथ माहें जे लोयो हुन्तो रे, ते धूल में विखरियो पिछाण ॥ तं० ॥ ६ ॥ तत् खिण पाछो आवी तदा रे, देखण लागो तिवार। चूला लारे रोटी पड़ी हुन्ती रे, लेगई तास मंजार ॥ तं० ॥ ७ तवा तणी तवे बलगई रे, खीरां री खीरे हुय गई छार। पांचूं विललाई इण रीत सूं रे, पाप तणा फल धार ॥ ८ ॥ इमहिज एक भांगां थकां रे, पांच जावे परवार। दोपण थापे जे जाण ने रे, भव २ होवे खुवार ॥ तं० ॥ ९ ॥ दोप सेव्यां डंड संयजे रे, डंड जितोई भागंत। नवी दिख्या आवे जेह थो रे, ते दोप सेव्यां सर्व जावन्त ॥ तं० ॥ १० ॥ भिक्खु स्वाम भली परे रे, दीधो चारु दृष्टन्त। हलु-कर्म्मी सुण हरषिये रे, भारी कर्म्मा भिड़कन्त ॥ तं० ॥ ११ ॥ पचीसमी ढाल परवरो रे, भिक्खु बुद्धि भर-पूर। नित्य प्रति हूं वन्दना करूं रे, पोह ऊगन्ते सूर ॥ तं० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

आधा कर्मी जायगां, थानक तिणरो नाम ।
एहवा थानक भोगवे, वले कहे निरदोषण ताम ॥१॥
वलि कहै म्हे मुख सूं कद कह्यो, जद बोल्या भिक्खु स्वाम ।
जाय जमाई सासरे, ते पिण न कहै ताम ॥ २ ॥
मुझ निमते सीरो करो, इम तो न कहै तेह ।
पिण कीधो ते भोगवे, जद दूजी बार करेह ॥ ३ ॥
जो सीरा रा सूंस करे, तो न करे दूजी बार ।
त्याग न ों तिण सूं करे, भोजन विविध प्रकार ॥ ४ ॥
ज्यूं भेषधारी रहे थानक मझे, वले कहै मुख सूं नाम ।
थानक मुझ निमते करो, इम म्हे कद कह्यो आम ॥५॥
त्यां निमते कियो भोगवे, फिर करे दूजी बार ।
त्याग करे थानक तणा, तो आरम्भ टले अपार ॥ ६ ॥
वले डावरो कद कहै, करो सगाई मोय ।
पिण सगपण कीधां पछे, कुण परणीजे सोय ॥ ७ ॥
वलि बहु बाजे केहनी, घर किणरो मंडाय ।
डावड़ा तणोज जाणज्यो, थानक एम गिणाय ॥ ८ ॥
थानक बाजे तेहनो, मांहि पिण रहे तेह ।
न कह्यो थानक नो तिणां, पिण सहु काम करेह ॥९॥

॥ ढाल २६ मी ॥

(कपि रे प्रिया संदेशो कहेय० एदेशी)

गछवास्यां रे उपासरे रे, मथेण तणे पोशाल ।
फकीर रे तकियो कहे रे, नाम में फेर निहाल रे ॥
जीव स्वाम बुद्धि विशाल ॥ १ ॥ स्वाम बुद्धि अति

शोभती रे, निर्मल न्याय निहाल रे ॥ जी० ॥२॥ कान फोडां रे आसण कहै रे, भक्तां रै स्तल भाल। भक्त फुट र तेहने रे, मंढी नाम निहाल ॥३॥ सन्यासां रे मठ हैं रे, रामसनेह्यां रे गेह। राम दुवारो केइक कहै रे, राम-मोहल कहै केह ॥४॥ घराधणी रे घर है रे, सेठ रे हवेली सुहाय। कहै गाम धणी रे कोठरी रे, किहांएक रावलो कहाय ॥ ५ ॥ राजा रे हल कहै ही रे, कांयक ठौर दरबार। साधां रे थानक बाजतो रे, नाम में फेर विचार ॥६॥ सगलाई घररा घर अछै रे, कठेएक वुहा कोदाल। किहांयक कसी बुही सही रे, आधाकर्म्मी असरा ॥ ७ ॥ आरम्भ तो षटकायनो रे, हुवो ज्यूं रो ज्यूं जाण। अरिहंत नी नहिं गिन्यां रे, छः कायनो घमसाण ॥ ८ ॥ घर छोड्या मुख-सूं कहै रे, गाम २ रह्या घर मांड। तिण घर रो नाम थानक दियो रे, रह्या भेष ने भांड ॥ ६ ॥ आधाकर्मी थानक भोगव्यां रे, महा त्र क्रिरिया संभाल। दूजे आचाराङ्ग देखल्यो रे, कह्यो दूजे अध्ययने दया ॥ १० ॥ आधा कर्म्मी आदर्‌यां रे, चौमासी डंड पिछाण। निशीथ दशमें निहालज्योरे, वीर तणो यह वाण ॥ ११ ॥ आधा कर्म्मी भोगव्यां रे, रूले अनन्तोकाल। पहले ,तक

भगवती में पेखल्यो रे, नवमें उदेशे निहाल ॥ १२ ॥
इत्यादिक बहु बारता रे, खी आगम मांय। भिक्खु
तास भली परै रे, रूड़ी रीत दीधी ओल य ॥१३॥
उत्पत्तिया बुद्धि अति घणी रे, अधिक उजागर प।
निश दिन मनड़ो मांहरो रे, जप रह्यो आप रो जाप
॥१४॥ स्वप्न सूरत मनी रे, देखत ही सु होय।
प्रत्यक्ष नो कहिवो किसूं रे, शरण आपनो मोय ॥१५॥
आदि जिणंद तणी परै रे, ओल यो श्रद्धा चार।
जनम जनम किम विसरे रे, तुझ ण अनघ पार
॥१६॥ बारु ल छबीसमी रे, भिक्खु ण मुझ चित्त।
याद यां हियो हुलसै रे, परम प सूं प्रीत ॥१७॥

॥ दोहा ॥

भारी शोभै , पूज्य भीखणजी पास।
बारूं कला बखाण की, घन जिम शब्द गुंजास ॥ १ ॥
नित्य बखाण दे निरमलो, ऊपर भिक्खु आप।
दान दया दीपावता, सुणतां टलै सन्ताप ॥ २ ॥
हलुकर्मी हरषे घणा, भारी कर्मी भिड़कन्त।
अलगा ही अवगुण करै, विकल वचन विलपन्त ॥३॥
किणहिक भिक्खु ने कह्यो, बर तुमें करो बखाण।
निन्दक ए निन्दा करै, अलगा बैठ अजाण ॥ ४ ॥
भिक्खु उत्तर दे भलो, स्वान तणुज स्वभाव।
झालर रो झिणकार सुण, रोवण केरो राव ॥ ५ ॥

नीच इती जाणे नहीं, ए फालर अधिकार।
व्याव तणी वाजे अछे, के मूवांनी धार ॥ ६ ॥
ज्यूं ए पिण जाणे नहीं, वांचै ज्ञान वखाण।
राजी रहणो ज्यांही रह्यो, अवगुण करै अजाण ॥७॥
उलटी निन्द्या ए करे, निन्द्या तणोज न्हाल।
स्वभाव थांरो छे सही, फूठी करै जखाल ॥ ८ ॥
ऐसी बुद्धि उत्पात री, निर्मल अपूर्व न्याय।
मेले मुनि महिमा निला, स्वाम घणा सुखदाय ॥ ९ ॥

॥ ढाल २७ मीं ॥

(हो म्हारा राजा रा)

स्वाम भिक्खु गुरु महा सुखदाई. भारीमाल शिष्य अति भारी। अमृत वाण सुधासो अनोपम, हद देशना महा हितकारी ॥ हो म्हारा शासण रा शिणगार, स्वामीजी भिक्खु भारीमाल रूप भारी ॥ १ ॥ हद वाण सुणी हलूकर्मी हरषै, द्वेषी वोल्या धर्म द्वेप धारी। वादोय पोहर रात्रि आई सो, थाने कल्पे नहीं इणवारी ॥ २ ॥ भिक्खु कहै दुःखनी रात्रि मूंडी, झट सुख निशा गोहरी जावैं। समी सांज मांहे मनुष्य मूआं सूं, लोकां में रात्रि मोटी लखावै हो ॥ ३ ॥ संत वखाण देवै ते न सुहावैं, ज्यांने रात्रि घणीज जणावै। दम्भ मिट्यां तो अधिक न दीसै, आतो पोहर रे आसरे आवै ॥ ४ ॥ दोहा सहित दिया दृष्टान्त दोनूं, पैतालीसै

शहर पींपार। तन्त चौमास सोजत में तेपने, उठै वो घणो उपगार ॥ ५ ॥ किणहिक स्वाम भिक्खु ने गो, इम उप र तो छो कीधो। जीव घणा ने समझाया जुगति सूं. लाभ धर्म्म रो लीधो ॥ ६ ॥ बलता भिक्खु कहै ती तो बाही, पिण गाम रे गोरवें पे ो। सो र नहीं आय पड्यां तो टिकसी, बाकी कठिन है अधिक विशेषो ॥ ७ ॥ गधा समान खराडी गिणिये, जिहां जारो विशेष जिणारो। ती समान धर्म्म खय करदे, तिण सूं न करणो तिणारो ॥ ८ ॥ किणही कह्यो देवो दृष्टन्त कर , स्वामो थ बोल्या सुण वायो। करड़ो रोग उपनां गंभीर केरो, दु फुजाल्यां केम मिटायो ॥ ९ ॥ हलवाणी रा डाम गां हुवै हलको, गंभीर रो रोग गिणायो। करड़ो मिथ्यात रोग मिटावण काजे, करड़ा दृष्टन्त कहायो ॥१०॥ किणही स्वामोजो ने पूछा कीधी, क ी बुद्धिवालो समझे न कांई। मुनि भिक कहै दा मूंग मोठांरी, फिर दाल चणा री पिण थाई ॥ ११ ॥ पिण गोहांरी दाल हुवे नहीं प्रत्यच्च, ज्यूं भारी करमा न समझै जाणी। हलुकम्मीं बुद्धिवान हुवे ते, पच्च छांडै जिण धर्म्म पिछाणी ॥ १२ ॥ शुद्ध जाब दूजो देवे तिण में

न समझे, आपरी भापा रो ही अजाण। दृष्टन्त स्वाम ते ऊपर दीधो. मसझावण काज सयाण ॥ १३ ॥ एक बाई बोली म्हारो भर्तार एहवो, अखर लिखे ते अधिक अजोग। बीजा सूं खर वचे नहीं विरुआ, मोने ठोटरो मिल्यो संयोग ॥ १४ ॥ इतरे दूजो कहै मुझ पिउ इसड़ो, पोतारा लिख्या अखर पिछाणो। जे पिण पोता सूं बच्या नहीं जावै, अति ही मूर्ख एहवो अजाणो ॥ १५ ॥ ज्यूं परी भापाने आप न जाणै, केवली भाख्यो धर्म किम आवे। सरधा तो परम दुर्लभ कही सूत्रे. परवीण हलुकर्म्मी पावै ॥ १६ ॥ पाखड्यां रो मग गायां री पगडांड़ो, दूर थोड़ो तो मारग दीसै। आगे उजाड़ मोटो अटवी में, दुष्ट कांटा विपम दूथरी से ॥ १७ ॥ ज्यूं दान शीलादिक अल्प दिखाई, पाखण्डी पछै हिंसा पमावैं। गे चले नहीं ये उन्मारग, जाव माहें घणा अटकजावै ॥ १८ ॥ पातशाही रास्ता जिम पन्थ प्रभु नो, नहीं अटकै कठेई ते न्यायो। दृष्टन्त पाग तणो स्वाम दीधो, पार थेट तांई पोंहचायो ॥ १९ ॥ पाग चोरी ल्याया पूछ्यां न पूग, मुदो थेट तांई न मिलाई। साचो कहै मोल लियो कुण सेती, रुड़ी अमकडियां पास रंगाई। इम साची सरधा न्याय

किहांई न टके, झूठी सरधा टकै झोला वै
दृष्टन्त स्वाम भिक्खु एहवा दीधा, दान दया आज्ञा
दरशावै ॥ २१ ॥ एहवा भिक्खु स्वाम आप उजागर
ज्यांरा गुण पूरा कह्या न जावै । इद्द न्याय सुणी हरषे
हलूकर्म्मी, भारो कर्म्मा सां भिड़कावै ॥ २२ ॥
स र ढाल कही स समो, दृष्टन्त भिक्खु रा
दिखाया । मति त सूं बर न्याय मि ई, स्वामी
जीव घणा समझाया ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

किणहिक भिक्खु ने कह्यो, सूंस कराओ सोय ।
ते लेई भागे तिको, पाप आपने होय ॥ १ ॥
स्वामी भाखे सांभलो, कोयक साहूकार ।
वस्त्र किणने वेंचियो, सौ रुपया रो सार ॥ २ ॥
नफो मोकलो नीपनो, वेच्यो तास विचार ।
वलि वस्त्र लेवाल रा, सांभलजो समाचार ॥ ३ ॥
कपड़ो लीधो तिण किया, एक एक रा दोय ।
तो पिण नफो उण तणो, वेंच्यो तास न होय ॥४॥
कपड़ो जो लेई करी, जाले अग्नि मझार ।
तोटो पिण उण रे तिको, वेच्यो तसु म विचार ॥५॥
समझाई म्हे सूंस द्यां, तिणरो नफो अमाम ।
हमने तो ते हो गयो, तोटा में नहीं ताम ॥ ६ ॥
सूंस पालसी अति सखर, थिर फल तेहने थाप ।
भाग्यां दोषण उण भणी, पिण म्हांने नहीं पाप ॥ ७ ॥

घलि दूजो दृष्टन्त वर, दमिनें किण घृत दीध।
मुनिनें वहरावं जिय मूआ, पाप तास प्रसिद्ध ॥ ८ ॥
अथवा मुनि अन्य साध नै, घृत तैं बन्धे जिन गोत।
तो पिण फल ते मुनि तणे, हिव गृही ने नहि होत ॥९॥

॥ ढाल २८ मीं ॥

(आज शहर में आई पदेशी)

वैरागी री वाणी सुणयां वाधै, दियो स्वाम भिक्खु दृष्टान्तो रे लो। सुंवो आप गल्यां गालै कपड़ो, आवै रंग अत्यन्तो रे लो स्वाम भिक्खु तणा दृष्टन्त सुणजो ॥ १ ॥ गांठ कसुंवा री गाढ़ी बांधै, पोते गलियां विण रंग न पमावें रे लो। ज्यूं वैराग हीण तणो वाणी सूं, अति वैराग किण विध आवै रे लो ॥ २ ॥ भेखधारी कहै म्हे जोव वचावां..भीखण जी नाहिं वचावें रे लो। भिक्खु कहै थारा रह्या वचावणा. मारणाज छोड़ो मन ल्यायो रे लो ॥३॥ थानक मांहे रहो किवाड़ जड़ो थे, जीव घणा मर जावे रे लो। किवाड़ जड़वारा सूंस कियां सूं, घणा जीवांरी घात न थावै रे लो ॥ ४ ॥ चौकीदार हुंतो सो चौकी देणी तो छोड़ी, चोरी करवा लागो छाने छाने रे लो। कहे लोकां ने चोकी यूं करूं जावता, मैनत रा पै देवो थे म्हानेर लो ॥ ५ ॥ चौकी रही थारी चोरयां

छोड़ तूं बोल्या लोक तिवारे रे लो। दिनरा तो घर हाट देखी जावै, पछै रात्रि समै आय फाड़े रे लो ॥ ६ ॥ पइसो पइसो तोने देसां परहो, घर बैठी ने गिणायो रे लो। ज्यूं भेषधारी कहै म्हे जीव बचावा, मारणा छोड़ो भिक्खु फुरमायो रे लो ॥७॥ किणही पूछ्यो ऋषपाल मुनि कह्या, रिख्या करै किण रीतो रे लो। भिक्खु कहै ज्यूं छै तिम हिज राखणा, आघा पाछा न करणा अनीतो रे लो ॥ ८ ॥ पशु निखोतो चरता ने मुनि पेखे, किम ऋषपाल कहीजे रे लो। त्रिविधे त्रिविधे हणवा त्याग्यो ते, रक्षक अभय सर्व ने आपीजे रे लो० ॥ ६ ॥ कोई कहै हिवड़ां पंचम काल छै, पूरो साधपणो न पलायो रे लो। तव पूज्य कहे चौथा आरा में तेलो, कितरा दिना रो कहायो रे लो ॥ १० ॥ तव ते बोलंया तीन दिनरो तेलो, चौथे आहारै चित्त चाह्यो रे लो। भिक्खु पूछ्यो एक भूंगरो भोगव्यां, तेलो रहे के भागै ताह्यो रे लो ॥ ११ ॥

ते बोल्यो परहो भागै तेलो, इम चौथे रा से तेलो उलखायो रे लो। फेर स्वामी पूछै पंचम आरै, किता दिवस रो तेलो कहायो रे लो ॥ १२ ॥ तव ते बोल्यो तेलो तीन दिनारो, पंचम आरै पिछाणी

रे लो। भिक्खु कहै एक भूंगरो खाधां, शुद्ध रहे के भागे सो जाणी रे लो ॥ १३ ॥ तब ते बोल्यो परहो भागै तेलो, वलि पूज बोल्या वायो रे लो। भंगरा सूं ई तेलो पहरो भागै, दोष थाप्यां संजम किम ठहरायो रे लो ॥ १४ ॥ काल दुखमरे माथे कांय न्हाखो, नेयंठे छहूं चरण ते नीको रे लो। पंचम चौथा आरा में प्रत्यक्ष, सहुरे त्याग है एक सरीखो रे लो ॥ १५ ॥ दोष लागां रो डंड दोनूं आरा में, डंड लीधां चारित्र दोनूं आरो रे लो। दोनूं आरा माहिं दोष थाप्यां सूं, चारित दोनूं आरा में हुवे छारो रे लो ॥ १६ ॥ भिक्खु स्वाम दृष्टन्त भली पर, वारु भिन्न २ भेद बताया रे लो। ज्यां पुरुषां जिण माग जमायो, स्वामी चार तीर्थ सुखदाया रे लो ॥ १७ ॥ एहवा पुरुषां रा औगुण बोलै, कृतघ्न कर्म्म रेख काली रे लो। दुर्लभ बोध अवर्णवाद सूं दाख्यो, सूत्र ठाणांग लीजो संभाली रे लो ॥ १८ ॥ अष्टबीसमीं ढाल अनोपम, भिक्खु रा दृष्टन्त भालो रे लो। उत्पत्तिया भेद मति रो है आछो, नन्दी में पाठ निहाली रे लो ॥ १९ ॥

हो ा

किणहिक भि ने गो, म लेऊं ।
मन उठे है मांहरो, कहै सुखकार ॥ १ ॥
घर में पुत्रादिक , रुदन करै घर ।
तुझ काचो हियो तेहथी, अति ही कठिन म ॥२॥
स्याती रोता निरखने, मोह भरो मन मांहि।
तूं पिण करे , कठिन कहि ॥ ३ ॥
तिण कह्यो स्वामी तहत, , आंसू तो ।
परियण रोता पेखने, म्हारे पिण मोह आय ॥ ४ ॥
स्वाम कहे कोई सासरे, जाय जमाई जाण ।
आणो ले आतां , त्रिय सो रोवै ताण ॥ ५ ॥
पिण उणरी देखा देख पिउ, जेह ई जोय।
रुदन करे मोह सूं, हांसी में होय ॥ ६ ॥
त्रिय रोवे पीयर दे, वियोग पड़े विशेष।
वर रोवे किण वासते, अशेष ॥ ७ ॥
ज्यूं संयम जरे, ।
तत चारित तिको, मोह धरे किम ॥ ८ ॥
तिण सूं सं कठिन तुझ, दियो इसो दृष्टन्त।
बलि हेतु विविध, शोभंत ॥ ९ ॥

ढा २६ ॉ

(ी ७ पदेशी)

तो गोह ने दया । दया ओ -
णी दोहरी, प्रत्यक्ष र रे में, ची
। नहीं सोरीरा ॥ भवि भिक्खु टन्त

भारी ॥ १ ॥ पूज मोह ओलखायो प्रत्यक्ष, दियो एहवो दृष्टान्तो । परण्यां पछे कोई परभव पोंहतो, बाल अवस्थावन्तो ॥ २ ॥ मुओ देख हाहाकार माच्यो, त्रिया रोवै तिण वेला । प्रत्यक्ष हाय हाय शब्द पुकारैं, भय चक्र जन हुवा भेला भ० ॥ ३ ॥ कहे बापरो छोरी रो घाट कांई होसी, इणरी देखो अवस्था ऐसी । बारह वर्ष री विधवा होई सो, किण विध दिन काढसी भ० ॥ ४ ॥ एम विलाप करै लोक अधिका, जगत इणने दया जाणै । करुणा दया यह छोरी री करै छै, मूरख तो इम माणै ॥५॥ पण भोला इतरी नहीं पेखै, ए वंछे इणरा काम भोगो । जाणै ओ रह्यो हुन्तो जीवतो तो, सखर मिल्यो थो संजोगो भ० ॥ ६ ॥ दोय चार होता डावरा डावरी, भोग भला भोगवती । पिण न जाणै आ काम भोग थी, माठी गति माहिं पड़ती ॥ ७ ॥ तिणरी चिन्ता तो नहीं तिणने, तथा पिउ किण गति पांगरियो । ते पिण मूल चिन्ता नहीं त्यांने, जगत् माया मोह जुड़ियो भ० ॥ ८ ॥ ज्ञानी पुरुष मरण जीवण सम गिणै, उलट सोग नहीं आणै । मूढ़ मिथ्याती मोह राग ने, जीवण ने दया जाणै ॥६॥ अथवा राग द्वेष रे ऊपर, दृष्टान्त दूजो दीधो ।

डावरां रे किणही माथा में दीधी, प्रत द्वेष प्रसिद्धो ॥ १० ॥ उण ने सहु कोई देवै ओलंभा, डावरां रे माथा में कांई देवै। क्रोध करि दियां द्वेष कहे सहु, कोई आछो नहीं कहवै ॥ ११ ॥ डावरां ने किणही लाडू दीधो, अथवा मूलो दियो आणी। कोई न कहे इण ने कांई डबोवे, प्रत्यक्ष राग पिछाणी ॥ १२ ॥ ओ राग ओलखणो दोहरो अति ही, इण ने दयाक हे छे अजाणो। दुर्जय राग दशम ताई देखो, वीतां वीतराग कहाणो ॥ १३ ॥ इम राग द्वेष भिक्खु ओलखाया, मोहराग पाखंडी दया माणे। स्वाम भिक्खु न्याय सूत्र शोधी, निरवद्य दया आज्ञामें जाणे ॥१४॥ भरत क्षेत्र में दीपक भिक्खु, दीपा समान दीपायो। जिहाज तुल्य भिक्खु यशधारी, प्रत्यक्ष ही पेखायो ॥ १५ ॥ याद आवै भिक्खु मुझ हृदिश, तन मन शरण तुमारो। त्यां पुरुषां नी आसता तीखी, जिण रो है सफल जमारो ॥ १६ ॥ गुणतीसमी ढाले ज्ञानी गुरुना, बारु वचन बताया। कठा तलक भिक्खु गुण कहिये, चिर जश कलश चढ़ाया ॥१७॥

दोहा

विहरत पूज पधारिया, काफरले किण वार।
सन्त गोचरी संचरया, आज्ञा लेई उदार ॥ १ ॥

एक जाटणो रे उदक, जाच्यो साधां जाय।
ते धोवण नहिं दे तिका, कहे देवे सो पाय ॥ २ ॥
साधां आय सही, स्वाम पास सुविहाण।
आटणी रे अधिक, पण नहीं देवे पाण ॥ ३ ॥
तब स्वामी आया तिहां, बाई जल बहिराय।
जब ते कहे देवे जिसो, परभव में फल पाय ॥ ४ ॥
ओ धोवण धूं आपने, परभव धोवण पाय।
जे जल पीधो जाय नहीं, मुझ सेती मुनिराय ॥ ५ ॥
पूज तास पूछा करी, गाय भणी दे घास।
तिण रो स्यूं दे ते गऊ, आपे दूध उजास ॥ ६ ॥
इम मुनि ने जल आपियां, परभव सुखफल पाय।
निर्दोषण ना फल निमल, स्वाम दई समझाय ॥७॥
जद आछा दी जाटणी, बहिरी ते शुद्ध वार।
आप ठिकाणे आविया, ऐसी बुद्धि उदार ॥ ८ ॥
मति ज्ञान महा निर्मलो, भिक्खु नो भरपूर।
नीत चरण पालण निपुण, स्वाम सिंघ सम शूर ॥९॥

॥ ढाल ३० मी ॥

(भगवन्त भाख्या एदेशी)

ाज म्हारा पूज सूं रे पाखण्ड थरहड़े, सुरगिर आप सधीरो जी। पारश साचो रे भिक्खु प्रगट्यो-हद स्वाम अमोल हीरो जी ॥ १ ॥ दु शहरे रे पूज पधारिया, उतर्या उपासरे आणो जी। शिष्य हेम संघाते रे गोचरी उठता, इत कुण ानो जी ॥ २ ॥ आया दोय जणा तिण अव-रे, सामदा जी रा साधो रे। खांधे पोथ्यां तणा

जोड़ा खरा, मेला व मर्य्यादो रे ॥ ।० ॥ २ ॥
विहार .रन्ता उथा… …वि…, बोले मुख सूं बोलो
रे। कठे भीखणजी रे भीखणजी कठे, तब भिक्खु
बोल्या तोलो रे ॥ ४ ॥ भीखण नाम म्हारो
स्वामी भणे, बलि ते बोल्या विशेषो रे। थाने देखण
री मन में हुन्ती, तब स्वाम कहै तुम देखो रे ॥ ५ ॥
बलि उवे बोल्या थे सगली बारता, आछी कीधी
आमामोजी। एक बात आछी नहीं आदरी, तब
पूज कहै कहो तामो जी ॥ ६ ॥ बलि ते कहिवा रे।
लागा बारता, म्हें बावीस टोलां रा साधो रे। त्यां
सगलां ने असाध कहो तिका, बिरुई बात बिराधो
रे ॥ ७ ॥ मुनि भिक्खु कहे तुझ टोला मझे, लिखत
इसो अवलोयो रे। इकबीस टोलारो तुझ गण
आवियां, संयम देणो सोयो रे ॥ ८ ॥ ऐसो लिखत
थांरा गण में अछे, जाणो के थे न जाणो रे। जद
उवे बोल्या म्हे जाणां अछां, छै मुझ लिखत अछानो
जी ॥ ६ ॥ भिक्खु पभणे इकीस टोलां भणी,
थेइज प्रत्यक्ष उथाप्या रे। गृही ने दीख्या देई सो
गण मझे, थे गृही तुल्य त्यांनेई थाप्या रे ॥ १० ॥
इकवीस टोलां रा तुझ गण आवियां, दीख्या दे
लेवो माह्यों रे। गृही ने दीख्या देई सो गण विषै,

गृही तुल्य तास गिणायो रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ इक-
वीस टोला इम थेइज उथापिया, तुझ टोलो रह्यो
तेहो रे। तिण रो लेखो बताऊं तो भणी, सांभल-
जो सस्नेहो रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ डंड वेला रो आवै
जिण भणी, तेलो देवै तहतीको रे। तेलारो डंड
आवै तिण भणी, श्री जिन वैण सधीको रे ॥ १३ ॥
इकवीस टोला ने साध श्रद्धो अछो, वले नवो साध
पणो देवो रे। तिण लेखे दीख्या रे तुझ आवे नवी,
विवेक लोचन सूं वेदो रे ॥ १४ ॥ थांरो टोलो पिण
इण लेखा थको, उथप गयो उवेखो रे। इम बावीस
टोला उथप गया, दम्भ तजी ने देखो रे ॥ १५ ॥
एम सुणी ने ते बोल्या इण विधे, चारु वयण विचारी
रे। सुणो भीखणजी रे साचो वारता, बुद्धि तो थांरी
भारी रे ॥ १६ ॥ इम कहि जावा रे लागा उण समै,
स्वाम कहै सुखकारी रे। रहो तो चर्चा करां रुड़ी
तरे, न्याय तणी, निर्धारी रे ॥ १७ ॥ तब उवे बोल्या
मुझ रहिवा तणो, हिवड़ां थिरता न होयो रे तत्
क्षण एम कही ने तिहां थको, रह्या चालन्ता दोयो
रे ॥ १८ ॥ ऐसो बुद्धि अनोपम आपनी, बुद्धिवन्त
पामे विनोदो रे। चिमत्कार अति पामे चित्त मझे;
प्रगट पणे प्रमोदो रे ॥ १९ ॥ रागी सुणने रे चित्त

में रति लहे द्वेषी द्वेषज धारै रे। उलट बुद्धि नर वगुण आदरे, बच सुण मुंह बिगाड़ै रे ॥२०॥ बर भिक्खु री सुन्दर रता, सांभलतां सुखकारी रे। हलुकर्म्मी जन सुण हर्षे घणा, पूज रता री रे ॥ २१ ॥ तन्त तीसमी ढाल तपासनी अति बुधि भिक्खु नी ऐनो रे। अन्तर्य्यामी रे याद यां छतां, चित्त में पामे चैनो रे ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

विचरत पूज पधारिया, शिरियारी मैं सोय।
प्रश्न बोहरे पूछिया, जाति बीसा जोय ॥ १ ॥
जीव नरक में जाय तसु, तारण वालो ताम।
कुण है कहो कृपा करी, इम पूछ्यो अभिराम ॥ २ ॥
भिक्खु उत्तर इम भणे, सखर जाब सुखकार।
पथर कुवा में न्हाखियां, कुण तसु खांचणहार ॥ ३ ॥
कठिन पत्थर भारे करी, आफेई तल जाय।
भार सूं कुगति लहे, स्वाम कहे इम वाय ॥ ४ ॥
बोरे पूछा वलि करो, जीव स्वर्ग किम जाय।
कुण लेजावणहार तसु, वारु अर्थ बताय ॥ ५ ॥
भिक्खु कहे बोरा भणी, प्रत्यक्ष पाणी मांय।
काष्ट न्हाखे कर ग्रही, ते किण रीत तिराय ॥ ६ ॥
तिण काष्ट रे तल कहो किण मांड्या है हाथ।
हलका पणे स्वभाव सूं, ऊपर तिरने आत ॥ ७ ॥
हलको कर्म्म करी हुवां, जीव स्वर्ग में जाय।
सगला कर्म्म रहित सो, परम मोक्ष गति पाय ॥ ८ ॥

ऐसा उत्तर आपिया, बुद्धि विनाण।
बलि उत्पति ।बुद्धि थकी, र ॰ दि ।ण ॥६॥

॥ ॥

(देवे मुनिवर देशना, पदेशी)

पूज भणी किण पूछियो, को जीव किम होय ।ललना। दृष्टान्त स्वा ी दियो इ नो। भिलजो सहु कोय, ल ॥ तन्त न्त भिक्खु तणा ॥१॥ तन्त वचन तहती ० तन्त व तारणी, न्याय तन्त निरभी ० तं० ॥ २ ॥ पइसो पाणी मझे, त ि डूबे तेह। उ हिज पइसाने अग्नि में, अधिक प देवे एह ० तं० ॥ ३ कूटी कूटी बाटकी करो, तिरे उदक ताहि। ० बलि उण बाटकी ने विषै, पइसो ल्यां तिराय ० तं० ॥ ४ ॥ तिम ीव जम करी, रे त्म हलकी कोय ल० करम भार ो कियां, तिरिये भव दधि तोय ० तं० ॥ ५ ॥ किणही स्वा भणी कह्यो, दुरंगा पात्रा दे ल०। । धो । । किण कारणे, स्वाम कहे सुवि ० तं० ॥ ६ ॥ विविध रंग कुंथुवा हुवे, इ रंग सूं दूजा पर आय। साम्प्रत दीसणो सोहिलो, रण यह हाय ल० ॥७॥ अति भार हींगलु ए लो, कालो फौड़ो कहि-

वाय ल० बलि सोहरो बासी उतारणो, इत्यादिक ओलखाय ल० ॥८॥ जु जूवा रंग देवै जूदा, निशम में बरज नाहिं। बर्ज्या मत्व भावे करी, ते तरी थाप न हि ० ॥ ६ ॥ पणे स्वामी बेणी रामजी, भिक्खु प्रते भाषंत ० हींग पात्रा रंगणा नहीं, तब हे भिक्खु तन्त ० ॥ १० ॥ रे तो प । रंग्या छै, तुम्ह न हुवे म ० । तो तु रंगो मती, म्हें तो दोष न णा ० ॥ ११ ॥ तब बोल्या बेणीरामजी, केलुथी रंगवा रा भाव ० । भि तास भली परै, निर्मल ब वै न्याय ० ॥ १२ ॥ जो के लेवा तूं छै, पहिला पी ो कचा रंग रो पे ल० । । रंग रो गे पड्यो, पहिलो छोड़णो नहीं तुम्ह ले ॥१३॥ पहिला देख्यो । रंग रो परिहरि, चोखो के हेरे चित हि ० । द तो ध्यान घणा रंगरोज छै, इम हिने दिया मझाय ० ॥ १४ ॥ ऐसी बुद्धि उत्पात्तरी, नहीं न बड़ाई री नीत ० । तम थीं ओपता, पूरी ज्यांरी प्रतीत ० ॥ १५ ॥ प ववहार में गो खी, दोष णी किया दूर । निरदोष जाणयो निर्मलो, दरियो शूर ० ॥ १६ ॥ प्रथम चारंग पेखल्यो, पंचम अध्ययने पिछा

ल० । पंचम उदेशो पर्वड़ो, वीर तणी ए वाण . ० ॥ १७ ॥ शुद्ध व्यवहार आलोचियां, सम्य पिण सम्य थाय ल० । ते कामी नहीं तिण दोष नो, शुद्ध ।धुनी रीत सुहाय ल० ॥ १८ ॥ उत्तम ए पाठ ओलखी, कोई वोलरो भ्रम कर्म योग ल० । तो भिक्खु री । ता राखियां, पामै सुख परलोग ल० ॥ १६ ॥ आखो ढाल इकतीसमी, भिक्खु बुद्धि भण्डार । दृष्टान्त दिल में देखतां, चित्त पामै चिमत्कार ० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

किणही भिक्खु नें कह्यो, जीव छोड़ावै जाण ।
सूं फल तेहनो संपजे, वर भिक्खु कहे वाण ॥ १ ॥
घट में ज्ञान घाली करी, हिंस्या छोड़ायां धर्म्म ।
जीवण वंछै जेहनो, कटे नहीं तसु कर्म्म ॥ २ ॥
ऊंची कर वे आंगुली, आखे भिक्खु आप ।
ओ बकरो रजपूत ओ, कहो बांधे कुण पाप ॥ ३ ॥
मरणहार डूबै महा, के डूबे मारणहार ।
ओ कहै मारणहार तो, जासी नरक मझार ॥ ४ ॥
भिक्खु कहे डुबता भणी, तारै सन्त तिवार ।
समझावै रजपूत ने, शिव मार्ग ओकार ॥ ५ ॥
जे रो जीवणुं, वांछे नहीं लिगार ।
तिण ऊपर दृष्टान्त ते, सांभलजो सुखकार ॥ ६ ॥
साहुकार रे दोय सुत, एक अवधार ।
ऋग कपड़ी जागां तणुं, माथै करै अपार ॥ ७ ॥

दूजो सुत जग दीपतो, यश संसार मझार।
करड़ी जागां रो करज, ऊतारै तिण वार ॥ ८ ॥
कही केहने बरजै पिता दोय पुत्र में देख।
बरजै कर्ज करे तसु, के ऋण मेटत पेख ॥ ६ ॥

॥ ढाल ३२ मी ॥

(समता रस बिरला पंदेशो)

कर्ज माथे सुत अधिक करंतो, बार बार पिता बरजंतो रे ॥ समझू नर बिरला ॥ करड़ी जागां रा माथे कांय कीजे, प्रत्यक्ष दुख पामीजे रे ॥सम॥१॥ अधिक माथा रो जे कर्ज उतारे, जनक तास नहिं बारे रे। । सम० । पिता समान साधुजी पिछाणो, बकरो रजपूत वे सुत माणो रे ॥ सम० ॥ २ ॥ कर्म्म रूप ऋण माथे कुण करतो, आगला कर्म्म कुण अपहरतो रे । सम० । कर्म्म ऋण रजपूत माथे करे छै, बकरा संचित कर्म्म भोगवे छै रे ॥३॥ साधु रजपूत ने बर्जे सुहाय, कर्म्म करज करे कांय रे । सम० । र्म्म बंध्या घणा गोता सी, परभव में दु पासी रे ॥ ४ ॥ लर पणे तिण ने समझायो, तिण रो तिरणो बंछ्यो मुनिरायो रे । सम० । बकरा जीवावण नहीं दे उपदेश, रूड़ी गोल बुद्धिवन्त रे रे ॥ ५ ॥ इमहिज कसाई सौ बकरा हणंतो, शुद्ध उपदेश दे तार्यो सन्तो रे । म० । कसाई गुण

ाधु रा करन्तो, भ तार ाप महन्तो रे ॥६॥ बकरा हर्ष्या ीव बचिया विशेष, यांरे दियो उपदेश रे। ०। ज्ञानादि ि ऊं ाई घट आया, पिण बकरा तो मू न पाया रे ॥ ७ ॥ कहे साई दोनूं कर जोड़, ौ बकरा रे ोर रे। ०। हो तो नीलो चारो यांने चराऊं, पाछै चो पाणी त्यांने पाऊं रे ॥ ८ ॥ ाप हो तो एवर में उछेरूं, हो तो अमरिया रेरू रे। । ाप हो तो सूंपूं आपने णी, पाइ ो धोवण उन्हो पाणी रे ॥ ६ ॥ तुम सूको चारो निरजो व तेरो, एवर ाधां रो उछेरो रे। ०। ाधु कहे सूं खरा पालीजे, जाव्रता ूंसारी कीजे रे ॥ सम० ॥ १० ॥ सूंसारी एम भलावण देवै, ब रां री मू न वेवै रे। स ०। उपदेश देवै जो बकरा बचावण तो बकरां री देन भ ावण रे ॥ ११ ॥ मभयो कसाई सखर शिव ाई, इणारो मुनि ने दलाली आई रे। ०। तेहिज धम ाधु ने ोय। पिण बकरां रो धर्म्म न कोय रे ॥ १२ ॥ साई ज्ञानी रो ज्ञानी कहायो, पिण बकरा तो ज्ञान न ो रे। ०। साई मिथ्याती रो म ती हिये, शुद्ध तत्व बकरा न दहिये रे ॥ १३ ॥ हिं रो दयावान हुवो साई,

दिल रां रे दया न ाई रे। तिरियो कसाई बकरां नहीं तिरिया, दुर्गति नहिं डरिया रे॥ १४॥ साई तिरियो ते धरम इण काज, तार महामुनि राज रे। म०। तिरण तारण ाई रा तपासो, वारु हिया में त्रि सो रे॥ १५॥ तस्कर नो दूजो दृष्टन्त तेह, सांभलजो ससनेह रे। म०। किणही सेठ्ठी नी हाटे किण बार, उतरि ागार रे सम०॥ १६॥ कर रात्रि समै तिणवार, खोल्या है य किम रे। म०। तब मुनिवर कहै जागी ने ताम, कुण हो ाया किण काम रे॥ १७॥ कहै तस्कर म्हे तो चोर ाया, इहां चोरी करण ने रे। सम०। सहस रुपयां री थेली मेली सेठ, निडर लेजावसां नेठ रे॥ १८॥ तब ाधु उपदेश देवै तिण वार, कह्या चोरी रा फल दुः कार रे। स०। ागे नरक निगोद ना दुःख अधिकाया, भिन्न भि भेद बताया रे॥ १९॥ धन तो न्यातीला सह मिल ासी, पर भव दुः तूं पासी रे। सम०। रूड़ो उपदेश देई मुनिराया, त्याग चोरी कराया रे॥ २०॥ तस्कर कहै मुझ डु । ने ो, विषम, करम ो रे। सम०। बारु विविध ा करत विख्यात, प्रगट थयो प्रभात रे॥ २१॥ इतले दूकान

तणो धणी आयो, ज्ञान नहीं घट माह्यो रे । सम० । पेढ़ी ने नमस्कार करि प्रसिद्धो, कांयक लटको साधु ने ही कीधो रे ॥ २२ ॥ तस्कर ने पूछा करी तिवार, कुण हो खोल्या किण द्वार रे । सम० । तस्कर बोल्या म्हें चोर छां ताम, अब तो त्यागे दीधी आम रे ॥ २३ ॥ हुण्डी वटाय ने रुपया हजार, थेली मांहे मेहली थें तिवार रे । सम० । ो म्हे सांझे देखता था सोय, आया लेवण अवलोय रे ॥ २४ ॥ साधां उपदेश देई समझाया, चोरी ना लखण छोड़ाया रे । सम० । साधां रो भलो होयजो कारज सार्या, तुरत डूवता ने तार्या रे ॥ २५ ॥ मेसरी सुण नें हर्ष्यो मन माह्यो, पड़ियो साधां रे पायो रे । सम० । आप म्हारी हाट भलांई उतरिया, सकल मनोरथ सरिया रे ॥ २६ ॥ थेली म्हारो आप राखी थिर थापी, प्रत्यक्ष लेजावता चोर पापी रे । सम० । छिवड़ां लेजावता रुपया हजार, निपट हुन्तो निराधार रे ॥ २७ ॥ चार पुत्र मुझ चतुर विचारा, कर्म्मे वश रहिता कुवारा रे । सम० । सुत चारूंई परणावसूं सार, ओ आप तणो उपगार रे ॥ २८ ॥ इम कहै मेसरी वयण अथागो, ऋषजी तणो तो न रागो रे । सम० । धन राखण उपदेश म धार, ते तो तस्कर तारणहार

रे ॥ २६ ॥ कसांई समझयां बकरा कुशले कह्याजो, तस्कर समझयां धन रो धणी राजी रे ।सम०। कसाई चोर तारण ऋष कामी, धन बकरा राखण नहीं धामी रे ॥ ३० ॥ तीजो दृष्टन्त कहूं तन्त सार, एक पुरुष लंपट अधिकार रे । सम० । सो पुरुष परनारी नो सेवणहार, अति ही बंधाणी पीत अपार रे ॥३१॥ ते लंपट आयो मुनि तणे पाय, साधां दियो समझाय रे । सम० पर स्त्री नो पाप सुणी भय पायो, अधिक वैरागज आयो रे ॥ ३२ ॥ ते त्याग जाव जीव कीधा ते ठाम, गावै मुनि ना गण ग्राम रे । म० ।प मोने डूब ने उबा ग्रो, निकुच बिसन थी निवा ग्रो रे ॥ ३३ ॥ ील ।दरियो ययो तिण नार, उपनो द्वेष अपार रे । म० । उणने हे म्हें धा ग्रो इकतार, धुरही थी थां पर धार रे ॥ ३४ ॥ काम औरां नहीं मु कोय, इसड़ी री व- लोय रे । ० । कहतो म्हारो क ग्रो मानले तास, म्हां रो ग्रहवा रे ॥ ३५ ॥ ह्यो न मानो तो कूवै पड़सूं मोत मोते मरसूं रे । म० । जब ते कहे मोने मिलिया जिहाज, प्रत्यक्ष भव-दधि पां रे ॥ ३६ ॥ त्यां परनारो नो पाप बतायो, म्हे त्याग किया मन लायो रे । सम० । तिण म्हारे थासूं

मूल न तार, करे अनेक प्रकार रे ॥ ३७ ॥ इम सुण स्त्री कुवै पड़ी आय, तिण रो पाप साधू ने न थाय रे । सम० । समझ्यो कसाई वकरा वच्या सोय, तस्कर समझ्यां रह्यो धन जोय रे ॥ ३८ ॥ नर लंपट समझ्यां कूवै पड़ी नारो, चतुर हिंया में विचारो रे । सम० । तस्कर कसाई लंपट ने तारण, साधां उपदेश दियो सुधारण रे ॥ सम० ॥ ३९ ॥ ए तीनूं तिरिया साधु तारणहार, त्यांरो धर्म्म साधां ने उदार रे ।सम०। मुक्ति मारग यां तीनां रे वधाया, घणा जामण मरण मिटाया रे ॥ ४० ॥ वकरा वच्या धणी रे धन रहियो, तिण रो धर्म्म साधु रे न कहियो रे । स० । नार कुवे पड़ी तिण रो न पापो, अदल विचारो आपो रे ॥४१॥ केई अज्ञानी कहै भूला भरमो, जीव धन रह्यो तिण रो है धर्म्मो रे । स० । उणारी सरधा रे लेखे इम थापो, प्रत्यक्ष नार मुआरो है पापो रे ॥ ४२ ॥ नार मुआरो पाप दिल नाणै, जीव वचियां रो धर्म्म कांय जाणै रे । सम० । वले धन रह्यां रो धर्म्म कांय धारो, बुद्धिवन्त न्याय विचारो रे ॥ ४३ ॥ भिक्खु स्वाम इम भेद वताया, असल न्याय ओलखाया रे । सम० । कसाई तस्कर लंपट केरो, भिक्खु दृष्टन्त दियो भलेरो रे ॥४४॥ ऐसा भिक्खु ऋष महा अवतारी, त्यां श्रद्धा

शोधी तन्त सारी रे। स०। ज्यां पुरुषां री जे प्रतीत
करसी, त्यां रो जीवतव जन्म सुधरसी रे ॥ ४५ ॥
ऐ भिक्ष याद मोय, हर्ष हिये ति होय रे
। ०। स्मरण प तणो नि धूं, भिक्खु पारश
चो म्हे धूं रे ॥ ४६ ॥ सुर-गिर प्रत
धीरा, मोने मिलि मोल हीरा रे। ०।
पंचम रा में कियो , री फैली है
सु रे ॥ ४७ ॥ दोय ी ढाले दृष्टन्त, वर्णन
बहु विरतन्त रे। ०। स्वाम भिक्खु ओ गो
विशेष, तिण म्हे पिण आख्यो सु शेष रे ॥ ४८ ॥

दोहा

किणहिक भिक्खु ने कह्यो, जीव बच्या ते ।
दया कहीजे तेहने, जीवण दया पिछाण ॥ १ ॥
भिक्खु कहै कीड़ी भणी, कीड़ी जाणै कोय ।
कहीजे तेहने, के कीड़ी होय ॥ २ ॥
तब ते कहै कीड़ी भणी, जे कोय कीड़ी ।
ज्ञान तिजे तेहने, पिण कीड़ी नहिं ॥ ३ ॥
वलि भिक्खु कहै कीड़ी भणी, कीड़ी सरधै कोय ।
समकित कहिजे तेहने, के कीड़ी समकित होय ॥ ४ ॥
ते कहै कीड़ी भणी, कीड़ी धे ।
ते सही, पिण ी नहिं समकीत ॥५॥
त्याग कीड़ी हणवा तणां, दया तेह दीपाय ।
के कीड़ी रही तिका दया, भिक्खु पूछी वाय ॥६॥

तब ते कहै कीड़ी रही, तिका दया कहिवाय।
खोटी सरधा थापवा, बोल्यो झूठ बणाय ॥ ७ ॥
भिक्खु कहै पवने करी, कीड़ी उड़ गई ताहि।
तुझ लेखे दया उड़ गई, निरमल निरखो न्याय ॥ ८ ॥
जर उ कहै विचारने, कीड़ी हणवा रा त्याग कियाह।
दया तेहिज दीसै खरी, पिण कीड़ी रही न दयाह ॥ ६ ॥

॥ ढाल ३३ मी ॥

(कर्म भुगत्यांइज छुटिये पदेशी)

ब ता भिक्खु बोलिया, कीड़ी मारण रा पच-
।ण । रे। तेहिज दया साची कही, वारु सुणो
इ ण रे, जोयजो रे बुद्धि भिक्खु तणी ॥१॥
रूड़ी दया निज घट में रही, के कीड़ी पास कहाय
। रे। तब ते कहे पोता कने, कीड़ी पास न
ांथ ।० ॥२॥ पूज कहै घट में दया, कीड़ी पै दया
नहिं कांय ।०। किणरा जतन रणा कहो, साचो
जाव सुहाय ।० ॥ ३ ॥ करणा जतन दया तणा
के कीड़ी रा य कराय ला०। उ कहै यत दया
तणा, इम साच बोली आयो ठाय ॥४॥ त्रिविध त्याग
हणवा तणा, दया संबर रूप देख ला०। त्याग
बिना ही हणै नहीं, सम्वर निर्जरा संपेख ला० ॥ ५ ॥
इमज छकाय हणै नहीं, दया तेहिज दीपाय ला०।

जगत हणो जीवां भणी, निज पोतारी दया न जाय
०॥६॥ भारी बुद्धि भिक्खु तणी, खरी सिद्धन्त
संभा ला०। य मिलाया निरम ।, मांज्या म
भयाल ला० ॥ ७ ॥ किणहिक इम पूछा री, महा
मोटो मुनिराय ०। अति ही थाको उ ड़ में,
च ण शक्ति न कांय ० ॥ ८ ॥ हजेई गाड़ो
ंवतो, तिण गाडा ऊपर बैसाण ला०। गा मांहे
ायो ही, तेहने ई थयो जाण ॥ ९ ॥ भिक्खु
है ड़ो नहीं, पूंणिया वत पे ०। गधै
चढ़ाय ायो गाम में, तिणमें स्यूं थयो तु
ले ० ॥ १० ॥ तब उ बोल्यो तड़क ने, गधारी
क्यूं करो त ०। म है धु भणी, दोनूं
कलर देखात ला० ॥ ११ ॥ गाड़े बेसाणे ायो
गाम में, थे धर्म्म तणी करो थाप ०। तो गधै
बैसाणयां ही धर्म्म है, पाप छै तो दोयां में ही प
ला० ॥१२॥ उत्पत्तिया बुद्धि परी, निर चारित
नीत ला०। सरधा शुद्ध ोधी सही, ब स्वा
बहोत ०॥ १३ ॥ णी ागल पाविचां, केई
पाखण्डी कहे पुन्य ला०। केयक मिश्र कहै तिहां,
ते दोनूंई सरधा जबून ला० ॥ १४ ॥ पुण्यवाला
कहै पूजने, सुणो भी णजी बात ला०। महा ओटी

सरधा मिथ्थ री, किहांई मेल न खात ला० ॥ १५ ॥
भिक्खु स्वामी इम भणे, किणरी फूटी एक ला० ।
किणरो दोय फूटी सही, थारु करलो विवेक ॥ १६ ॥
मिथ्थ कहे छे मानवी, त्यांरी फूटी एक ला० पुन
परूपे पाथरो, दोनूं फूटी देख ॥ १७ ॥ जाब दियो
इम जुगत सूं. अहो अहो बुद्धि अनूप ला० । अहो
अहो खिम्या आपरी, चित्त चरचा हद चूंप ला०
॥१८॥ तुम चिन्तामणि सुरतरु, पंचमें कियो प्रकाश
ला० । आशा पूरण आप छो, थारु तुम्म विसवास
ला० ॥ १९ ॥ तन्त ढाल तेतीसमी, भिक्खु गुण
भण्डार । अन्तर्यामी मांहरा, सुख सम्पति दातार
ला० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

पचावने वर्ष पूजजी, शहर कांकड़ोली सार ।
सेठ्योंवांरी पोल में, ऊतरिया तिण वार ॥ १ ॥
प्रत्यक्ष थारी पोलरा, चड़ी हुन्ती जिण वार ।
आप भिक्खु रहितां थकां, एक दिवस अवधार ॥ २ ॥
थारी खोली थारणें, दिशा जायवा देख ।
निसरिया भिक्खु निशा, पूछे हेम सपेख ॥ ३ ॥
स्वामी थारी खोलण तणो, नहीं कांई अटकाव ।
तब भिक्खु बोल्या तुरत, प्रत्यक्ष ते प्रस्ताव ॥ ४ ॥
पाली शहर तणो प्रत्यक्ष, नाम चौथ जी म्हाल ।
दर्शण करवा आवियो, ए देखे इण काल ॥ ५ ॥

अति शंकिलो एह छै, पिण इण वातरी ताम ।
शंका इणरे नां पड़ी, केम पड़ी तुझ आम ॥ ६ ॥
हेम कहै म्हारे हियै, कांई शंका रो काम ।
पूछण रूप म्हे पूछियो, नहिं शंका रो नाम ॥ ७ ॥
पूज कहै पूछे इसी, इणरो नहिं अटकाव ।
म ब हुवे जो पहनो, म्हें खोलां किण न्याव ॥ ८ ॥
हेम सुणी जाण्यो हिये, पि ाड़ियो खोलाय ।
आहार लियां में दोष नहीं, खोल्यां दोष किम थाय ॥९॥

३४

(सुणजो नरनाथ पदेशी)

स्वाम भिक्खुरा न्त सुहाया । भव्य उ जीवां मन या, णजो चित्त शांति भिक्खुना री दृष्टन्त ॥ १ ॥ ब धा बागरे ब , शुद्ध भविजन रण सारु । णजो सुखदाया मीना दृष्टन्त सुहाया ॥ २ ॥ असल न्याय भिन्न २ ओलखाया, प्रभु पन्थ भिक्खु हद पाया ॥ ३ ॥ भेषधारी सरधा हीन भयाला, दियो दृष्टन्त पूज दयाला ॥४॥ समकत हीण जे अधिक असार, यांरो असल नहीं आचार ॥ ५ ॥ थोथा चणारी भखारी थी एक, साबतो चणो मूल म पेख ॥ ६ ॥ ऊंदरा रड़बड़ कीधी आखी रात, एक कण पिण नायो हाथ ॥ ७ ॥ सांग धार्यां मांहे समकत नांय, पड़े ऊंदर सम नर

पाय ॥ ८ ॥ कहो ᠆ध श्रावक त्यांने केम कहाय, ए तो दोनूं सरीखा.देखाय ॥ ६ ॥ समकित रहित दोनूंई तन्त, दियो स्वाम भिक्खु दृष्टन्त ॥ १० ॥ कोयलां री तो राव अतिकाली; काला वासण में रांधी राली ॥ ११ ॥ मावस नी रात्रि आंधा जीमण वा ।, परुसण वालाई आंधा पयाला ॥ १२ ॥ जीमतां बोलै खुंखारा करता, कालो कुंवो टालजो मतिवन्ता ॥ १३ ॥ कहै खबरदार होय जीमजो सोय, रखे आय जायला कालो कोय ॥ १४ ॥ मूढ़ इतरो नहीं जाणै समेलो, कालोहिज कालो हुओ भेलो ॥ १५ ॥ ज्यूं रधा आचार रो नहीं ठिकाण, ह गलो मिलियो सरीखो घाण ॥ १६ ॥ साध श्रावक पणारो अंश नहीं सारो, संवर लेखे दोयां रे अन्धारो ॥ १७ ॥ न्याय री वात नहीं शुद्ध नीत, वले बोले वचन विपरीत॥१८॥ व पात्रा अधि राखे विशेष, ।धा कर्म्मादि दोष अनेक॥१६॥ वले कहै भीखण जी काढ़ो इण रो तार, शुद्ध स्वाम बोल्या सुखकार ॥ २० ॥ तब पूज कहै काढ़े तार कांई, थाने डांडा ही सूझे नाहीं ॥ २१ ॥ सबल ।धाकर्मी आदि न सूझै, कहो नान्हा दोष किम बूझे ॥ २२ ॥ दोषरी थाप थांरे दिन रैणो, कठिण काम ..रधारो तो

हणो ॥ २३ ॥ यरे बंग घरटी मांड़ी बाई, पीसती
जावै ज्यूं उ ो ई ॥ २४ ॥ आखी रात्री पीस
कणी में ो, एहवो दृष्टन्त भिक्खु उ ो
॥ २५ ॥ ज्यूं दोष लगाय ने डंड न लेवै, कुमति दोष
री थाप करेवै ॥ २६ ॥ क्यांरे क्यांरे क्यूंही नहीं रहे
कांई, देश सर्व दृष्टन्त दे ाई ॥ २७ ॥ ऐसा भिक्खु
ष ाप उजागर, शरणा . महा द्धि ागर
॥ २८ ॥ उत्पत्ति बुद्धि विक अमामी, धुर जिन
ा परमति मी ॥ २९ ॥ जिन आगन्या मांहैं
ध यो, आज्ञा रै अशुभ हु आयो ॥ ३० ॥
स ा न्याय मेल सूत्र देख, ह ह भि खु बुद्धि
विशेष ॥ ३१ ॥ याद ायां मन स , रस
ुपि तूं षिराय ॥ ३२ ॥ स्यूं उ ा तुझने
क सार, अजिणा जिण रसा उदार ॥ ३३ ॥ उव-
वाई में उप एह अनूप, स र थिवरां ने दीधो
सद्रुप ॥ ३४ ॥ दि ज्यूं काढी धर्म्म ादि,
री उपजाई आप धि ॥ ३५ ॥ बारु रण
ापरो विशाल, म्हारे तूंहिज दीन दयाल ॥ ३६ ॥
स्वाम भिक्खु गुण गावत समरियो, म्हारो हिवड़ो
हरष ू भरियो। चौती ी ल भिक ु चित्त
चा , बारु पर नन्द वर या ॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

कालवादी करली घणी, नहिं समकित शुद्ध नींव ।
सिद्धां में पावै नहीं, आखै तास अजीव ॥ १ ॥
वखतरामजी नाम तसु, पुर माहें पहिचाण ।
कुकला कुबुद्धिज केलवी, विहार करि गया जाण ॥ २ ॥
इतलै भिक्खु आविया, चरचा करत पिछाण ।
भेव भाट मुनि ने कहै, वगतांजीरी वाण ॥ ३ ॥
कालवादी इसड़ी कहै, अति घन वात अतीव ।
भीखण जी गाथा मुझे, कहै एकलड़ो जीव ॥ ४ ॥

ते गाथा ।

एकलड़ो जीव खासी गोता, जद आड़ा नहिं आवै बेटा पोता ।
नरक माहें आतां लागो, पायो मनुष जमारो मत हारो ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

इण विध भीखणजी कहै, गाथा में इक जीव ।
वलि नव तत्व में पांच कहै विरुद्ध वात अतीव ॥ ५ ॥
जो पांच जीव नव तत्व में, तो कहिणो पांचलड़ो जीव ।
एकलड़ो ते किम कहै, इम पूछा तिण कीव ॥ ६ ॥
पूज कहै तस पूछणो, सिद्धां में सुखकार ।
कहो आत्मा केतली, तव कालवादी कहै चार ॥ ७ ॥
फिर त्यांनें इम पूछणो, ते च्यारूं जीव के नांहि ।
तब कहै च्यारूं जीव है, चार जीव तस थाय ॥ ८ ॥
चौलड़ो जीव त्यांहि कह्यो, मुझ लड़ अधिको एक ।
सांभल ने ते समभियो, भेव्रो भाट विशेष ॥ ९ ॥

॥ ढाल ३५ मी ॥

(राजा दशरथ दीपंता रे ए देशी)

भीखणजी पधारिया रे, देश ढूंढ़ार दीपायो रे। अति घणा श्रावगी तिया रे, चरचा करण चित्त चाह्यो रे॥ भारी बुद्धि भिक्खु तणी रे॥ १॥ स्वाम भणी कहै श्रावगी रे, नग्न मुद्रा मुनि नागा रे। तार मात्र व न राखणो रे, राखै ते परीषह थी भागा रे॥ तन्त दृष्टन्त भिक्खु तणा रे ॥२॥ वस्त्र राखो शीत टालवा रे, तो भागा शीत परीषह थी ताह्यो रे। तिण सूं वस्त्र नहिं राखणो रे, जद पूज बतावै न्यायो रे॥ ३॥ स्वाम कहै कितरा सही रे, परीषह भेद प्रकाशो रे। ते कहै परीषह बावीस छै रे, वलि पूछै पूज विमासो रे॥ ४॥ कहो प्रथम परीषहो कैसो रे, ते कहे क्षुध्या रो ताह्यो रे। पूज कहै थारा मुनि रे, आहार करै नाह्यो रे ॥ ५॥ श्रावगी कहै करे सही रे, इकटंक आहार ते जागां रे। पूज कहै तुम लेखै मुनि रे, प्रथम परीषह थी भागा रे॥ ६॥ ते कहै क्षुध्या लागां सही रे, आहार करै अणगारो रे। स्वाम कहे सो लागां सही रे, वस्त्र म्हे राखां विचारो रे॥ ७॥ पूज वलि पूछा करो रे, प्रकट तुम मुनि पहिछाणी रे। पाणी पीवै के पीवै नहीं रे, उत्तर

आधो सुजाणी रे ॥ ८ ॥ श्रावगी कहै पीवै सही रे, इकटंक उदक ते त्यागां रे। स्वाम कहे तुझ लेखै तिके रे, दूजा परीषह थी भागा रे ॥ ९ ॥ ते कहै तृषा लागां छतां रे, उदक पिये अणगारो रे। स्वाम कहै सी टालिया रे, वस्त्र ओढां म्हे विचारो रे ॥१०॥ भूख लागां अन्न भोगवै रे, प्यास लागां पिये पाणी रे। इम निर्दोषपण आचर्यां रे, न भागे परीषह थी नाणी रे ॥ ११ ॥ तिम शीत मंसादिक टालवा रे, मूर्च्छा रहित मुनिरायो रे। व मानोपेत वावरै रे, ते परीषह थी भागे किण न्यायो रे ॥ १२ ॥ इत्या-दिक उत्पात्त सूं रे, उत्तर दीधा आमामो रे। स्वाम गुणा रा सागरु रे ऊंडी बुद्धि अभिरामो रे ॥ १३ ॥ एक दिवस बहु आविया रे, श्रावगी स्वामी पासो रे, कहे वस्त्र न राखो तो तुम तणी रे, वारु करणी विमासो रे, ॥ १४ ॥ स्वाम कहै श्वेताम्बर शास्त्र थी रे, घर छोड़ थया अणगारो रे। तिण माहें तीन पछेवड़ी रे, चोल पटादि कह्या सुविचारो रे ॥ १५ ॥ तिण कारण राखां तिके रे, आसता तुझ शा नी आयां रे। नग्न होय जासां वस्त्र न राखने रे, प्रतीत दिगम्बर नी पायां रे ॥१६॥ जाव दिया अति जुगत सूं रे, बुद्धिवन्त हर्षे विशेषो रे। न्याय नीत थारे

निरमली रे, पत्त रहित संपेखो रे, ॥ १७ ॥ वाह वाह भिक्खु मुनिवरु रे, अन्तर्यामी आपो रे। दीपक तूं इण काल में रे, जपूं तुमारो जापो रे ॥ १८ ॥ पँतीसमी ढाल परवरी रे, चरचा दिगम्बर नी छाणी रे। भिक्खु भजन सूं भय मिटै रे, जय ज़श सुख हद ज़ाणी रे ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

दया धर्म्म अति दीपतो, श्री जिन आण सहीत।
भिखु स्वाम भली परे, पवर धरो अति पीत ॥ १ ॥
केई हिंस्या धर्मी कहै, दया दया पुकारो कांय।
दया रांड लोटे पड़ी, रही रे मांयि ॥ २ ॥
भिखु श्र र भाखे भली, दया मात दीपाय।
उतराध्यन चौवीस में, कहि आठ न मांय ॥ ३ ॥
किण सेठ श्राड पूरो कियो, स्त्री रही सोय।
पूत है ते सही, यत्न करे ते जोय ॥ ४ ॥
कपूत है ते ने, मद्दे विकराल।
रंडकार नी गाल दे, बोले आप पंपाल ॥ ५ ॥
धणी दया ना दीपता, महावीर महाराज।
ते तो मोक्ष सिधाविया, कीधा आतम काज ॥ ६ ॥
श्रावक साधां सपूत ते, दया इम जाण।
यत्न करे अति जुगत सूं, विरई न वदे वाण ॥ ७ ॥
प्रगटया थां जिसा, बोलावो कहि रांड।
दया मात ने गाल दे, ते भव २ होवै भांड ॥ ८ ॥
जिन मत एम जमावता, ण्ड मत परिहार।
स्वाम रवि जिहां संचरया, तिमिर हरण इकतार ॥९॥

॥ ढाल ३६ मीं ॥

(जोगीड़ा कपट करै छै परदेशी)

किणहिक भिक्खुनें कह्यो रे, थें जावो जिण गांम रे मांयि । धसका पड़े लोकां तणे, तिण रो कांई कारण कहिवाय ॥ भिक्खु भवतारक भारी रे, आप प्रगट्या अवतारी रे । उत्पत्तिया बुद्धि अधिकारी रे, दृष्टन्त दिया सुविचारी रे ॥ १ ॥ स्वाम कहे तुम्हे सांभलो रे, गारडु आवे गाम । डाकणियां ने काढण भणी, जद कहो डरै कुण ताम ॥ २ ॥ प्रभाते नीला कांटा मर्फे रे, बालस्यां डाकणियां ने बोलाय । तो धसका पड़े डाकणियां तणे, तथा न्यातीलां रे पड़े ताहि ॥ ३ ॥ दूजा तो लोक राजी हुवे रे, त्यांरे तो चिन्त न काय । जाणें उपद्रव्य शहर तणो मिटै तिण सूं और तो हर्षित थाय ॥ ४ ॥ ज्यूं गाम में साध आयां छतां रे, भेषधार्‍यां रे धसका पड़न्त । के त्यांरा श्रावकां रे धसका पड़ै, भारी कर्म्मा तो इम भिड़कन्त ॥ ५ ॥ वारु सरधा आचार बताय ने रे, देसी म्हांनें ओलखाय । त्यांरे धसका पड़ै तिण कारणें, हलुकर्म्मा तो मन हरषाय ॥ ६ ॥ उत्तम मन इम चिन्तवे रे, सुणसां साधांरा वखाण । दान सुपात्रे देई करी, करस्यां आतम तणा किल्याण ॥ ७ ॥

गुरां रा पक्षपाती भणी रे सन्त नि न सुहाय। दृष्टन्त स्वाम दियो इ ो। ते तो सांभ जो सु दाय ॥ ८ ॥ जुरवालो गयो जीमवा रे, जीमणवार में जाण। पकवान तो कड़वा घणा, बद बद कहै लोकां ने बाण ॥९॥ लोक कहै लागै घणा रे, प्रगट मिठा पकवान। तुझ शरीर में ताव है, जिण कड़वा लागै छै जान ॥ १० ॥ ज्यूं मिथ्यात रोग जाड़ो हुवै रे, सन्त ता न सुहाय। हलुकर्मी हिये हर्षता, चित्त में मुनि दशण चाहि ॥ ११ ॥ मूख मरता रोटी वासते रे, सांग साधू नो धारन्त। त्यांने कहै चारित चोखो पालजो, जद स्वाम दियो दृष्टन्त ॥ १२ ॥ बलवन्त बाले बांधने रे, तिणने कहै सिर नाम। ती माता तेजरा तोड़जे, ते कांई तोड़े तेजरा ताम ॥ १३ ॥ ज्यूं भेष पहिरे रोटी कारणे रे, तेंहने कहो चोखो चारित्र पाल। ते कठिन चारित्र पाले किण विधे, दुकर कह्यो है दीन दयाल ॥१४॥ चो ा ोटा गुरु ऊपरै रे, दियो ना नो दृष्टन्त। काठ की नाव साजी कही, एक फूटी ना छिद्रान्त ॥ १५ ॥ तीजो नाव पत्थर तणी रे, उपनय हिये अवधार। शुद्ध सन्त-साजी नाव सारिखा, तिके आप तिरे पर तार ॥ १६ ॥ सांगधारी फूटी नावा सारिखा रे, आप

डुबे औरां डबोय। पत्थर नावा जि । । पाखंडी, जे तीन सौ ते ठ जोय ॥१७॥ उत्तम ता न आदरै रे, धास्या हुवै तो छोड़णां सुलभ। ंगधारी फूटी नावा सारिखा, त्यांने छोड़णा घणां दु भ ॥ १८ ॥ इम भिक्खु ओलखाविया रे, पा शिडयां ने पिछाण। सूं बुद्धि कहिये र मनो बारु, किहां ग रूं बखाण ॥१६॥ ऊंडी तुझ लोचना रे, तीरथ बच्छ ताम। शासण नायक स्वा ने, करूं रम्बार सलाम ॥२०॥ तन्त ढाल षट ती मी रे, दाख्या स्वाम ह न्त। भिक्खु भजन थी भय भि टै, रु जय ज । उपजन्त ॥ २१ ॥

दोहा ॥

किणहिक भिखु ने कह्यो, ढोला वाला ताहि।
शीत उष्ण अति कष्ट सहै, कठण लोच कराय ॥ १ ॥
तप छठ अठमादिक तपे, सखरी करणी सोय।
यूंहो जासी यां तणी, पहना फल अवलोय ॥ २ ॥
स्वाम कहै इक सेठ रे, पड़्यो देवालो पेख।
तुरत लाख रुपयां तणो, बिगड़ी बात विशेष ॥ ३ ॥
एक पइसा तणो, आण्यो तेल तिवार।
पइसो तसु दीधो परहो, तो पइसा रो साहुकार ॥४॥
रुपया रा गहुं आणने, रुपयो पाछो दीध।
तो साहुकार रुपया तणो, प्रत्यक्ष ते प्रसिद्ध ॥ ५ ॥

छम पइसा रुपया तणो, साहुकार अवधार।
पिण देवालो लाख नो, तेहनो नहीं साहुकार ॥ ६ ॥
ज्यूं पंच महाव्रत पचखने, आधा कर्मी आदि।
थाप निरन्तर दोषनी, मेट दोषी मर्याद ॥ ७ ॥
ओ देवालो अति घणो, लोच तपादिक कष्ट।
तेह थी किण विध उतरे साध पणारो भिष्ट ॥ ८ ॥
मास खमणादिक पचखने, शुद्ध पाल्यां तसु सहुकार।
पिण महाव्रत भांग्यां तेहनो, साहुकार मत धार ॥९॥

॥ ढाल ३७ मी ॥

(विछिया नी पदेशी)

किणहिक स्वाम भणी कह्यो। सांगधारी रे साधू रो सांग रे, उन्हो पाणी धोवण ए पिण आचरै॥ मान मूकी रोटी ल्यावे मांग रे, तुम्हें सुणज्यो दृष्टन्त स्वामी तणा ॥ १ ॥ वर्षा वर्षे लोच करावता, शीत तापादि सहे साक्षात रे। विहार नव कलपी विचरता, तो ए क्यूं नहीं साध कहात रे ॥ २ ॥ स्वाम कहै तुम्हें सांभलो, थिर चारित्र इस किम थाय रे। जेहवी बणी बणाई ब्राह्मणी, तिणरा साथी ए पिण कहिय रे ॥ ३ ॥ कुण बणी बणाई ब्राह्मणी, तब स्वाम कहे सुविशेष रे। मेरां रो इक गाम घाटा मझे, उठे उत्तम घर नहीं एक रे ॥ ४ ॥ महाजन आवै सो दुख पावै घणा, जब कह्यो मेरा ने जाम रे। अठै

उत्तम घर नहीं एक ही, तिण सूं दुख पावां छां ताम
रे ॥ ५ ॥ णी लागत देवांळां थां भणी, उत्तम
घर तिण इहां अवधार रे। णी रोटी तणी अब-
खाई पड़े, शुद्ध राखो उत्तम घर र रे ॥ ६ ॥ जद
मेरां शहर माहें जाय ने, महाजनां ने क ो मन
ल्याय रे। उत्तम बसो म्हांरा गाम आयने, तिणरो
ऊपर राखसां ताय रे ॥ ७ ॥ इम कह्यो पिण कोई
यो नहीं, एक ढेढां रो गुरु मुओ आम रे। तिण
री स्त्री गुरुड़ो तदा, तिणने मेरां णी लिण ठाम
रे ॥ ८ ॥ बणाई मेरां लिख ने ब्राह्मणी, ब्राह्मणी
जिसा वस्त्र पहराय रे। जागां कराय धवल राखो
जिहां, तुलसी रो थाणो रोप्यो ताहि रे ॥ ९ ॥ दोय
रुपयां रा गेहूं आणे दिया, अधेली रा मूंग दिया
आण रे। एक रुपया तणो घृत आपियो, वदे मेरा
तेहने इम वाण रे ॥ १० ॥ पइसा लेई महाजन रा
दासां थकी, आवें ज्यांने रोटी कर आप रे। वणे
पूछ्यां बतावजे ब्राह्मणी, थिर जात फलाणी थाप
रे ॥ ११ ॥ जाता आता महाजन आवें जिके, पूछे
घर उत्तम पहिचाण रे। ब्राह्मणी रो घर मेरा बता-
ा, इम ल कितोयक जाण रे ॥ १२ ॥ इतरे
चार व्योपारी ाविया, णा कोसां रा थाका

ते गाम रे। आय पूछ्यो मेरा ने इण तरह, उत्तम घर बताओ आम रे ॥ १३ ॥ तब मेरा कहै जावो तुम्हे. तिण ब्राह्मणी रे घर तास रे। जद आया व्यापारी चारूं जणा, प्रगट वचन कहे तिण पास रे ॥ १४ ॥ बाई रोटियां कर रूड़ी रीत सूं, झट घाल थाका आया जाण रे। जद इण गोहां री रोट्यां जाड़ी करी, सुरहो घृत घाल्यो सुबिहाण रे ॥ १५ ॥ कीधी दाल तिणमें घाली काचरयां, जीमवा लागा चारूंई जाण रे। करड़ो मूख रोट्यां पिण करकड़ी, बणिक जीमता करै बखाण रे ॥ १६ ॥ रांधण देखी फलाणा गामरी, अमकड़िया नगर नी अवलोय रे। रांधणा देखो बड़ा बड़ा शहर नी, इसड़ी चतुराई नहिं देखी कोय रे ॥ १७ ॥ कहै देखो रे दाल किसी करी, अति चोखी है स्वाद अत्यन्त रे। माहें काचरियां किसी स्वाद है, घणी करै प्रशंसा जीमन्त रे ॥ १८ जद आ बोली बीरां बात सांभलो तीखण मिलो हुन्ती ताम रे। खबर पड़ती काचरियां रे स्वाद री, पिण ते मिली नहिं अभिराम रे ॥ १६ ॥ जद यां पूछ्यो तीखण कहै केहने, तब आ कहै तीखण छूरी ताम रे। काचरियां बनावा कारणे, छूरी मिली नहीं अभिराम रे ॥ २० ॥ तब यां पूछयो छूरी तो ने ना

मिलो, तो किण सूं वनारी तेह रे। आ कहे दातां सूं वनार २ ने, इण दाल माहें न्हाखी एह रे ॥ २१ ॥ तब ये बोल्या तड़कने हे पापणी म्हाने भिष्ट किया ते जिमाय रे। इम कहिने लागा थाली पटकवा, तब आ बोली उतावलो ।। रे ॥ २२ ॥ वीरां थाली भागजो मतो, अमकड़िया डूंमरी आणो मांग रे। जद ए बोल्या हे पापणी! तूं कुण जातरी कुण तुझ सांग रे ॥ २३ ॥ जद आ बोली वीरां बात सांभलो, बणी बणाई ब्राह्मणी छूं ताहि रे। असल जातरी तो गुरुड़ी अछूं, मेरा ब्राह्मणी दीधी बणाय रे ॥ २४ ॥ धुर सूं बात सारी कही मांड़ने, सांभल ने च्यारूंई पछतात रे। भिक्खु कहै साथी ब्राह्मणी तणा, सांगधारो सर्व ।त्यात रे ॥ २५ ॥ उन्हो पाणी धोवण नित्य आचरै, पिण समकित चारित्र नहीं काय रे। तिण सूं बणी बणाई ब्राह्मणी, तिण रा । ।थी कह्या इण न्याय रे ॥ २६ ॥ दृष्टन्त स्वाम इसो दियो, शुद्ध हेतु मिलाया सार रे। भारी कर्म्मा सुण द्वेष माहें भरै, चित्त पामै उत्तम चिमर ।र रे ॥ २७ ॥ स्वाम सावद्य निर्वद्य शोधिया, ब्रत अब्रत जूआ वताय रे। आज्ञा अण आगन्या ओलखाय ने, दीधी दान दया दीपाय रे ॥ २८ ॥ भिक्खु स्वाम प्रगटिया

भरत में, आप कीधो अधिक उद्योत रे। ऐसो उपगारी कुण इण काल में, जिन ज्यूं घण घट घालो ज़ोत रे॥ २९॥ इसा उपगारी गुण आगला, त्यांरा दृष्टन्त सांभल तन्त रे हलुकर्म्मी हरष हिवड़े धरै, बहुलकर्म्मी रो मुंह विगड़न्त रे॥ ३०॥ तन्त ढाल कही सात तोसमी, स्वामी मेल्या हैं न्याय साक्षात रे। रखे शंका कंखा भ्रम राखने, मत पड़िवजजो मिथ्यात रे॥ ३१॥

॥ दोहा ॥

किणहिक भिक्खु ने कह्यो, पाखंडो पहिचाण।
सूत्र सार जिन वच सरस, वाचे सखर वखाण॥ १॥
स्वाम कहै तुम्हे सांभलो, वाचे सूत्र वखाण।
जीव खवार्यां पुण्य मिश्र, छेहड़े इम करे छाण॥ २॥
जिम वायां राती जगे, संसार लेखे जान।
गीत भला भला गावती, तीखे मन कर तान॥ ३॥
गीतां छेहड़े गावती, मोसो मारु मन्द।
ज्यूं प्रथम सूत्र प्रगमायने, छेहड़े-सावद्य फन्द॥ ४॥
दीपावे सावद्य दया, दाखे सावद्य दान।
मोसा मारुनीं परे, सर्व विगाड़े तान॥ ५॥
किणहिक भिक्खु ने कह्यो, बुद्धिहीन इक वाल।
भाठा सूं कीड्यां भणी, कचरतो तिणकाल॥ ६॥
उणरो पथर ले उरहो, खोसी करी कषाय।
कहो तिणने का सूं थयो, वद स्वाम कहै सुण वाय॥ ७॥

तसु पासा थी खोसले, तसु कर में स्यूं आत।
तब ओ बोल्यो उण तणे, माठो आयो हाथ ॥ ८ ॥
भाखे पूज विचारलो धर्म जिन आज्ञा मांहि।
जबरी को जिण ना कह्यो, इम सर्व वस्तु गिणाय॥६॥

ढा ३४ वीं ॥

(सत्य कोई मत० एदेशी)

वि णहि भिक्खु ने कह्यो। टोला वा । ता गो रे, ाध न सरधो यां भणी ॥ तो साध हो किण न्यायो रे, तंत दृष्टन्त भिक्खु तणा ॥ १ ॥ ए ाध .म ड़िया टो । तणा, फलाणा टोलारा ाधो रे। इम साध कही वैण उचर्यां, बच त्यके मृषाबादो रे ॥ २ ॥ ाम कहे किणहि शहर में, किरियाबर किण रे थायो रे। नेइता फेरै नगर में, वदै इसी पर वायो रे ॥ मकड़िया रे नेहतो अछै, खेमा साहरा घर रो जाण रे। अमकड़ियां रे नेहतो अछे, ेमा ाहरा घर रो पिछाण रे ॥ ४ ॥ देवालो त्यां ाढ़े दियो, तो पिण वाजै ाहरे। खेमो देवाल्यो वाजै नहीं, द्रव्य निक्षेपो दे ाय रे ॥ ५ ॥ ज्यूं स जम नहीं पाले जिके, नाम धरावे साधो रे। द्रव्य निक्षेपे धू कह्यां, मू न मृषावादो रे ॥ ६ ॥ लकड़ी रा घोड़ा भणी, अश्व कह्यां दोष नाह्यो रे। नाम द्राव थापना, कहिण मात्र हिवायो रे ॥

७॥ किणहि भिक्खु नें क ो, टोला वाला . ताह्यो रे। कहो ध यामें कवण छै, असाधु ण यां मांह्यो रे ॥८॥ स्वाम कहे इक शहर में, आ स पूछे वायो रे। नागा कितरा इण नगर में, कितरा ढकिया अहिवायो रे ॥ ९ ॥ वैद विचक्षण इम वदे, औषध तुझ आंख्यां माह्यों रे घा सूझतो तो भणो, हूं कर देसूं ताह्यो रे ॥ १० ॥ नागा ढकिया तूं निरखले, वैद बोल्यो इम वायो रे। स्वाम कहै साध असाधरी, ओलखणा देस्यां बतायो रे ॥ ११ ॥ पछै साध असाध तूं परखले, कहो नाम लेई कोयो रे। कजियो पहिली तिण सूं करै, जिणसूं कहणो अवसर जोयोरे ॥ १२ ॥ किण हिक बलि इम पूछियो, कुण यांमें साध असाधोरे। स्वाम कहे तुम्हें सांभलो, बिरुओ तज विषवादो रे॥ १३ ॥ संजम लेई पाले सही, ते साधु दायो रे। महाव्रत आदरै मूकदे, असाधु ते असु- हायो रे ॥ १४ ॥ दृष्टन्त भिक्खु दियो इसो, किण- हिक पूछ्यो किवारो रे। साहुकार कुण शहर में, कुण है देवालो बिकारो रे॥ १५ ॥ लेई पाछो देवै लोक में, साहुकार कहे सोयो रे। देणो न देवै देवा यो, झगड़ा उलटा मांड़ै जोयो रे ॥ १६ ॥

ज्यूं संयम देई पाल्यां साध है, दोष थाप्यां नहीं साधो रे। अथवा डंड न आदरै, वरतानें देवै विराधो रे ॥ १७॥ भिक्खु इसा न्याय भाखिया, स्वाम विना कुण शोधै रे पूज गुणानो पिंजरो, पूज भविक प्रतिबोधै रे ॥ १८ ॥ भिक्खु है दीपक भरत मे, भिक्खु भलो भव तारण रे। साहेब भिक्खु साचलो, भिक्खु है विघ्न विडारण रे ॥ १९ ॥ याद आयां हियो उलसे, अन्तर्य्यामी आपो रे। स्मरण सूं सुख संपजै, थिर चित्त म्हे करी थापो रे ॥ २० ॥ स्वाम जिसो इण भरत में, दीन जयाल न दूजो रे। भविक जीवां तुम्हे भाव सूं, पवर भिक्खु गुण पूजो रे ॥ २१ ॥ तन मन सेती तुझ भणी, हृदय उलख हरप्यो रे। आशा पूरण आप हो, म्हें तो प्रत्यक्ष भिक्खु परख्यो रे ॥ २२ ॥ आखी ढाल अड़तीसमी, समस्यो है भिक्खु सनूरो रे। जय जश सुख संम्पति मिले, दालिद्र दुःख गया दूरो रे ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

उपयोग री स्वामी करी, दियो स्वाम दृष्टन्त।
निरमल नीकी नीत सूं, शुद्ध जाणो वस्तु तन्त ॥ १ ॥
कुणको देवी गुरु कह्यो ए कुणको शिष्य जोय।
ऊपर पग दीजो मति, तहत कियो शिष्य सोय ॥ २ ॥

थोडी वार थी शिष्य तिको, फिरतो फिरतो आय।
पग दीधो तिण ऊपरे, तब गुरु बोल्या ताहि॥३॥
तुझ म्हें बरज्यो थो तदा, मत दीजो पग साक्षात।
शिष्य कहै उपयोग शुद्ध, चूको स्वामी नाथ॥४॥
बीजी वेलां शिष्य बलि, फिरतां २ फेर।
पग दीधो कण ऊपरे, गुरु निषेध्यो घेर॥५॥
आगै तुझ बरज्यो हुंतो, कहै शिष्य कर जोड़।
महाराज उपयोग मुझ, चूक गयो इण ठोड़॥६॥
गुरु कहै अबके चूकियो, तो काल विगेरा त्याग।
फिरतां फिरतां शिष्य फिरी, बलि चूक्यो ते जाग॥७॥
इम बार बार स्वामी पड़ी, ते विगय टालण थी ताहि।
बलि कण ऊपर पग देण थी, राजी नहिं मन माहिं॥८॥
कर्म योग उपयोग में, स्वामी तो अधिकाय।
पिण नीत शुद्ध अरु थाप नहिं साध पणो ते न्याय॥९॥

॥ ढाल ३६ मी ॥

(जाणे छे राय तू बात ए देशी)

स्वाम भिक्खु ने सोय ए, किण ही पूछा करी इम जोय ए। साध साधवियां रे मांहि ए॥ अवगुण दीसै अधिकाय ए॥१॥ ज्यांरे नहीं इर्यारो ठिका ए, भाषा सुमति में पिण दिसै हाण ए। केई करै चालता बात ए, शून्य उपयोग री साचात ए॥२॥ सुमति एषणादिक में सोय ए, अधिक फेर दिसै अवलोय ए। तीन गुप्त कही तन्तसार ए, तिहिं दिसै है फरक अपार ए॥३॥ कैकांरी प्रकृति

करड़ी धार ए, छेड़वियां सूं करै फुंकार ए। मान माया लोभ में मंत ए, किम कहिये तिणने सन्त ए ॥ ४ ॥ करड़ी प्रकृति देख्यां साध ए, कोई बोल्या वचन विराध ए। यांमें साधपणारो न अंश ए, अन्न-कुणरी करां केम प्रशंस ए ॥५॥ वर बोल्या है भिक्खु वाय ए, सुण दृष्टान्त एक शोभाय ए। एक साहुकार अवधार ए, कराई हवेली सुखकार ए ॥ ६ ॥ रुपया हजारां लगाविया ए, जाली झरोखा अधिक झुकाविया। ओपै मालिया महिल अनेक ए, शुद्ध शोभता सखर संपेख ए॥ ७ ॥ चारु रूप विविध चित्राम ए, कोरणियां अभिराम ए। सुखदाई रूप सुविहाण ए, पुतलियां मनहरणी पिछाण ए ॥८॥ आवै लोक अनेक ए, देख देखने हरषै विशेप ए। नरनारी हजारां आवता ए। घणा देख देख गुण गावता ए ॥ ९ ॥ महिल मालिया महा श्रीकार ए, तिके जु जूआ देखै तिवार ए। कहै देखो कोरणियां ताम ए, चतुर रूप रच्या चित्राम ए १० ॥ साहुकारादिक सहु आय ए, एतो सगलाई रह्या सराय ए। जठे भंगी देखण आयो जान ए, धुन सेतखाना सूं ध्यान ए ॥ ११ ॥ महिल मालिया साहमो न दिष्ट ए, जाली झरोखा सूं नहीं इष्ट ए।

तिणरे सेतखानां सूं काम ए, तिण सूं तेहिज छै परिणाम ए, ॥ १२ ॥ कहै सेतखानो तो आछो नहीं ए, सेठ सुणतां अवगुण बोले सही ए। जब सेठ कहै सुण वाय ए, ताड़तखानो किण सते य ए ॥१३॥ सेतखानो आछो किम थाय ए, महा नीच वस्तु इण माहिए। निन्दनीक वस्तु ए निदान ए, तूं पिण नीच तिण सूं थारो ध्यान ए ॥ १४ ॥ झरोखा जाल्यां आदि दे जाण ए प्रगट आछा है अधिक प्रधान ए। स्वाम कहै सुविचार ए, कहूं उपनय ए वधार ए ॥ १५ ॥ संजम तप तो हवेली मान ए, सेतखांना ज्यूं अवगुण जान ए। साहुकारादिक अवगुण देखणहार ए, ते सम उत्तम जीव उदार ए ॥ १६ ॥ त्यांरी दिष्ट जम ऊपर म ए, पिण अवगुण सूं नहीं ए। गुणग्राही उत्तम गुणवंत ए, तेतो संयम तप जाणै ए ॥ १७ ॥ संजम गुण जाणै शुद्ध मान ए, पिण अवगुण सूं नहीं ध्यान ए। छिद्रपेही भंगी सम छार ए, संजमने नहीं जाणै लिगार ए ॥ १८ ॥ छट्ठो गुणठाणो इण विध जाय ए, त्यांने ते पिण बर न कांय ए। छट्ठो गुणठाणो इम ठहराय ए, ते पिण जाण पणो नहिं ताहि ए ॥ १६ ॥ वगुण ने करै

अगवाण ए, महानिन्दक मातंग माण ए। कहै अवगुण आछा नाहिं ए, तिण ने कहिणो इणारो कहिसी कांय ए, ॥ २० ॥ अवगुण तो कदेही आछा न होय ए, येतो प्रत्यक्ष ही अवलोय ए। ये तो निंदवा जोग निषेध ए, इण में तो कांई काछ्यो भेद ए॥ २१ ॥ पिण संजम गुण इण माहिं ए, तिण सूं वंदवा जोग कहाय ए। तू मुंहड़े आणै अवगुण वार वार ए, थारे कुमति हिया में अपार ए॥ २२ ॥ दीधो हवेलीरो दृष्टान्त ए, भिक्खु भविक नी भांजण भ्रान्त ए। स्वामी सूत्र न्याय श्रीकार ए, त्यारा जाण भिक्खु तंतसार ए॥ २३ ॥ ओतो दियो भिक्खु दृष्टन्त ए, त्यांरा हेतुने पुष्ट करंत ए। सूत्र साख कहे जय सार ए, तिणरो सांभलजो विस्तार ए॥ २४ ॥ कह्यो सूत्र भगवती मांयि ए, शतक पचीस में सुखदाय ए। उत्तर गुण पड़िसेवी पिछाण ए, बुकस नियंठो श्री जिन वाण ए॥ २५ ॥ जगन दोय सौ कोड़ ते जान ए, नहीं विरह कदे नहिं हानि ए। पंचम पद छट्ठे गुणठाण ए, चारित्रना गुण लेखै पिछाण ए॥ २६ ॥ मूल गुण ने उत्तर गुण मांयि ए, दोष लगावै ते दुखदाय ए। पड़िसेवण कुशील पिछाण ए, जगन दोय सो कोड़ ते जाण

ए ॥ २७ ॥ नहीं विरह यह थी ओछा नाहिं ए, ये पिण छट्ठे गुण ठाणे कहिवाय ए। यांमे चारित गुण श्रीकार ए, तिण सूं वंदवा योग विचार ए॥ २८ ॥ पुलाग नेयंठो पिछाण ए, लब्धि फोड्यां कह्यो जिन जाण ए। थिति अन्तर मुहूर्त्त थाय ए, लब्धि नी थिति तो अधिकाय ए ॥ २९ ॥ विरह उत्कृष्ट संखेज वास ए, पछै तो वश्य प्रगटे विमास ए, यामें चारित्र गुण श्रीकार ए, तिण सूं वंदवा योग विचार ए ॥ ३० ॥ कषाय शील नियंठा मांयि ए, पांच शरीर छः लेश्या पाय ए। षट समुद्घात कहिवाय ए, इण रो पेटो भारी है अथाय ए ॥ ३१ ॥ बहु फोड़वै लब्धि प्रकाश ए, मोह कर्म्म उदय थीं विमास ए। पिण चारित्र गुण श्रीकार ए, तिण सूं वंदवा योग विचार ए ॥ ३३ ॥ पुलाक वुकस पड़िसेवणा पेख ए, दिल सूं कषाय कुशील देख ए। या में दोष तणो डंड जोय ए, वले दोषरी थाप न कोय ए ॥ ३३ ॥ तिण कारण चारित्र चीज ए, दोष थाप्यां जावै गुण छीज ए। जितरो डंड तितरो चर्ण जाय ए, दोप थाप्यां सर्व विललाय ए ॥ ३४ ॥ हीण वृद्धि पचवा में होय ए, प्रगट शतक पचीसमों जोय ए। फेर अनन्तगुणो पजवा मांहिं ए, तो पिण

चारित्र ण सुखदाय ए ॥ ३५ दशमें ध्ययन ज्ञाता में दयाल ए, कह्या चन्द दृष्टन्त कृपाल ए। एकम आदि पूनम चन्द पेख ए, वलि विद पख चन्द विशेष ए ॥ ३६ ॥ ते म सन्त समृद्धि ए, यतिधर्म दशमें हीन वृद्धि ए। क्षान्ति आदि ब्रह्मचर्य्य मांयि ए, एकम थी पूनम तांई गिणाय ए ॥ ३७ ॥ इम विद पख चन्द समान ए, क्षमादिक गुण में फेर जान ए। किहां एकम किहां पूनम चन्द ए, दशूं धर्म एम वृद्धि मंद ए ॥ ३८ ॥ चौथे ठाणें चौभंगी उपन्न ए, शील सम्पन्न चरित्र सम्पन्न ए। दूजो शील १ म्प न देख ए, चारित सहित कह्यो विशेष ए ॥३९॥ (जो शील सम्पन्न स्वभाव ए, खिले* चारित्र संम्पन्न व ए †। चौथो शील चारित नहीं ताम ए, शील शीतल स्वभाव नो नाम ए ॥ ४० ॥ शीत प्रकृति तो नहिं कोय ए, दूजे भांगे चारित कह्यो जोय ए। वर न्याय हिये सुविचार ए, प्रकृति दे ी म भिड़को लिगार ए ॥ ४१ ॥ निशीथ वी में न्हाल ए, वार वार रो डंड विशाल ए, इम भिल ,डि नीत ए, राखो सूत्र नी प्रतीत ए ॥ ४२ ॥

* खिले = नाश।

† पिण चारित्र तणो अभाव ए। ऐसा भी पाठ है।

भारीकर्मा सुणी भिड़काय ए, बोलै ऊंधमति इम वाय ए। करै ढीली परूपणा काज ए, हिवै दोष तणो कांई लाज ए ॥४३॥ इम बोलै मूढ़ गिंवार ए, ज्यांरा घट माहें घोर अन्धार ए। पिण इतरी न जाणै साख्य ए, सर्व कही सूतर नी वात ए ॥४४॥ स्थिर राखण समगत सार ए अति मेटण भ्रम न्धार ए। आगम रहिस वतावे अमाम ए, ते तो एकन्त तारण काम ए॥ ४५ ॥ अति मानणो तसु उपगार ए. थिर समगत राखणहार ए। रह्यो गुण मानणो तो ज्यांहीज ए, उलटी क्यूं करो त्यां पर खीज ए॥ ४६ ॥ परम दुर्लभ समगत पाय ए, रखे शंका राखो मन माहिं ए। शङ्का राख्यां सूं समकित जाय ए, तिण सूं वार २ समझाय ए॥ ४७॥ पजवा ने हीण पाडे कोय ए, वुकस पड़िसेवणादिक जोय ए। तो तिणरी तिणने मुशकल ए, पिण पोते क्यूं घालो सल ए, ॥ ४७ ॥ खोड़ ऊंटरी ऊंटने होय ए, ज्यूं पजवा हीण तसु सोच जोय ए। न फिरै छट्ठो गुणठाण ए, तठा तांई असाध म जाण ए ॥ ४६ ॥ श्रावक कह्या मात तात समान ए, पवर चौथे ठाणै पहिछान ए। हेत सूं कहे रूड़ी रीत ए, पिण अंतरग में अति प्रीत ए ॥ ५० ॥ स्वाम भिक्खु तणे प्रसाद

ए, पामी मक्ति चरण माधि ए। दीधो हवेली रो तो दृ ान्त ए, संखेप थकी चित शान्त ए ॥५१॥ त्यांरा ाद् थी अनुसार ए, ाखा न्याय कह्या जय ार ए। सू: में जि न्याय बतांविया ए, लेश ात्र णहुन्ता न लाविया ए ॥ ५२ ॥ धिन २ भिक्खु स्वा ए, । । घणा जणा रा ाम ए। त्यांरी ासता रा ो तहतीक ए, तिण सूं होवै मोक्ष नजीक ए ॥ ५३ ॥ स्वामी दान दया दीपाय ए, आज्ञा ण आज्ञा ओ खाय ए। ज्यांरा गुण पूरा कहा न जाय ए, प्रत्यक्ष पा भिक्खु पाय ए ॥ ५४ ॥ स्वामी याद ः ावै दिन रैण ए, चित्त में अति पामै चैन ए। ऐ । भिक ु उजागर आप ए, स्मरण सूं मिटे सोग संताप ए ॥५५॥ नव तीसमी ढा निहा ए, भ्रम भंजन ह मय भाल ए। हवेली रो हेतु कह्यो स्वाम ए, सूत्र । जीत कही म ए ॥ ५६ ॥

दोहा ॥

विचरत पूज्य पधारिया, पादु शहर मझार।
शिष्य हेम साथे सखर, संत अवर पण सार ॥ १ ॥
एक आयो इह अवसरे, भिक्खु भणी भणेह।
हेम चद्दर हाथे करी, अधिकी दीसे एह ॥ २ ॥
चतुर स्वाम ते चद्दर ले, माप दिखायो मान।
लांब पणे चौड़ा पड़े अधिक नहीं उनमान ॥ ३ ॥

पूज कहै देखो प्रगट, पछेवड़ी परमाण।
ते कहै अधिको तो नहीं, ए तो छै उन्मान ॥ ४ ॥
तूं अधिको कहितो तदा, तद ते बोल्या ताम।
मुझ भूठी शंका पड़ी, तब घणो निषेध्यो स्वाम ॥ ५ ॥
चार अंगुलरे वासते, संजम खोवां सार।
मुझ भोला जाण्या इसा, आण्यो भ्रम अपार ॥ ६ ॥
एती प्रतीत न तो भणी, तो मारग रे मांय।
पय काचो पीवै तदा, थाने खबर न काय ॥ ७ ॥
इत्यादिक वचने करी, अधिक निषेध्यो आप।
कर जोड़ी ने ते कहे, कूड़ो शंका किलाप ॥ ८ ॥
खरी इण पर सीख दे, खोड़ मिटावण काम।
फिर शंका तसु ना पड़ी, पवर स्वाम परिणाम ॥ ६ ॥

॥ ढाल ४० मी ॥

(जाणपणुं जग दोहेलो एदेशी)

स्वाम भिक्खु गुण सागरु रे लाल, खरा भिक्खु खिम्यावान सुखकारी रे। संवली बेवै स्वामजी रे ला०, सुणो सूरत दे कान ॥ सु० ॥ सुण जो गुण स्वामी तणा रे लाल ॥ १ ॥ शोभाचंद सेवक हुंतो रे लाल, नांदोला नु नेहाल। सु०। आयो पाली में एकदा रे लाल, तिण ने कहे पाखंडी ते काल ॥ सु० ॥ २ ॥ तू त्रिश्वर जोड़ भीखणजी तणा रे लाल, तो ने देसां बहु रुपया ताम। सु०। भीखणजी सूं बातां कर जोड़सूं रे लाल, इम कहे शोभाचन्द

आम ॥ सु० ॥३॥ इम कहि खेरवे आवियो रे लाल, जिहां पूज विराज्या जाण । सु० । उभो भिक्खु रे आगले रे लाल, वंदणा कीधी आण ॥ सु० ॥ ४ ॥ पूज कहै वच परवड़ा रे लाल, तुम्ह नाम शोभाचंद ताय । सु० । शोभाचंद कहै हां सहो रे लाल, तेहिज नाम कहाय ॥ सु० ॥ ५ ॥ भिक्खु वलि तसु इम भणे रे लाल, सुत रोहीदास नो सोय । सु० । सेवक कहे स्वामी भणी रे लाल, सत वच तुम्ह रा अवलोय ॥ ६ ॥ वलि शोभाचन्द बोलियो रे लाल, आप आछी न कीधी एक । सु० । उथापो श्री भगवान ने रे लाल, विरुई बात विशेष ॥ सु० ॥ ७ ॥ वलता भिक्खु बोलिया रे लाल, म्हें क्यांने उथापां भगवान । सु० । म्हे भगवंत रा वचना थकी रे लाल, घर छोड़ साधु थया जाण ॥ ८ ॥ सु० ॥ वलि शोभाचन्द बोलियो रे लाल, आप देवरो दियो उथाप । सु० । जाव देवें स्वामी जुगत सूं रे लाल, चतुर सुणे चुप चाप ॥ सु० ॥ ९ ॥ हजारां मण पत्थर देवल तणा रे लाल, कहो उथापिये केम । म्हे तो सेर दो सेर प्रयोजन विना रे लाल, आघो पाछो करां नहीं एम ॥ सु० ॥ १० ॥ फेर शोभाचन्द पूछतो रे लाल, आप जिन प्रतिमा दी उथाप । सु० । प्रतिमाने कहो

षाण छै रे , ए आछो न करी ॥ ०॥ ११ ॥ स्वाम है तूं सांभल रे , म्हे प्रतिमा उथा , किण ाम । सु० । म्हारे त्याग है झूठ बोलण तणा रे लाल, इणरो न्याय कहूं अभिराम ॥ १२ ॥ सोना री प्रतिमा भणी रे लाल, सोनारी प्रतिमा कहंत । सु० । रूपा री प्रतिमा भणी रे लाल, म्हे रूपा नी कहां धर खंत ॥१३॥ सर्वधातु नी प्रतिमा भणी रे ला०, सर्वधातु नी कहां सोय । सु० । पाषाण री प्रतिमा भणीरे ला०, कहां पाषाण री जोय ॥१४॥ पाषाण री प्रतिमा भणी रे ल० । सोनारी कह्यां लागे झूठ । सु० । तिण सूं कहां छां प्रतिमा पाषाणरी रे ला०, म्हे तो झूठ ने दीधी पूठ ॥सु०॥१५॥ शोभाचंद इम सांभली रे ला०, हर्ष्यो घणो हिया मांय । सु० । इसड़ा उत्तम महा पुरुषां तणा रे ला०, किम अवगुण कहिवाय ॥ १६ ॥ गुण चाहिजे ए पुरुषना रे ला०, बारु इसड़ी विचार । सु० । दोय छन्द जोड्या दीपता रे ला०, सांभलतां सुखकार ॥ सु० ॥ १७ ॥ स्वामीने छन्द सुणायने रे लाल, पाछो आयो पाली माहिं । सु० । पाखंडमतिया पूछियो रे ला०, थे छन्द बणाया के नाहिं ॥ सु० ॥ १८ ॥ ते कहै छन्द बणाविया रे ला०, पाखण्डमति बोल्या फेर । सु० । भीषण

जो रा श्रावक आगले रे ला, छन्द कहिजे होय सेर ॥सु०॥१६॥ स्वामीजी रा श्रावकां कने रे ला०, आया सेवक लेई साथ । सु० । पाखण्डमति कहे श्रावकां भणी रे ला०, वारु सुणो मुझ वात ॥ सु० ॥ २० ॥ सेवक ओ निरापेखी सही रे ला०, अदल कहसी अवलोय । थारे म्हारे श्रद्धा पक्ष नो रे ला० इणरे तो पक्ष नहिं कोय ॥ २१ ॥ शोभाचन्द ने इम कहे रे ला० भीखणजी साधु किसाएक सु०, शुद्ध छै किंवा अशुद्ध छै रे ला०, तब सेवक कहै सुविशेष ॥ २२ ॥ उणारी श्रद्धा उण कने रे ला, आपांरी आपां पास । सु० । तो पिण पाखंडमतिया कहै रे लाल, तूंतो निशंक प्रकाश ॥ २३ ॥ जब शोभाचन्द कहे सांभलो रे लाल, गुण अवगुण भीखणजी में होय । सु० । कहिसूं म्हाने दरशसी जिसा रे लाल, तब ए कहे दरशे जिसा तोय ॥ २४ ॥ शोभाचन्द सेवक इम सांभली रे ला० शुद्ध कह्या छन्द स्यां श्रीकार । सु० । ते छन्द दोनूं गुण तणा रे ला० सांभलजो सुखकार ॥ २५ ॥

॥ शोभाचन्द सेवक कृत छन्द ॥

अनभय कथणी रहणी करणी अति, आठूंई कर्म जीपै अधिकाई । गुणवंत अनंत सिद्धन्त कला

गुण, प्राक्रम पोंच विद्या पुण भारी। शास्त्र सार वत्तीस जाणै सहु, केवल ज्ञानी का गुण उपकारी। पंन्येंद्री कूं जीत न मानत पाखंड. साध मुनिन्द्र वड़ा सतधारी। साधु मुक्ति का वास वंदा सहु, भीखम स्वाम सिद्धंत है भारी ॥ १ ॥ स्वामी परभव के स्वार्थ साच है, वाचै सूत्र कला विस्तारी। तेरा हि पंथ साचा तिहूं लोक में, नाग सुरेन्द्र नमें नर नारी। सूणिये सत बात सिद्धन्त सुज्ञान की, बहुत गुणी करणी बलिहारी। पृथ्वी के तारक पञ्चम आरा में भीखम स्वाम का मारग भारी ॥ २ ॥

॥ ढाल तेहिज छै ॥

शोभाचन्द कह्या इसारे ला०, सांभल ते गया सरक। सु०। मन माहें मुर्भाणा घणा रे ला०, स्वामी जी रा श्रावक होय गया गरक ॥ २६ ॥ पूज खिम्या रा प्रताप सूं रे ला०, पाड़ी पाखंडियांरी आव सुं० ऐसा भिक्खु गुण आगला रे ला०, सुजश विसतरियो सताब ॥ २७ ॥ ऊंडी पूज आलोचना रे ला०, वारु बुद्धि ना जाव। सु०। धोरी धर्म तणा पूरा रे ला०, दियो पाखंड मत दाव ॥२८॥ अवतरिया इण भरत में रे ला०, खरे मारग रह्या खेल सु० सूत्र बुद्धि समसेर सूं रे ला०, पाखण्ड मत दियो पेल ॥

२६॥ स्मरण तुम्ह गुण संभरूं रे ला०, आवे निश दिन याद । सु० । रोम २ सुख रति लहूं रे ला०, पामूं पर्म समाधि ॥ ३० ॥ चार ढाल चालीसमी रे ला० भय भ्रम भञ्जन स्वाम ॥ सु ॥ जय जश सम्पति दायका रे ला० आशा पूरण आम ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

बूंदी में बुजा करी, सवाई रामजी सोय ।
वखाण सम्पूर्ण हुवां पछै, आप नेहत्त मांगो अवलोय ॥ १ ॥
नुहत्त घाल सोगंध करो, इसड़ी कहो छो आप ।
कांई आपरै ई तोटो अछै, ते तोटो पूरण थाप ॥ २ ॥
सुता परणाई सेठ किण, न्यात जिमाई न्याल ।
तोटो पूरण नेहत्त ले, ज्यूं सूं तोटो तुम माल ॥ ३ ॥
ग्राम कई एक सेठ तिण, सुता परणाई सोय ।
बोलाया बहु गाम रा, न्यात मित्र अवलोय ॥ ४ ॥
जीमण कर जीमाविया, सगलां ने पकवान ।
दिवस घणा राख्या पछै, सीख दीधी सनमान ॥ ५ ॥
एक एक पकवान री, साथे कोथली कीध ।
स्वजन भूख भांजण भणी, इम सुणै पूछता कीध ॥ ६ ॥
ज्यूं म्हैं पिण बहु दिवस लग, वखाण में विस्तार ।
वातां विविध वैराग नीं, संभलाई सुखकार ॥ ७ ॥
हलुकर्मी सुण हर्षिया, कर्म काट्या अधिकाय ।
छेहड़ै एक पकवान री, कोथली रूप कहाय ॥ ८ ॥
त्याग करावां तेहने, सुणे मोक्ष में जाय ।
इम तोटो मेटण अथानुं, नुंहत्त मांगां इण न्याय ॥ ९ ॥

ढाल ४१ वीं

(धीज करै सीता सती रे लाल पदेशी)

स्वाम भिक्खु बुद्धि सागरु रे ला०, निर्मल मेल्या न्याय रे। सुगुण नर॥ सुविनीत सुण हर्षे सही रे लाल, अवनीत ने न सुहाय रे। सुगुण नर॥ सुणजो दृष्टान्त स्वामी तणा रे लाल, ॥ १॥ वनीत साधु ऊपरै रे लाल, दीधो स्वाम दृष्टान्त रे। सु०। एक साहुकार नी स्त्री रे , पाणी काजे गई धर खंत रे सु०॥ २॥ बेहड़ो तो माथे पाणी सूं भर्यो रे लाल, पोतारे घर आवता पे रे। सु० मार्ग में तिण री बाहिली मिली रे ला०, बातां करवा लागी विशेष रे ॥ ३ ॥ एक घड़ी तांई उभा थका रे ला०, हिल मिल बातां करी हर्षाय रे। सु०। पछै घर आवी निज पिउ भणी रे ला०, तिण हेलो पा यो ताहि रे॥ ४॥ तुर्त घड़ो उतारो मुझ सिर तणु रे ला०, जो किंचित बेलां थी भरतार रे। ु० बेहड़ो उता यो तिण बेरनो रे ला०, तो क्रोध मा आवी अपार रे॥ ५॥ कहे म्हारे माथे तो बेहड़ो उदकनो रे ला०, सो हूं भारे मुई घणी सोय रे। सु०। थाने तो मूल सूजै नहीं रे ला०, तिण सूं बेलां इतरी लगाई जोय रे ॥ ६ ॥ संसार तणे लेखे सही रे ला०, नार इसड़ी

अविनीत रे। सु०। रस्ते एक घड़ी बेहड़ो छतां रे ला० पोते बात करती धर प्रीत रे ॥ ७॥ किंचित् जेज पिउ करी रे ला० तड़का भड़का करवा लागी तामरे। सु० इसड़ो अंजोग ते स्त्री रे ला०, अवनीत जग कहे आम रे ॥८॥ अविनीत साधु एहवो रे ला०, गोचरियांदिक माहिं रे। सु०। किणही बाई भाई सूं बातां करे रे ला०, एक घड़ी उभा ताहि रे॥ ९ ॥ अथवा दर्शण देवा भणी रे ला०। झट चलाई ने परहो जाय रे। सु०। तिहां उभा घणी वेलां लगे रे ला०, बातां करै त्रणाय रे ॥ १० ॥ बड़ा थोड़ोई काम भलाइयां रे ला०, करता कठ मठाठ करै जेह रे। सु। तथा पाणी राख्यो ते लेवा मेलियां रे लाल, टाला टोला कर देवै तेह रे ॥ ११ ॥ अथवा जातो दोहरो हुवे रे ला०, देवै मुंह बिगाड़ रे। गुरु सीख दिये चूक थी पड्यो रे ला० तो करै उलटो फुंकार रे ॥ ११ ॥ अवनीत साधु ने दीधी उपमा रे, अवनीत स्त्री नी भिक्खु आपरे। इम सांभल उत्तमा नरा रे, चित्त सुविनय थाप रे ॥१३॥ वलि वनीत अवनीत री चौपई विषै रे, आख्य दृष्टन्त अनेक। सु०। संक्षेप थकी कहूं छूं सही रे लाल, सांभलजो सुविवेक ॥ १४ ॥ अवनीत ने थावरिया नी उपमा रे लाल, गर्भ-

वती ने कह्यो कोथ सु० । पुत्र होसी पुन्य गलो रे, पाड़ोसण ने कहे पुत्री होय रे ॥ १५ ॥ गुरु भगता त्रक वि ने रे ०, रु री ण । सु० । रे व जाणै तिण ने रे ; अवगु बोले ताम ॥ १६ ॥ कने रहे धु ते थकी रे ०, बेर बुद्धि ज्यूं ण ० । और लगा रहे ते थकी रे ०, हेत राखे विहाण ॥ १७ ॥ कुह्या नां री कुती भणी रे ला०, काढ़े घर सूं सहु कोय ० । ज्यूं अवनीत जिहां जावै तिहां रे ०, दर मान न होय ॥ १८ ॥ भंडसुरो ण छाड़ि ने भीष्टो भ रे ०, हरिया जब छांड़ी मृग पड़े पास ० । अवनीत वि य छांड़ी करी रे ०, वि धारे उलास ॥ १६ ॥ गधो घोड़ो गलियार अवनीतड़ो रे ०, कूट्यां विन घो नहीं कोय । ज्यूं नीत ने क वियां रे ला०, कह्यां नीठ २ पार होय रे ॥ २० ॥ बुटक ने गधे मामे बलदने रे ला०, मरायो कुबुद्धि सीखाय । ज्यूं अवनीत री संगत कियां रे ला०, भव २ में दुख पाय ॥ २१ ॥ वेश्या मुतलब थी पुरुषांने रिझावती रे ला०, स्वार्थ न पूगां तुरत दे छेह रे सु० । ज्यूं अविनीत मुतलब विनय करै घणुं रे ला०, स्वार्थ नहीं सझ्यां तोड़े

सनेह रे ॥ २२ ॥ बांध्यो कालारी पाखती गोरियो रे ला०, वर्ण नावे तो पिण लक्षण आय रे। ज्यूं अवनीत री सङ्गत करै रे ला०, तो उवे अविनय कुबुद्धि सीखाय ॥ २३ ॥ सोक रा सोक लोकां कने रे, अवगुण बोलै ने वांछै घात। ज्यूं अविनीत वरते गुरु थकी रे, अवगुण ग्राही साख्यात ॥ २४ ॥ जा-तिरी त्रिया पिउ से लड़ी रे, ताकै कुवे के उठै और साथ रे। करे अविनीत क्रोध सूं सलेपणा रे, के गण छोड़ जूदो होय जाय ॥ २५ ॥ शोर ठंडो हुवै मुख में घालियां रे, तातो अग्नि में गालियां हुवै ताय। ज्यूं वस्त्रादिक दियां अवनीत राजी रहे रे, स्वार्थ अण पूगां अवगुण गाय ॥ २६ ॥ शोर शोरीगर रा घर थको रे, दूर रहै बुद्धिवान रे। ज्यूं अवनीत सूं अलगा रहे रे, ते डाहा चतुर सुजाण ॥ २७ ॥ आछी वस्त घाले अग्नि में रे, ते छिन माहें हो-जावै छार। ज्यूं अविनय अग्नि में गुण वले रे। अवगुण प्रगटे अपार ॥ २८ ॥ नाग खिजावै नान्हो जाण ने रे, तो ओ घात पामै तत्काल। ज्यूं नाना गुरुनी निंद्या कियां, आपदा पामै असराल ॥ २९ ॥ कालो नाग कोप्यां करै, जीव घात सूं अधिक म जाण। पग गुरु ना अप्रसन्न कियां, अबुद्धि दुर्गत

दुख खाण ॥ ३० ॥ कदा ग्नि न खे मन्त्र जोग सूं रे, कदा कोप्या न खाय। दा तालुपुट विष पिण मारै नहीं पिण गुरु हेलणा सूं मुरि न जाय ॥ ३१ ॥ कोई वांछे सिर सूं गिरि फोड़ रे, सूतो ही सिंह जगाय। कोई भा रे अणी रे टाकरा रे, ज्यूं गुरुनी सातना थाय ॥ ३२ ॥ कदा गिरि पण फोड़े कोई मस्तके रे, कदा कोप्यो सिंह न खाय। कदा भालो न भेदै टाकर मारियां रे, पण गुरु हेलणा सूं शिव नाहिं ॥ ३३ ॥ ज्यूं काष्ठ वह्यो जाय जल मझे रे, ज्यूं विनीत तारणोजे संसार। शिष्य क्रोधी अभिमानी स्मा रे, धूर्त्त मायावियो धार ॥ ३४ ॥ गुरु सीख दिये अविनीत ने रे, तो क्रोध करे तिण वार। ते डांडे कर ठेलै लिछमी आवती रे, सांची सीख न अद्धे लिगार ॥३५॥ केई हाथी घोड़ा अविनीत छै रे, दीखै प्रत्यच्त दुःख। तो धर्माचार्य ना अविनीत ने रे, कहो हुवे किम सुख ॥ ३६ ॥ विनीत नर नारी इण लोक में रे, विकल इन्द्री सरीखा विपरीत। ते डांडे करी ताड़ीजता रे, अति दुः पामें गुरु नो अविनीत रे ॥ ३७ ॥ वले देव दाणव अविनीत छै रे, दुखिया ते पण देख। गुरु ना अवनीत ने दुः

ति घणा, काल नन्त संपेख ॥ ३८ ॥ विनीत अविनीत तां वाट में रे, दोनूं जणा हथिणी नो पग देख। अविनीत कहे पग हाथी तणां, इण ने ऊंधो सूझे शेष ॥ ३९ ॥ विनीत है हथिणी पण काणी डावी ंखरी रे, ऊपर राजा री राणी हित। वले पुत्र रत्न तिणरी कूख में रे, विवरा सुध बोल्यो सुविनीत ॥ ४० ॥ एक बाई आगे पूछियो रे. ऊभी खर । म्हारो सुत प्रदेश ते ि ी दे रे, कहे विनीत उण कियो काल ॥ ४१ ॥ हूं काटूं वाढूं जीभड़ली तांहिरी रे, तूं विरुओ बोल्यो केम। धसको क्यूं न्हाखे पापी एहवो रे, जब विनीत कहे छै एम ॥४२॥ पुत्र थारो घर वियो रे, ज मि सी तो सूं निशंक। इणरो वचन मान रो झूठो घणां, इण रे जीभ वैरण रो वंक ॥ ४३ ॥ ए दोनूं बोलां विनीत झूठो पड्यो रे, पछै गुरु सूं झगड़्यो । कहे मोने न भणायो कपटे करी गुरु पूछे निरणूं कियो ताहि ॥ ४४ ॥ इह तोक ां गुरु ित री रे, अकल विगड़ गई एम। तो धर्म्माचार्य नां अवनीतरी रे, ऊंधी अकल रो कहिवो केम ॥ ४५ ॥ ज्यूं नकटी छुटी कुलहीणी नार ने रे, परहरी निज भरतार। जोगी भखरादिक तिण ने आदरे,

उवा पिण जावै उणा र ॥ ४६ ॥ टी रीषो विनीतरो रे, तिण सूं नि रु न धरे प्यार। तिण ने ।प रीषो आवी मिले रे, तब पामें हर्ष पार ॥ ४७ ॥ नकटो तो जोवै भखरादिक भणी रे, अविनीत जोवै अजोग। जो शुभ उदै हुवै विनीत रे, मिल जावै सर ो योग॥ ४८॥ सौ बार णी सूं कादो धोवियां रे, बिरुई न मिटै । घणूं उपदेश दे गुरु अविनीत ने रे, पिण मूल न लागै स ॥ ४९ ॥ विनीत उजिया भोगवती जिसो रे, अविया रोहणी जिसो वनीत। गुरु गण सूंपे विनीत ने रे, पूरी तिण री प्रतीत ॥ ५० ॥ किणही गाय दीधी चार विप्रां भणी रे, ते बार २ दूहे ताहि। पिण चारो न नीरे लोभ थकी रे, तिण सूं दुः २ मुई गाय ॥ ५ ॥ गाय सरिषा आचार्य मोटका रे, दूध सरीषो ज्ञान मो । शिष्य मिला ब्राह्मण ।रिषा रे, ते ज्ञान लिये दिल खोल ॥ ५२ ॥ आहार णी ।दि ० वच तणी रे, न रे सार माल। एहवा अविनीतां रे वश गुरु पड्या, त्यां पण दु २ कियो का ॥ ५३ ॥ अ ण तो एक भव मझे रे, फिट २ हु इह ोक। गुरु ना वनीत रो कहिवो किसो रे, पीड़ा विविध परलोक ॥ ५४ ॥

गर्ग आचार्य ने मिल्या रे, पांच सौ शिष्य अविनीत। तिण रो विस्तार तो छै घणु, उत्तराध्ययन माहें गीत ॥ ५५ ॥ एकल थकी बुरो अवनीतड़ो रे, थांरा गण माहें जाण। स्वाम द्रोही सेवग सारीसो रे, दुमनुं चाकर दुश्मण समान रे ॥ ५६ ॥ ॥ छलबल खेले चोर ज्यूं रे, छिद्री थको रहे टोला माहिं। चर्चा उपदेश तिणरो अति बुरो, फाड़ा तोड़ा काजे करे ताहि ॥ ५७ ॥ और साधांरा काढ़े गृहस्थ खूंचणा रे, तिण सूं वात करै दिल खोल। अन्तरंग में जाणे आपरो, तिणने सिखावे चर्चा बोल ॥ ५८ ॥ गुण ग्राम गावै सुविनीत रा रे, अविनीत सूं सह्या नहीं जाय। निज आपो प्रगट करै, म्हाने तो ललवल न सुहाय ॥ ५६ ॥ और थारी सिता उतारवा रे, आपो प्रगट करै मूढ़। गुरु सीख दे खामी मेटवा रे, तो सांहमो मंड जाय करे खोटी रूढ़ ॥ ६० ॥ जिण ने आप तणुं करै रागियो रे, शङ्का औरां री घाल। अभिमानी अविनीत नी रे, एहवी छै ऊंधी चाल ॥ ६१ ॥ सुविनीत रा मभ्काविया रे, साल दाल ज्यूं भेला होय जाय। विनीत ना मभ्काविया, कोकला ज्यूं कानी थाय ॥ ६२ ॥ समभाया सुविनीत अविनोतरा रे, फेर

कितोयक होय। ज्यूं तावड़ो ने छांहड़ी रे, इतरो अन्तर जोय॥ ६३॥ विनीत ने विनीत मिले रे, ते पामें घणो मन हर्ष। ज्यूं कण राजी वे रे, चढ़वा ने मिलियां जरख॥ ॥६४॥ डाकण रै तुष ने रे, गो करै समकित नो त। डाकण चोर राजा तणी रे, ओ तोथंकर नो चोर विख्यात॥ ६५॥ ट रूपशुद्धि फिट २ वे, जे न गिणै जाति कुजाति। अविनीत शुद्धि घणो णारो रे, निकला ने मूंडै विख्यात॥ ६६॥ ए अविनीत साधु ओ वाविया रे, इमहिज साधवी । बले वक ने त्रिका रे, तिम हिज करजो पिछाण॥ ६७॥ साध साधवियां री निन्दा करै, अवगुण बोलै विपरोत। सूंस करावै गृहस्थ भणी रे, त्यांरी भोला माने परतीत॥ ६८॥ केई वक वे घर तणुं, केयक मांगे य। पिण अविनीत पणो छूटै नहीं, तो गरज सरै नहीं य॥ ६९॥ त्यांने दोधां में पुन्य परूपियां, स्वान ज्यूं पूंछ हिलाय। साधु पाप प्ररूपे त्यांरा दान में, तो लागै अभ्यन्तर ल ॥७०॥ कोई अविनीत हुवै ध धवी, कदा गुरु दे लोका ने जताय। जो अविनीत क सांभले, तो तुर्त कहे तिणने जाय॥ ७१॥ धां ने आय बंदणा करै, साधवियां ने न वांदे रूड़ी

रीत। त्यांने श्रावक श्राविका म जाणजो रे, तेतो मूढ़ मति छै विनीत ॥ ७२ ॥ तिण श्री जिन धर्म न ओलख्यो रे, वले भण भण करै –भिमान। ...प छांदे माठी मति उपजे, तिण ने लागो नहीं गुरुकान ॥ ७३ ॥ मोटो उपगार मुनि तणुं, कृतघ्न कीधो न गिणंत। एहवा अविनीत साधु श्रावक ऊपरै, भिक्खु आख्यो एक दृष्टन्त ॥ ७४ ॥ कोई सर्प पड्यो उजाड़ में रे. चैन नहीं सुध कांय रे। तिण सर्प री अणुकम्पा करी, दूध मिश्री घाली मुख मांय ॥ ७५ ॥ ते सर्प सचेत थयां पछै रे, आडो फिरियो आय। जो ओ-लूंठो हुवै तो उण ने दाव दे रे। काचो हुवै तो दे डङ्क लगाय ॥ ७६ ॥ सर्प सरीपा अविनीत मानवी रे, एकल फिरै ज्यूं ढोर हलियार। तिणने समकित चारित्र पमाय ने रे, कीधो मोटो अणगार ॥ ७७ ॥ एहवो उपगार कियो तिको रे,तत्काल भूले अविनीत। उलटा अवगुण बोलै तेहना रे, उणरे सर्प वाली छै रीत ॥ ७८ ॥ आहार पाणी वस्त्रादि कारणै रे, ते पिण झूठो झगड़ो जोय। इण रे ऊपरलो हुवे तो दावे डङ्क दे, आघो काढ़े तो उलटो भांड़े सोय॥ सर्प ने मिश्री दूध पायां पछै रे, डङ्क दे ते गैरी सर्प देख। ज्यूं ओ समकित चारित्र लियां पछै रे, हुवो

थां रो बैरी वि ेष ॥ ८०॥ बले पी रो
हुवे लोलपी रे, प रो दोष न सूझे मू । े वियां
ो े, बलि क्रोध े प्रतिकूल ॥ ८१ ॥
ति ने दूर े तो दुश्म थको रे, बोले घ ं विष-
रीत । परूपै धने, तिण रे गैरी
नी रीत ॥ ८२ ॥ गुरा ने दूध थ ं
रे, ओ करे पाछो उपगार । ति ने देई
करै रे, बले दी हुवै हर्ष । ० । णो
विनीत रा रे ॥ ८३ ॥ केई प दे फिरै
ए । रे, पि प्रणामी शुद्ध रीत रे । तिणने
म य कित चारित्र दियो रे, ते
रूड़ी रीत ॥ ८४ ॥ तिणरे त्रि ने बि
रे, रुचिया अभ्यन्तर । े ज्यूं । े छान्दो
रूंधने रे, ज्यां े छो र ॥ ८५ ॥ मोटो
उपगार त्यांरो त्रि बि े रे, े बं देही त्यांरे
काज । त्यांरे दर्शण देख हर्षित हुवे, सब काम न धोरी
ज्यूं समाज ॥ ८६ ॥ बले गामा नगरां फिरतां थकां
रे, सदा काल करे गुणग्राम । ते सुविनीत गुणग्राही
आत्मा रे, त्यांने वीर बखाणया ताम ॥ ८७ ॥ शिष्य
सुविनीत ने शोभती रे, उपमा दीधी अनेक । सूत्र
न्याय भिक्खु स्वामजी रे, सांभलजो सुविशेष रे

॥ ८८ ॥ भद्र कल्याणकारी घोड़ै चढ्यो रे, सवार रे हर्ष आणन्द। ज्यूं सीख दियां सुवनीत ने रे, गुरु पामैं परमानन्द ॥ ८६ ॥ सुविनीत हय देखी चावको रे, असवार रे गमतो चा न्त। चावका रूप वचन लागां बिना रे, सुविनीत वर्ते चित्त शान्ति ॥ ६० ॥ अग्निहोत्री ब्राह्मण सेवै अग्नि ने रे, ते घृतादिक सींचो करै नमस्कार। सुविनीत सेवै इम गुरु भणी, केवली छतो पिण अधिकार ॥६१॥ सुविनीत हय गय नर नारी सुखी रे, सुखी देव दानव सुविनीत। ते तो पूर्व पुन्य रा प्रभाव सूं रे, दीसै लोक में विनय सुरीत ॥ ६२ ॥ केई पेट भराई शिल्प कारणै, संसार नां गुरु कने सीख। राजादिक ना कुंवर डांडादिक सहै रे, करड़ा बचन सहै नर्म होय ॥६३॥ तो सिद्धन्त भणावे ते सतगुरु तणी रे, किम लोपै विनयवन्त कार। समगत चारित्र पमावियो रे, ओ उत्कृष्टो उपगार ॥ ६४ ॥ धर्म रूप वृक्षरो विनय मूल छै, बीजा गुण शाखादिक सम जाण। तिण सूं शीघ्रबुद्धि कीत्त सूत्र नी रे, दशवैकालिक नवमा रे दूजे वाण ॥ ६५ ॥ वृक्ष रो मूल सूकां छतां रे, शाखा पान फलादि सूख जाय। ज्यूं बिनय मूल धर्म विणसियां रे, सगलाई गुण विललाय ॥ ६६ ॥ एहवो विनय गुण वर्णव्यो

रे, सांभल ने नर नार। विनय ने लगो करो
रे, करो विनय धर्म ॠी र ॥ ९७ ॥ अविनीत रा
भाव सांभली रे, विनीत बहु दुख पाय। केई
गुरु सुध बुध बाहिरा रे, ते पिण हर्षत थाय ॥ ९८॥
विनीत रा गुण सांभली रे, विनीत रे ानन्द ओ
छाव। तो पिण कुगुरु हर्षत हुवैरे, बिनय करावण
चाव ॥ ९९ ॥ जे समझे नहीं जिन धर्म में रे। आज्ञा
गोलखे नांय। ते व्रत बिहुंणा नागड़ा रे, प्रत्यक्ष
प्र गुणठाणो देखाय ॥ १०० ॥ ह्रा देखी
हंसली तणी रे, बुगलो पिण काढ़ी चाल। पिण
गलो सूं चाल ावै नहीं रे, ए दृष्टन्त लीजो संभाल
॥१०१॥ गुरु साध ने देखी करी रे, ते पिण करवा
लागा भिमान। आडम्बर कर विनय रावता रे,
नहिं श्रद्धा आचार नुं ठि ण ॥ १०२ ॥ कोय रा
ठउकार सुणी करी रे, कां कां ब्द रै ाग।
शोभाग सुण सतियां तणा, कूढे तियां अथाग
॥१०३॥ सांगधारी कुसतियां ग ारिषा रे, अशुद्ध
श्रद्धा अ ार रे माहिं। ला बादल ज्यूं थोथा
जता रे, विनय रावता जै हिं ॥१०४॥ गैवर
नी गति देखने, भूसें ९ न ऊंचा कर ान। ज्यूं
भेषधारी दे ा धने रे, स्वान ज्यूं कर रह्या तान

॥ १०५ ॥ ते पिण विनय करावण रा भूखा घणा, साथी सीप सिंगोथ्या रा ोय। मिथ्यादृष्टि ते मूलगा रे, त्यांने ओलखे बुद्धिवन्त लोय ॥ १०६ ॥ त्यां ठाम २ थानक बांधिया थापै जीव खवायां पुन्य। ` पिण नाम धरावे साधरो, ञ्लो न सूझे कित शून्य ॥ १७ ॥ पोपां बाई रा राज में, नव तूंबा तेरे नेगदार। ज्यूं विकल सेवका स्वामी मिल्या रे, एहवो भेषधा ां रे अन्धार ॥ १०८ ॥ अधिका राखता रे, आडा जड़े किंमाड़। मोल लिया थानक माहें रहे, इ ड़ी थ निरन्तर धार ॥ १०९ ॥ आज्ञा बारे पुन्य श्रद्धता ाज्ञा पाप समाज। काचो पाणी पायां पुन्य श्रद्धता रे, प्रत्यक्ष पोपां बाई रो राज ॥ ११० ॥ ते समझ न पड़े श्रावकां भणी, ज्यांरा मत माहें मोटो पो । पिण धा ने मूल सुझे नहीं, तां ऊपर झोल ॥१११॥ कुगुरु निषेध्यां विनीतड़ो, ऊंधा करै विपरीत। ते त गुरुने कुगुरु कहे, नहिं विनय करण री नीत ॥ ११२ ॥ उण सूं विनय कियो जावे नहिं, तिण बोले क हित। है विनय कह्यो छै शुद्ध धनो रे, इण रे अन्तर खोटी नीत ॥ ११३ ॥ धां ने ध सरधा- यथा रे ०, बोलै । सहित। तिणने बुद्धिव

हुवै ते ओलखे रे, ओ पूरै मतै अविनीत ॥ ११४ ॥
हे आचार में चूके घणा रे, म्हां विनय
कियो किम जाय । ते बुद्धिहीण जीव बापड़ा रे, न
जाणै सूत्र न्याय ॥ ११५ ॥ बुकस पड़िसेवण भेला
रहे रे, अवधि मनपर्यव केवल अवक्र । ते भेला
आहार करता शंके नहीं. इणने विनय करतां ावै
शङ्क ॥११६॥ देखो अंधारो अवनीत रै रे, निज अव-
गुण सूझे नांय । विनय नो ण पोते नहीं, तिणसूं
पर तणुं ौगुण देखाय ॥ ११७ ॥ दर्शण मोह उदय
घणुं. पूरो विनय कियो नहीं जाय । ओलखे अवगुण
इ ापरो, ए उत्तम पणो सुहाय ॥११८॥ ते कहे केवली
बुकस भे रहे, मोह बल्यो तिण वे लहर ।
लहर आवे चित्त थिर नहीं, ते जाणै निज कर्म रो
जहर ॥ ११९ ॥ बुकस पड़िसेवणा कदे नहिं मिटै रे,
नूं ही क रे मांय । दोय सौ कोड़ सूं घटै नहीं,
चित्त अथिर ते न मिटाय ॥ १२० ॥ ज्यांरे सूत्र
तणी नहीं धारणा, अति प्रकृति घणी जोग रे ।
ते थोड़ा में रंग विरंग हुवै रे, मोटो दर्शण मोह
रोग ॥१२१॥ रे दर्शण मोह तो दि घणो,
विण सैणा घणा बुद्धिवान । ते गुरुने सुणाय निशङ्क
हुवै रे, ज्यांरे समकित रो जोखो मति जाण ॥१२२॥

दोश री थाप गुरां रे नहीं, दोपरा डंडरी थाप। और री कीधी थाप हुवै नहीं, इम जाण निशंक रहे आप ॥ १२३ ॥ इम सांभल उत्तम नरां रे, राखो देवगुरां नी प्रतीत। आसता राख आगे घणा, गया जमारो जीत ॥ १२४ ॥ वरुण नाग नतुआ तणो, मित्र तखो प्रतीत सूं पेख। ते उत्तम पुरुषां री प्रतीत सूं तिरया तिरे ने तिरसी अनेक ॥ १२५ ॥ भिक्खु स्वाम कह्या भला, दीपता वर दृष्टन्त। केयक तो सूत्रे करी, केयक बुद्धि उपजंत ॥ १२६ ॥ उत्पत्तिया बुद्धि अति घणी, स्वाम भिक्खु नी सार। स्वाम गुणा नो पोरसो, स्वाम शासण शिणगार ॥ १२७ ॥ स्वाम दिसावान दीपतो, स्वाम तणी वर नीत। आसता तास न आदरै, ते अपछंदा अविनीत ॥ १२८ ॥ भिक्खु दीपक भरत में, प्रगट्यो बहु जन भाग। स्वाम भिक्खु गुण संभरूं रे, आवै हर्ष अथाग ॥ १२९ ॥ ढाल भली इकचालीसमी, आख्या दृष्टन्त अनेक। भिक्खु, स्वाम प्रसाद थी, जय जश करण विशेष ॥ १३० ॥

॥ दोहा ॥

इत्यादिक दृष्टान्त अति, सूत्र न्याय वलि सार।
सखरा मेल्या स्वामजी, भिक्खु बुद्धि भण्डार ॥ १ ॥

अणुकम्पा रे ऊपरे करणी पढम गुणठाण।
इन्द्री वादि ऊपरे, बहु दृष्टान्त बखाण ॥ २ ॥
पोत्याबंध ऊपर प्रत्यक्ष, प्रज्याबादि पिछाण।
कालवादी की चौपाई, दृष्टान्त त्यां बहु जाण ॥ ३ ॥
व्रत अव्रत री चौपई, वर श्रद्धा आचार।
जिण आज्ञा पर युक्ति सूं, रचनाहे तू सार ॥ ४ ॥
टीकम डोसी कच्छ नो, सूक्ष्म पूछा सोय।
जाब दिया अति युक्ति सूं, स्वप भिक्खु अवलोय ॥ ५ ॥
भिक्खु नाम कह्यो भलो, सूत्रां में बहु ठाम।
भेदै कर्म भणी भलो, गुण निष्पन्न तुझ नाम ॥ ६ ॥
पंच महाव्रत अंक पंच, चार व्रत ना चार।
अव्रत चारे अंक धर, त्रि करण जोग प्रकार ॥ ७ ॥
इण विध मांड बतावता, हेतु न्याय अनेक।
आप देखाया अधिक ही, वर्णवे केम विशेष ॥ ८ ॥
व्याख्या ते दृष्टान्त नीं, संकलना सुविशाल।
कहूं छूं संक्षेपे करी, सुचा मात्र संभाल ॥ ९ ॥

॥ ढाल ४२ वीं ॥

(डाभ मूंजादिक नी डोरी० ए देशी)

पांच सौ मण चणा पिछाण, पंच सिख्यां हेत ते जाण १ डोकरा ने चणा सेर दीधूं, पीस पोय जल सूं तृप्त कीधूं २ ॥ १ ॥ आखा पजुसण में न्हाल, चोड़े परम्परा थित चाल ३ माता वेश्या ने तें जल पायो, पाप छै पिण सरीखा न थायो ॥ २ ॥ तिम श्रावक कसाई न सरिषो, पाप सुणी कोई मत

भिड़को ४ ॥ चद्दर ले गयो तसकर एक एक दीधी प्रायछित किण रो संपेख ५ ॥३॥ थांरा घणी रो नाम नाथू होय, कहै क्यांने नाथू हुवै सोय ६ मूला दियां कांई हुवे त्यांने, पूछ्यो अमरसिंघजी रा साधां ने ॥ ४ ॥ पड़िया तसकर ने आफू खवायो, ते तो सेठ नो वैरी छै तायो ८ खेत पाकां करसणी रे वालो, तिण रो रोग मेट्यां फल म्हालो ९ ॥ ५ ॥ ममता उतरी कहै प्रसिद्धि, दश बीगा खेती किणने दीधी १० सावज दानरा तू करै त्याग, म्हाने भांडवा ने के वैराग ११ ॥ ६ ॥ जल लोटो सूंपजो म्हारे हाट, ज्यूं पुन्य कहै सांनो रे वाट १२ पड़िमाधारी ने दिया सूं होय, लेणवाला ने ते अवलोय १३ ॥ ७ ॥ कोई काचो पाणी किणने पावै, कोई पारकी खाई लुटावे। ४ धन दियो अव्रतीने ताहि, लाय मां सूं न्हाख्यो लाय मांहि १५ ॥ ८ ॥ घृत तम्बाकू भेला न मेल, ज्यूं व्रत अव्रत में नहीं भेल १६ आंख जीभ औषध रो दृष्टन्त, व्रत अव्रत ऊपर उपजंत १७ ॥ ९ ॥ शोर अग्नि न्यारा सूं न नाश, ज्यूं व्रत अव्रत जुजूवा तास १८ सोमल मिश्री पसारी रे न्यार, व्रत अव्रत जुवा विचार १९ ॥ १० ॥ कहै गृहस्थ रो है छन्द, छांदा में धूल है मंद २० खांड घृत मेदो खरा होय, ज्यूं

चित्त वित ---- सुजोय २१ ॥ ११ ॥ ---ने ---ाध
जाणं ने दियो दान, उत्तर धी मिश्री ि जान।
२२ आंक थोर रो दूध अशु , २३ वज दया -
कम्पा न शुद्ध २४ ॥१२॥ ल बुम्फ ां मि थापंत,
तो र मा ां न प एकन्त। २५ बले करुणा घणा
री ाण, साई ने ो मि ण २६ ॥ १३ ॥
बले उरपुर ने मारे विशेष, तिणमें पिण मिश्र छै
त्यांरे लेख २७। बले टवी बालतो जाण, तिणने
मा ां मिश्र क्यूं न ण २८ ॥ १४ ॥ कतल करता
तुर्कादिक ताय, तिण ने मा ां मिश्र त्यांरे न य
२९ गायांदिक हिंसक जीव सं रे, त्यांने म ां
मिश्र क्यूं नहीं रे ३० ॥ १५ ॥ फांसी काढ़े ते
धर्मी कहिवायो, तो थारा गुरु न काढ़े किण न्यायो
३१ चोर ग्यारह में एक छुड़ायो, तिण रो सेठ प्रत्यक्ष
फल यो ३२ ॥ १६ ॥ उरपुर धो उजाड़ रे मांयो,
मन्त्रबादी भाड़ो दे बचायो ३३ धां सुणायो श्री
नव र, ज्ञा में किसो छै उपगार ३४ ॥१७॥
साहुकार नीं हि यां दोय, एक रोवै न रोवै ते जोय।
कहो धुजो किणने सरावै, संसारी रे मन ण भावै
३५ ॥ १८ ॥ मोहकमसिंहजी पूछ्यो महाराज,
ाप गमता लागो किण ज। नारी हर्षे कासीद

निरख, तिम शिव मग नो थांरे हर्ष ३६ ॥ १६ ॥
तु वगुण है है ३७ थारो मुंहड़ो देख्यां
नर्क जाय ३८ ताकड़ी डांडी रो दृष्टान्त ३६ कहै
उघा भणी वांदन्त ४० ॥ २० णगोली सीरा सूं
शोभाय ४१ एक भांगां पांचूं वि ाय ४२ करो
थानक म्हे कद ख्यो ४३ ोरो करो माई न
दाख्यो ॥ २१ ॥ खरी मुफ करो गाई । डावरे
कद क ो थो ताहि ४४ जति रो उपासरो कहाय,
मथेड़ रे पोशाल है ताय ४५ ॥ २२ ॥ भालर सुण
स्वान रुदन करन्त, विहाव री सुवांरी न जाणन्त ४६
दुःख नी रात्रि मोटी देखाय, सुख नी रात्रि छोटी
दीसे ताय ४७ ॥ २३ ॥ गाम रे गोरवें खेती वाही,
गधा न पड्यां तो ते ठहराई ४८ करड़ा दृष्टान्त
कहो किण न्याय, ड़ो रोग फूं जाल्यां न जाय
४६ ॥ २४ ॥ गोहां री दाल हुवे नाहिं, अल्प बुद्धि
न समझे ताहि । ५० ापरी भाषा नहिं गो ाय,
पोते लिख्यो वाच्यो नहिं जाय ५१ ॥ २५ ॥ गौ
पग डांडी पाखण्ड ग ताहि, जिण माग रस्तो पात
शाही ५२ पाग चौरी मुदो न पोंचाय, झूठो ठा २
अटक जाय ५३ ॥ २६ ॥ धां स करायो ोय,
भाग्यां साध ने पाप न होय । ड़ो वेच नफो लियो

सार ५४ साधु ने त दियो उदार ५५ ॥ २७ ॥ बैरागी बैराग चढ़ावै कसूंबो गलियां रंग पमावै ५६ कहै म्हे जीव बचावा ए ठागो, चोकी छोड़ चोर्यां करवा लागो ५७ ॥ २८ ॥ चूपषा जिम छै तिम राखे, पूरो न पलै पंचम काल भाखे ५८ तेलो तीन दिना रो ते काल, हिवड़ां पिण तीन दिवस नो न्हाल ५९ ॥ २९ ॥ दीख्या लेऊं पिण आंसू तो आय, जमाई रोयां शोभ न पाय ६० बाल विधवा देखी लोक रोय, तिण रा म भोग बांछै सोय ६१ ॥ ३० ॥ डावरा रे माथे दियां द्वेष, लाडू दियो ते राग संपेख ६२ जाटणी रो उदक जात्यो जाय, चारो निरख्यां दूध दे गाय ६३ ॥ ३१ ॥ और गण रो थारे मांय आय, तिण ने दीख्या देई लेवो मांय ६४ नरक में जाय ण तसु ताणे, पत्थर ने कुवे तले कुण आणै ६५ ॥३२॥ कुण स्वर्ग ले जावे ताय, काष्ठ जल पर कुण ठहराय ६६ पइसो डूबै बाटकी तिराय, संजम तप सूं हलको थाय ६७ ॥ ३३ ॥ पातरे रंग कुंथवा दोहरा, काला लाल दे णा सोहरा ६८ म्हारे केलु सूं रङ्गवा रा भाव, क । केलु छोड़े किण न्याव ६९ ॥ ३४ ॥ कुजागां रा करै ए माथे, एक कर्ज मेटे निज हाथे ७० चोर हिंसक कुशीलिया

न, त्यांरा न दृष्टान्त सुचीन ७२ ॥३५॥ कीड़ी ने कीड़ो जाणै ते ण पण कीड़ी न मति जाण ७४ साधु थाका ने गाडे वे ण, किणही गधे वे । राथो जाण ७५ ॥ ३६ ॥ पुन्य मिश्र ऊपर गोथ, किण री एक फूटी कि री दोय ७६ पो री खो दीसां र, देखी हे ने उत्तर उदार ७७ ॥ ३७ ॥ थोथा चगा री भखारी विख्यात, ऊंदरा रड़-वड़ की ।री र ७८ कोयलां री राव वासण काला, वलि आंधा जीमण परु ण त्राला ७९ ॥ ३८ ॥ र ।ढ़ो काढ़े तार कांई, थाने डांडा ही सूझै नाहीं ८० वाय वंग घरटी उडै जाय, दोय थाप्यां संजम कि ठहराय ८१ ॥ ३९ ॥ एकलड़ो जीव कहो वि ण लेख, त्यांरे लेखे ही चोलड़ो देख ८२ व राख्यां ी परीषह थी भांजै, तो न्न थम रहे वि ण जे ८३ ॥ ४० ॥ श्वेताम्बरी शा थी घर छांड, तिण सूं राखां छां तीन सुडण्ड ८४ नार्य कहै दया ने रांड, रै पूत मा ने भांड ८५ ॥ ४१ ॥ डाकणियां डरै गारडू आयां, धु यां राडी भय प । ८६ कड़वा पकवान जुर सूं कहाय, मिथ्या जुर सूं साधु न सुहाय ८७ ॥ ४२ ॥ वांधी वाल्यां कि तेजरा तोड़ै, चारित्र वैराग विण

किम जोड़ै दद दियो रो दृष्टान्त, गुरु कुगुरु ऊपर शोभन्त ८९ ॥ ४३ ॥ भेषधारी पिण तप रे य, टोटो देवा गो के मिटाय ९० बणी बणाई णो रो बात, त तिण रा थी रु त ९१ ॥ ४४ ॥ सूत्र ब छेहड़े हिंस्या थापै, छेहड़े मो । मारू ज्यं वि ९२ पत्थर खोस्यां तिणने ई होय, तिण रे हाथ गो ते तूं जोय ९३ ॥४५॥ मा हरा घर रो नेहतो होय, द्रव्य ध या ने हां सोय ९४ ध अ ध ण हो य, नागा ढकिया कितरा गाम मांय ९५ ॥ ४६ ॥ बले ण देवाल्यो हुकार, ण बतावूं करलो विचार ९६ दियो कुणकां पर पग तीन चार, मी छै पिण तिण सूं न प्यार ९७ ॥ ४७ ॥ दियो सेत ना रो द न्त, छिद्र पेही ऊपर दा न्त ९८ हेम पछेवड़ी कहि अधिकाय, तिण ने कठिण सी समझाय ९९ ॥ ४८ ॥ शोभाचन्द ने कह्या शुभ न्याय, पाषाण ने सोनूं न कहाय १०० नेहत माँगो प किण न्याय, सुता श्वाव में मित्र बोलाय १०१ ॥ ४९ ॥ अविनीत त्रिया ने पिछाण, विनीत साधु ऊपर जाण १०२ क । संखेप थी ल्प मात, पाछे वर्णवी गली बात ५० चौपी विनीत अवनीत री तास, ..ासरे

तिण सूं हेतु पचास । ते इकतालीसमी ढाल में आख्या, तिण कारक इहां न भाख्या ॥ ५१ ॥ इत्यादिक कह्या हेतु अनेक, पूरा कह्या न जाय विशेष । हुवा भिक्खु उजागर ऐसा, ‌ त कालमें श्रीजिन जैसा ॥५२॥ तसु भजन चिंतामण रखो, त्यच्च पारश भिक्खु परखो, । म्हारे प्रव भाग्य माण इणकाल त-तरिया आण ॥ ५३ ॥ नित्य समरण कर नर नार, सुख सम्पति कारण र । दुः दोहग टालणहार, इह भव परभव सुखकार ॥ ५४ ॥ निर्मल ज्ञान नेत्रे करी निरखो, पूज भिक्खु विविध कर परखो । बर पूरो है तसु विश्वास, अति वंछत पूरण श ॥५५॥ बयालीसमी ढाल विमास, शुद्ध दूजो खण्ड सुप्रकाश । स्वामी जय श करण सुहाया, व भाग वले भिक्खु पाया ॥ ५६ ॥

॥ कलश ॥

न्त वारु धिक रु, स्वामनाज सुहा णा । भव उदधि तारण जग उद्धारण, ष भिक्खु रवि - यामणा ॥ वृद्धि म्पति दमन दम्पति, भ्रम भंजन अति भलो । हद द्धि हि गर सुमति गर नमो भिक्खु गुण नि गो ॥ १ ॥

तीय ख ।

सोरठा ।

आख्यो द्वितीय खण्ड रे, म सि मा उ सा प्रणम ।
मुनि वर्णन महिमण्ड रे, तीजो खण्ड निसुणो तुम्हें ॥१॥

वेणीरामजी स्वामी कृत ।

॥ दोहा ॥

चारित्र लीधो चूंप सूं, पाखण्ड पन्थ निवार ।
भवियण रे मन भांवता, हुवा मोटा अणगार ॥ १ ॥
उद्दे १ पूजा कही, समण निग्रन्थ नी जाण ।
तिण सूं पूज प्रगट थया, प जिन प ॥ २ ॥
तो आछी कही समण निग्रन्थ ने श्रीकार ।
चौरासी अति दीपती, सूत्र अनुयोग द्वार मझार ॥३॥
वले दशमा अंग अधिकार में, कही तीस उपमा तंत ।
समण भिक्षु ने शोभती, भाख गया भगवंत ॥ ४ ॥
वले षटदश उपमा, बहु श्रुतिने श्रीकार ।
उतराध्ययन इग्यार में, श्री वीर कह्यो वि तार ॥ ५ ॥
इण अनुसारे ओळखो, भिक्खु ने भली भंत ।
उपम गुण आछा घणा, त्यांरो पार न कोई प ॥६॥
गुणवन्त गुरु ना गुण गांवतां, तीर्थङ्कर नाम गौत बन्धाय ।
हिवै उपम सहित गुण वर्णवूं, ते सुणज्यो चित्तलाय ॥७॥

॥ ढाल ४३ मी ॥

(हरिया ने रंग भरिया जी निला जिन निरखूं नैन सूं एदेशी)

आदिनाथ आदेश्वरजी, जिनेश्वर जग तारण गुरु, धर्म आदि काढी अरिहन्त। इण दुषम आरै कर्म कटिया जी, प्रगटिया आदि जिणन्द ज्यूं, ए इचरज अधिक आवन्त॥ श्याम वरण अति सोहैजी. मन मोहै नेम जिणन्द ज्यूं, ज्यांरी वाणी अमीय समान। भवियण रे मन भायाजी, चित्त चाह्या तीरथ चा रमां. मुनि गुण रत्नारो खाण॥ साध भिक्खु सुखदायाजी मन भाया भवियण जीवने ॥ १ ॥ कालवादी आदि जाणीजी मत आणी मार्ग उथापवा, कुबध्याँ केलविया कूड़। अे पाखण्ड घोचा पोंचाजी कांई ज्ञान करी गिरवा मुनि, चरचा कर किया चकचूर ॥ साध० ॥ २ शंख उज्वल श्रीकारीजी, पयधारी दोनूं दीपता, नहीं विगड़े दूध लिगार। ज्यूं थे तप क्रिया कीधो जी, कर लीधी आतम उजली, पय दश यति धर्म धार ॥ ३ ॥ कंबोज देश नो घोड़ो जी, अति सोरो करै सिरदार ने, नहीं आणै अहिल लिगार। ज्यूं भवियण ने थे तार्‌याजी, उतार्‌या पार संसार थी, सूखे जासी मोख मझार ॥ ४ ॥ शूर शिरामण साचोजी, नहीं काचो लड़ता

कटक में, सुवनीत अश्व असवार। ज्यूं कर्म कटक दल दीधो जी, जश लीधो जाभो जगत् में, चढ़ सूत्र अश्व श्रीकार ॥ ५ ॥ हाथी हथणया परवारै जी, बल धारै दिन २ दीपतो, बधै साठ वर्ष शुद्ध मान। ज्यूं तयाली वर्ष लग जाभाजी, तप ताजा तेज तीखा रह्या, प्राक्रम पिण परधान ॥ ६ ॥ वृषभ सिंह खन्ध भारो जी, सिरदारी गायां गण मभे, थेट भार वहै भली भन्त। ज्यूं थे गण भार थेट निभायाजी, चलाया तीरथ चूंप सूं, सहु साधा में शोभन्त ॥ ७ ॥ सिंह मृगादिक नो राजाजी, तप ताजा दाढ़ा तेज सूं, जीव न जीपै जोय। ज्यूं आप केशरी नो परै गुंज्या जी, धूज्या पाखण्डी धाक सूं, थाने गंज सक्यो नहीं कोय ॥ ८ ॥ वासुदेव बल जाणोजी, बखाण्यो वीर सिद्धन्त में, शङ्ख चक्र गदा धरण हार। थारा ज्ञान दर्शन चारित्र तीखाजी, नहीं फीका त्यांकर तेज सूं, पूज्य पाखण्ड दियो निवार ॥ ६ ॥ आखा भरत नो राजाजी, अति ताजा सेन्या सभ करो, आणै वैर्यां नो अन्त। थे पाखण्ड सहु ओलखायाजी, हटाया बुध्य उत्पात सूं, तत्व बताया तन्त ॥ १० ॥ शक्रेन्द्र सिरदारी जी, बज्रधारी सुर में शोभतो, जक्षादिक ने जीपै जाण। जिम सूत्र बज्र श्रीकारीजी, बल धारी

बुध्य उत्पात्त सूं, पूज्य पाड़ी पाखण्ड री हाण ॥११॥ आदित्य उग्यो आकाशेजी विणाशे तिमिर तेज सूं अधिको करै उद्योत। ज्यूं थे अज्ञान अन्धारो मिटायोजी, बतायो मारग मुगत रो, घण घट घाली जोत ॥ १२ ॥ चन्द सदा सुखकारीजी, परिवारी ग्रह ना गण मझे, सोमकारी सोभन्त। ज्यूं चार तीरथ सुखदायाजी, मन भाया भवियण जीव रे, भिक्खु भला जशवन्त ॥ १३ ॥ लोक घणा आधारीजी, अति भारी धानांकर भर्यो, ते कोठागार कहाय। ज्यूं ज्ञानादिक गुण भरियाजी, परवरिया पूज्य प्रगट थया, आधार भूत अथाय ॥ १४ ॥ सर्व वृक्षां में अति सोहैजी, मन मोहै दीसै दीपतो, जम्बु सुदर्शण जाण। ज्यूं सन्ता में सिरदारी जी, मतभारी भिक्खु भरत में उपना इचरजकारी आण ॥ १५ ॥ सीता नदी सिरै जाणीजी, बखाणी वीर सिद्धन्त में, पांच सै जोजन प्रवाह। ज्यूं तप तेज अति तीखाजी, नहीं फीका रह्याज फाबता, सदाकाल सुखदाय ॥१६॥ मेरु नी उपमा आछीजी, नहीं काची कही कृपालजी, ते ऊंचो घणुं अत्यन्त। औषध अनेक छाजेजी, बिराजै गुण त्यांमें घणा, ज्यूं थे बहुश्रुति बुद्धवन्त ॥ १७ ॥ स्वयंभूरमण समुद्र रूड़ोजी, पूरो पाव राजु

पिहुलो कह्यो, प्रभूत रतन भरपूर। सागर जेम गम्भीराजी, शूरा वीरा गुण कर गाजता, सूत्र चरचा में शूर ॥ १८ ॥ ए षटदश उपम आछीजी, कांई सांची सूत्र में कही, बहुश्रुति ने श्रीकार। इण अनुसारे जाणोजी, पिछाणो करल्यो पारीखा, भिक्खु गुण भण्डार ॥ १६ ॥ उपमा अनेक गुण छाज्याजी, त्रिराज्या गादी वीर नी, पूज्य पाट लायक गुण प । समुद्र जेम अथागाजी, जल थाग जिन कह्यो नहीं, ज्यूं पूरा केम कहाय ॥ २० ॥ पाट लायक शिष्य भालीजी सुहाली प्रकृति सुन्दरु, भारमलजी गहर गम्भीर। पदवी थिरकर थापीजी, । आपी आचारज तणी, जाण सुविनीत धीर ॥ २१ ॥

दोहा ॥

भाग बली भिक्खु तणे, सन्त हुवा गण मांहि।
वर्णन संक्षेपे पवर, आखूं धर उछाहि ॥ १ ॥
केयक पण्डित मरण कर, कीधो जन्म कल्याण।
कर्म जोग केइयक टल्या, सुणज्यो चतुर सुजाण ॥ २ ॥
बड़ा संत भिक्खु थकी, जनक सुतन वर जोड़।
पिता स्वाम थिरपाल जी, फतेचन्द सुत मोड़ ॥ ३ ॥
बड़ा ढोला में था विहुं, राख्या बड़ा सुरीत।
सरल भद्र विहुं श्रमण शुद्ध, पूरी तसु प्रतीत ॥ ४ ॥
तपसी तप करता विहुं, शीत उष्ण वरसाल।
बड़ वयरागी विनय वर, रूड़ा मुनि अपपाल ॥ ५ ॥

निर अहङ्कारी निर्मला, निरलोभी निकलङ्क।
हलुआकर्मी उपधि करे, आर्जव उमय अवङ्क ॥ ६ ॥
सीतकाल अति सीत सहै, पछेवड़ी परिहार।
अन निशि देखी जाणियो, ए तपसी अ र ॥ ७ ॥
कोटे आप पधारिया, महिपति आवग हार।
मल ने ते बिहुं, ततक्षण कियो विहार ॥ ८ ॥
निज आतम तारण निपुण, चारु वेपरवाह।
तप मुद्रा तीखी घणी, रि हक शिवपद चाह ॥ ९ ॥

॥ ढा ९४ वीं ॥

(राणी भाखै हो दासी सांभल बात० ए देशी)

सन्त दोनूं हो शोभै गुणावन्त त २ त्यांसूं गीत पूर्ण भिक्खु णी। भि क्खु सेती हो ज्यांरे पूर्ण प्रीत २ गुण ग्राही रम घणी ॥ १ ॥ पद । य हो भिक्खु बुद्धि ना भण्डार २ न बहु दे तां युक्ति सूं। आप मूकी हो पद नो हंकार २ रजोरी वन्दना करै भक्ति सूं ॥ २ ॥ किण टोला हो तुमे सन्त कहिवाय २ इण विध गो पूछै णा। मान मूकी हो बोलै बिहुं मुनिराय २ म्हे भी णजी रा टोला तणा ॥ ३ ॥ रचा हो ने कोई पूछन्त २ तो न्त दोनूं इ भ ता। भिक्खु खै हो तेहिज जाणज्यो तन्त २ रूड़ी आ ता भिक्खु नी

राखता ॥ ४ ॥ म्हाने तो हो पूरी खबर न कांय २ भी णजी ने पूछी निर्णय करो। शुद्ध जाणो हो तेहिज सत्यवाय २ प्रगट कहे इम पाधरो ॥ ५ ॥ त्यांरा तपनो हो अधिको विस्तार २ कायर सुण कम्पे घणा। ति पामे हो शूरा हर्ष अपार २ सन्त दोनूंई सुहावणा ॥ ६ ॥ संजम पाल्यो हो बहु वर्ष श्रीकार २ विचरत बरलू आविया। धर्म मूर्ति हो ज्ञानी महा गुण धार २ हलुकर्मी हर्षाविया ॥ ७ ॥ शुद्ध तपस्या हो फतेचन्दजी सेंतीस २ अधिक कियो तप आकरो बारु करणी हो ज्यांरी विश्वाबीस २ चान्ति गुणे मुनिवर रो ॥ ८ ॥ पिता दीधो हो तसु पारणो ाण २ ठण्डी घाट बाजरी तणी। फत करले हो पारणो पहिचाण २ सरल पणे कहे सुत भणी ॥ ६ ॥ निरममती हो सुत सन्त निहाल २ प्रगट पथ्य कियो पारणो। कर गयो हो तिण जोग सूं काल २ सुमति जन्म सुधारणो ॥ १० ॥ एकतीसे वर्ष हो सम्वत ठार २ फतेचन्द फते कर गया। निरमोही हो तात निमल निहार २ थिरचित संजम अति थया ॥ ११ ॥ मुनि आयो हो रवा शहर माहिं २ संलेखणा मण्डिया सही। चिहुं मासे हो पारणा चित्त चाहि २ आसरै चवदे किया वही ॥ १२ ॥ थिर चित्त सूं हो

मुनिवर थिरपाल २ वर्ष वतीसे विचारियो। कर तपस्या हो मुनि कर गयो काल २ जीतब जन्म सुधारियो ॥ १३ ॥ जोड़ी जुगती हो तात सुतन जिहाज २ स्वाम भिक्खुरा प्रसाद थी। पण्डित मरणो हो ओतो भवदधि पाज २ पाम्या हे पर्म समाध थी ॥ १४ ॥ सखरी भाखी हो चमालीसमी ढाल २ स्वाम भिक्खु गुण सागरु। वारु करने हो जय जश सुवि-शाल २ अधिक गुणारा आगरु ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

समत अठारह वतीस में, भिक्खु बुद्धि भण्डार।
प्रकृति देख साधु तणी, लिखत कियो तिणवार ॥ १ ॥
सहु साधांने पूछने, बांधी इम मर्याद।
सुखे संजम पालण भणी, टालण क्लेश उपाधि ॥ २ ॥
पद युवराज समापियो, भारीमाल ने जाण।
सर्व साध ने साध्वी, पालज्यो यांरी आण ॥ ३ ॥
भारीमालजी री आज्ञा थकी, विचरवो शेषे काल।
चौमासो करिवो तिको, आज्ञा ले सुविशाल ॥ ४ ॥
दीक्षा देणी अवर ने, भारीमाल रे नाम।
पिण आज्ञा लीवां विना, शिष्य न करणो ताम ॥ ५ ॥
इच्छा हुवै भारीमाल री, शिष्य गुरु भाई सोय।
पदवी देवै तेहनें, तसु आज्ञा अवलोय ॥ ६ ॥
एक तणी आज्ञा मझे, रहिवो रूड़ी रीत।
एहवी रीत परम्परा, बांधी स्वाम वदीत ॥ ७ ॥

टोलाथ्यां सूं कोई टले, एक दोय दे आदि।
धूर्त बुगल ध्यानी हुवे, तिणने न गिणवो साध ॥ ८॥
तीर्थ में गिणवो न तसु, चिउं संघ नो निन्दक जाण।
एहवा ने वान्दे तिके, आज्ञा बार पिछाण ॥ ९॥

॥ ढाल ४५ मीं ॥

(पाड़वा बोल म बोल ए देशी)

एहवो लिखत अमाम, सखर मर्याद हो बांधी स्वामजी। नीचे साधांरा नाम, कठिण संजम ने पालण कामजी ॥ १ ॥ मेटण क्लेश मिथ्यात, थिर चित्त थापण हो मर्यादा थुणी। चारु बुद्धि विख्यात, सुगुण सुबुद्धि हो हर्ष पामै सुणी ॥ २ ॥ अपछन्दा वनीत, दोषण काढ़े हो इण मर्याद में। कुबुद्धि कहै कुरीत, अवगुण ग्राही हो आत्म असमाधि में ॥३॥ बिगड़्यो पछै वीरभाण, आज्ञा लोप्यां सूं स्वामी लगो कियो। पाछे कह्यो प्रबन्ध पहिछाण, दर्शण मोह पिण तिण ने दबावियो ॥ ४ ॥ टो रजी तन्त-ार, हाजर रहिता हो स्वामी हरनाथजी। न्त दोनूं सु कार, वर जश चारु हो तास विख्यातजी ॥५॥ भारीमाल ने भाल, पद युवराज पूज समापियो। सन्त बड़ा सुविशाल, दम्भ मेटीने हो थिर चित थापियो ॥ ६ ॥ सोम्य मूर्ति सु कार, स्वाम प्रशंस्या अंत्य समय सही। साझ थी संजम सार, कीर्ति हो

आप मुखे कही ॥ ७ ॥ वगड़ी शहर विशेष, स्वाम टोकरजी हो संथारो लियो। देश ढुंढार में देख रे, हद संथारो हरनाथजी कियो ॥ ८ ॥ स्वाम भिक्खु रे प्रसाद, सन्त दोनूं हो जन्म सुधारियो। उपजे न अहिलाद, स्मरण ।चो ति सुखकारियो ॥ ९ ॥ भारीम युवराज, से स्वामी नो अन्त तांई शिरे। पद्बोधर भव पाज, गशण आछो वर्ष अठन्तरे ॥ १० ॥ लिखमेजी संजम लीध, कर्म प्रभावे गण सूं न्यारो थयो। पड़िवाई कहो कद सिद्ध, देसुण व पुद्ग हो उत्कृष्ट जिन कह्यो ॥ ११ ॥ खैरामजी सु गड, स्वाम भिक्खु पै संजम आदर्यो। भेष-धार्यां ने छंड, ुद्ध मन सेती यो पवर चरण धर्यो ॥ १२ ॥ पारख जाति पिछाण. पारख ।ची हो थे पूर्ण करी। लोहावट ना सुजाण, चरण अराध्यो हो थिर चित्त दरी ॥ १३ ॥ धर तप छेहड़े धिन, छतीस तेला चोला में चलता रह्या। अखै दिवाली दिन, वर्ष इकसट्ठ परभव में गया ॥ १४ ॥ रोजी लुटक धार, पंच काया थी भवो अनन्त गुणा। भवी थी धिकार, ज्ञानी देवां भाख्या पडिवाई अनन्त गुणा ॥ १५ ॥ सन्त वड़ा सु राम, वासी लोहावट ना पोत्यावन्ध सही। मभाया भिक्खु

स्वाम, सुरतरु सरीखो हो चरण लियो सही ॥ १६ ॥
देव मूर्ति देख, धुनि ईर्या नीं हो नि धारणा।
रु व विशेष, सोम्य प्रकृति सु र मा ॥
१७ ॥ । रै बयाली बा , निर्मल चारि हो
स्वामी गुण नि रो। सठे वर्ष त्रि स, दिवस
पचीसे अणशण ति भलो ॥ १८ ॥ र म भिक्खू
साख्यात, तत्व ओल ई बहुजन रिया। वर्णा-
विये सुवात. र म सौभागी महा कारिया ॥१६॥
समरूं हूं दिन रैण, द यां सूं हो हिवड़ो
उ से। चित्त माहिं पामूं चैन, वंछित पूर्ण तू मुझ
मन ब ॥ २० ॥ पांच चाल ी ढा , मण
शोभाया हो भजन वंछित फलै। जय जश रण
विशाल, रण ति मन चिन्तत मि ॥ २१ ॥

॥ सोरठा ॥

क्षुल्लक तिलोकचन्द रे, वासी चेलावासरा।
चन्द्रभाण कर फन्द रे, जिलो बांध नै फटाविया ॥ १ ॥
मौजीराम गण माहि रे, शुद्ध मन सूं संजम लियो।
कर्मा दियो धकाय रे, ते पिण क्षुल्लक जाणज्यो ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

शिवजी स्वामी शोभता, स्वाम तणा सुविनीत।
पण्डित मरण कियो प्रवर, गया जमारो जीत ॥

॥ सोरठा ॥

आति चोरड़िया जाण रे, पुरला वासी पि णज्यो।
चारित्र चन्द्रभाण रे, शुद्ध सूं संजम लियो ॥ १ ॥
म बुद्धि भरपूर रे पिण प्रकृति अहङ्कारनी।
अविनय अवगुण भूर रे, आज्ञा कठिण आराधवी ॥ २ ॥
मिलो बांधियो जाण रे, तिलोकचन्द सूं तुरत ही।
में अधिको मान रे, साध फंटाया अपर ही ॥ ३ ॥
संत अवर समझाय रे, स्वाम भिक्खु सिंह सारिषा।
एक २ ने ताहि रे, छोड्या विहुं ने जु जुआ ॥ ४ ॥
अवगुण अधिक अजोग रे, त्यां बोल्या भिक्खु तणा।
प्रत्यक्ष कषाय प्रयोग रे, असाध प्ररूप्या स्वाम ने ॥ ५ ॥
भिक्खु बुद्धि भण्डार रे, शुद्ध मन सूं झाविया।
प्राश्चित कर अङ्गीकार रे, पाछा आया गण मुझे ॥ ६ ॥
सहु ने किया निशङ्क रे, आया डंड अंगीकरी।
विकओ यामें बंक रे प्रत्यक्ष लोकां पेखियो ॥ ७ ॥
श्रमणी संत समाघ रे, किण ने डंड न ठहराविया।
सहु ने कह्या असाघ रे; त्यांराहिज पग वांदिया ॥ ८ ॥
मान घणो घट माहि रे, विगड़ी तिण सूं वातड़ी।
प्राश्चित नहीं ले ताहि रे, विहुं ने साथे छोड़िया ॥ ९ ॥
वर्णन बहु विस्तार रे, रास मांहि भि रच्यो।
अल्प इहां अधिकार रे, दाख्यो में प्रस्ताव थी ॥ १० ॥
भणन्दे वि विचार रे, संथारो कीधो सही।
चौविहार वि धार रे, गाम विठौरै पूज्य गण ॥ ११ ॥
उपनी तृषा अपार रे, सवरै दिन सूं निरूसो।
सेणा करै संथार रे, तिण सूं पहलां तोल ने ॥ १२ ॥

पनजी क्षुल्लक पेख रे, संतोकचन्द शिवराम ने।
चन्द्रभाणजी देख रे, दोनूं मर्जी फटाकिया ॥ १३ ॥
केई पोते हुआ न्यार रे, केइकां ने दूरा किया।
स्वच्छन्दा अवधार रे, त्यांनें चारित्र दोहिलो ॥ १४ ॥

॥ ढाल ४६ मी ॥

(करकसा नार मिली० ए देशी)

नीत निपुण नगजी नी निर्मल, कुड़चां ना वस-वान। संथारो कर कारज साम्यो, कियो जनम कित्याण ॥ सुवनीत शिष्य आय मिल्या। धन्य २ हो भिक्खु थांरा भाग्य, सुखदाई शिष्य आय मिल्या ॥ १ ॥ स्वाम राम बुन्दी ना वासी, जाति भावकी जाण। जुगल जोड़ले दोनूं जाया, सोम्य भद्र सुवि-हाण ॥ सु० ॥ २ ॥ करि मनसोबो आया कैलवे, पूज भिक्खु पें ताप। आज्ञा राम भणी आपी ने, संजम दिरायो स्वाम ॥ ३ ॥ इह अवसर में श्रीजी द्वारे, साह भोपो सुत सार। नाम खेतसो निर्मल नीको, थयो संजम ने त्यार ॥ ४ ॥ दोय व्याह पहिली कर दीधा, तीजो करता त्यार। उत्तम जीव तसी अधिको, इणरे वंछा न लिगार ॥ ५ ॥ बहिन दोय रावलियां व्याही, जाय तिहां किण वार। बेन बनोई न्यातीलां ने, समझावें सुखकार ॥ ६ ॥ विणज करत मुख जयणा विध सूं, वर वैराग वधाय। चित्त चारित्र

लेवा चढ़तो, आज्ञा मांगी नहीं जाय ॥ ७ ॥ इसा
विनीत तात ना अंत्रिका, इतले तिण पुर माहीं।
संजम ले रंगुजी सती, सांभल्या भोपे साह ॥ ८ ॥
भोपो साह कहै खेतसी भणी रे, चित्त तुझ लेण
चरित्र। कहै खेतसी वेकर जोड़ी, मुझ मन अधिक
पवित्र ॥ ९ ॥ आज्ञा हर्ष धरी ने आपी। वदे भोपो
साह —। रं जो भे । करो रे, इणरा महोछव
अधिकाय ॥१०॥ इतोसै संजम दरियो, भिक्खु
प रे हाथ। विहार की ठारे । रै तो
गयो तात ॥ ० ॥ ११ ॥ भिक्खु पूछ्यां त
जोगी भाखै, म चिन्ता किम मोय। पहिली उवे
व मिलिया, य विरह पड्यो नहीं कोय ॥
सु० ॥ १२ ॥ पर विनीत खेतसी प्रगट्या, स्वा भणी
सुखकार। कार्य भलायां वेकर जोड़ी, तुर्त करण ने
त्यार ॥ सु० ॥ १३ ॥ को ठिन वचन करि
भिक्खु, ी दिये सुखकार। ज्ञान्ति हर्ष र धरै
खेतसी, तहत वचन तंतसार ॥ १४ ॥ हर्ष धरी रहै
भिक्खु हाजर, न्तरंग प्रीत पार। सेव री
रिझा स्वामी, सो जाण ि या तंतसार ॥सु०॥१५॥
तयुग रिपा कृत विनय सूं निमल सतजोगी
नाम। गण ाधार खेतसी गिरवो, सरायो भिक्खु

स्वाम ॥ सु० ॥ १६ ॥ तजुगी चरित्र हीं छै सगलो, विवरासुध विस्तार। इहां संक्षेप करी ने ख्यो, त वर्णन मांहिं सार ॥ ० ॥ १७ ॥ पांच पांच पवर थोकड़ा, बर कि बोहली बार। उत्कृष्टो दिव अठारह, एकटंक उदक र ॥ सु० ॥ १८ ॥ उभा रहिवारी तपस्या ति, ए पहोर उन्म । जे बहु जाणज्यो रे, तसी जो गुण ण ॥ ० ॥ १९ ॥ सीत उष्ण मुनि सह्यो धिको, क घ सुखकार। स्वाम जुगी म ां रे, वै हर्ष पार ॥ ० ॥ २० ॥ तजुगी त । प्रसंग थी रे, धिक हुवो उपगार। वे बहिन एजे रित्र लीधो, ते आगे चलसी विस्तार ॥ ० ॥ २१ ॥ ॥ वर्ष वीस मी नी सेवा, छेहड़ा विचार। भारीम नी छेह भक्ती, रै वर्ष ठार ॥ सु० ॥ २२ ॥ ले णा छेहड़े री सखरी, स रोई संथार। भि भारी पछै पर-भव में, सीये वर्ष उदार ॥ ० ॥ २३ ॥ भिक्खु स्व प्रसाद थी रे, तजुगी जम भार। पछै स्वामजी संजम पचख्यो, गो भिक्खु तणो उप र ॥ सु० ॥ २४ ॥ भिक्खु भांज्या म घणारा, भिक्खु भव-दधि पाज। भिक्खु दीपक भरत क्षेत्र में, जगत

उद्धारण जिहाज ॥ सु० ॥ २५ ॥ भाग वले भिक्खु
थ भारी, शिष्य मिलिया सुविनीत। भिक्खु याद
वै निशदिन मुझ, पर्म भिक्खु सूं प्रीत ॥सु०॥२६॥
पवर द्वा कही छयाली मी, तजुगो नो विस्तार।
सेत्र रै स्वामो नो खरी, जय रण उदार
॥ सु० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

साम साधु सरल, संता ने सुखदाय।
भद्र प्रकृति भारी घणी, नीत निपुण नरमाय ॥ १ ॥
वर्ष पसठे उपवास में, भिक्खु पाछे भाल।
पाली में परभव गया, निर्मल साम निहाल ॥ २ ॥
ऋषि रलियामणा, इन्दुगढ़ में आय।
चोला में चलता रहा, सितरे वर्षे वाय ॥ ३ ॥
देवगढ़ दीक्या ग्रही, संभुजी सुविचार।
वार २ शङ्का पड़ी, छोड़ दियो तिण वार ॥ ४ ॥
तो पिण गण वारे छतो, करे साधां नी सेव।
साध आहार आण्यां पछे, आपल्यावे नित्यमेव ॥ ५ ॥
पीत मुनि थी अति पवर, मुनि जिण गाम र।
आवे दर्शण करण कूं, पिण शङ्का थी हुवो खुवार ॥६॥
संघजी थो गु री, लियो चित्त चाहय।
शिरियारी में नीकल्यो, दुधर दिखाय ॥ ७ ॥
तदनन्तर संजम लियो, वगल्या बोहरा जोय।
एक चालीसे आसरे, न ी सोय ॥ ८ ॥
स्वाम भिक्खु पाछे सही, एकोतरे अवलोय।
तेला में च । रह्या ध्यान में जोय ॥ ९ ॥

॥ ढाल ४७ मी ॥

(परम गुरु पूज्यश्री मुझ प्यारा रे परदेशी)

नानजी पछै चरण निहालो रे, नि नेम मोटो गुणमालो रे। सी रोयट नो सुविशालो ॥ राय ने नित्य वन्दो रे ॥ १ ॥ पवर चर्ण भिक्खु से पायो रे, स बहु वर्ष ोभाओ रे। नि जिन शासन दीपायो ॥ भिक्खु शिष्य शोभ नित्य वन्दो रे ॥ २ ॥ शहर नैणवे कियो थारो रे, भवसायर नो पारो रे। ओ तो भिक्खु तणो उपगारो ॥ ३ ॥ तदनन्तर वर्ष चमालो रे, बेणीरामजी वि विशालो रे। निकलंक चरण चित्त निहालो ॥ ४ ॥ दीख्या भीखणजी स्वामी दीधो रे, ड़ी रा प्रसिद्धि रे। मुनि गण माहिं ोभा ीधी ॥ ५ ॥ हुवो बेणीराम बि नीको रे, प्रबल पण्डित चर वादी तीखो रे। मुनि लियो सुजश नो टीको ॥६॥ वारु व चत सखर व णो रे, सखर हेतु दृष्टान्त सुजाणो रे। भर्त में प्रगट्यो जिम भाणो ॥ ७ ॥ हद देशना में हुंशि रो रे, ोताने गे ि प्यारो रे चि माहें पामै चमत्कारो ॥ ८ ॥ म देश ज यो रे, पडी सूं चर र तायो रे। बहु जनने लिया समझायो ॥ ९ ॥ त्यांरी धा

सूं पाखण्ड धूजै रे, वेणीराम केशरी जिम गूंजै रे। प्रगट हलुकर्मी प्रतिबुजे ॥ १० ॥ उत्पत्तिया है वुद्धि उदारो रे, समझाया घणा नरनारो रे। हुवो जिन शासण शिणगारो ॥ ११ ॥ घणा ने दियो संजम भारो रे, धर्म वृद्धि-मूर्त्त सुखकारो रे। ए तो भिक्खु तणो उपगारो ॥ १२ ॥ कीधो स्वाम भिक्खु पछै कालो रे, शहर चासटु में सुविशालो रे। संवत अठारह सितरे निहालो ॥ १३ ॥ भिक्खु तास्या घणा नर-नारो रे, भवितारक भिक्खु विचारो रे। स्वामी जय जश करण श्रीकारो ॥१४॥ सेंतालीसमी ढाल सुहायो रे, भिक्खु शिष्य मोटा मुनिरायो रे। स्वाम संग परम सुख पायो ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

तिण अवसर कोटा तणा, दौलतरामजी देख।
आया तसु टोला थकी, सन्त च्यार सुविशेष ॥ १ ॥

॥ सोरठा ॥

दोय रूपचन्द देख रे, चारु अरु वर्द्धमानजी।
सूरतोजी संपेख रे, स्वाम गणे संजम लियो ॥ १ ॥
रूपचन्द बहुमान रे, छूटो तेह प्रयोग थी।
प्रकृति अजोग पिछाण रे, सूरतो पिण छूटक थयो ॥२॥

॥ दोहा ॥

बड़ा सन्त वर्द्धमानजी, संजम सरल सुधार।
विचरत ए आविया, देश ढूंढाड़ मझार ॥ २ ॥
लू रा कारण थी लियो, मारग में संथार।
सम्वत् अठारह पचावने, लीधो संजम भार ॥ ३ ॥
लघु रूपचन्द स्वामगण, माधोपुर रे माहि।
अणशण रो धंधो कियो, बेणीरामजी पाहि ॥ ४ ॥
पछे प्रणाम कचा पड्या, बोल्यो पहवी वाय।
हूं थारे नहीं काम को, रज कांकरो थाय ॥ ५ ॥
इम कही ने अलगो थयो, काल कितो इम थाय।
एक चेलो कीधां पछे, आयो इन्द्रगढ़ मांय ॥ ६ ॥
शिष्य तज कहै गृहस्थां भणी, तन्त सूत्र मुझ ताम।
भिक्खु ने बहिरावज्यो, मुझ गुरु भिक्खु स्वाम ॥ ७ ॥
इम कही साध पणो पचख, दियो संथारो ठाय।
पांच दिवस रे आसरे, परभव पहोंतो जाय ॥ ८ ॥

॥ सोरठा ॥

अति भेष ने जाण रे, मयारामजी मूकियो।
प्रत्यक्ष ही पहिचाण रे, भेषधारां में आवियो ॥ ३ ॥
भेषधारी ने छंड रे, संजम लीधो स्वाम पे।
बहु वर्ष चरण सुमण्ड रे, नि कालवादी थयो ॥ ४ ॥
विगतो नाम विचार रे, वाली वोरावड़ तणो।
संजम ले सुखकार रे, कर्म प्रभावे नीकल्यो ॥ ५ ॥

। ४६ मी

(बाजोट पर नहीं बेसणो मुनि पग ऊपर पग मेल० एदेशी)

तदनन्तर टूंगचनावासी, सुखजी सु कार। स्वाम भिक्खु पे संजम लीधो आणी हर्ष अपार रा॥ भिक्खु स्वाम उजागर परा सुविनीत शिष्य जिन मार्ग जमायो रे॥ सुगुण परम पूज रे प्रसंग सुज्ञानो जयजश छायो रे॥ १॥ भिक्खु स्वाम पछै चौसठै कांई हर देवगढ़ सार। अणशण कर आतम उजवालियो तो शुद्ध दश दिन संथार॥ २॥ वर्ष तेपने शिरियारी वासी, हेम आछा हद जाति। संजम स्वाम समाप्यो सुवर्णन, हेम नवरसे विख्यात॥ ३॥॥ उत्पत्तिया बुद्धि गला, स्वामी हेम खर सुविनीत। वल बुद्धि पुन्य पोर, कांई पूर्ण पूज्य सूं प्रीत॥ ४॥ परम विनयवन्त परखिया, वारु बुद्धि भारी सुविचार। हद कियो सिंघाड़ो हेम नो, भारी ज्ञानी गुणारा भराडार॥ ५॥ हेम सुनि हिया तणा, अरु हेम स्वामी हितकार। हेम सुमति गरु, अरु हेम गुप्ति गुण र॥ ६॥ हेम दिस दीपतो, मुनि हेम मोटो महाभाग। हेम उजागर ओपतो वर हेम हिये वैराग॥ ७॥ हेम र्या धुनि गोपती, गति जाणै चाल्यो गजराज। हेम गरु र

गहरा घणा, ओ तो हेम गरीब निवाज ॥ ८ ॥ हेम
दया दि में घणी, त दत्त हेम सधीर । हेम
शील हीं रम रह्यो, रु कर्म काटण बड़वीर ॥९॥
हेम ग रहित रतरु कांई हेम मेरु जिम धीर ।
हेम चिन्तामणि ।रीषो, ो तो हेम जाणै पर
पीर ॥ १० ॥ न्दर द्रा हेमनी, रु तिशय
कारी ऐन । पेखत चित्त प्रस हुवे, चित्त माहें पामै
चैन ॥ ११ ॥ सम्बत् अठारह से तेपने पछै, धर्म
वृद्धि अधिकाय । बंक चुलिया में बारता आतो
प्रत्यक्ष मिली इहां आय ॥ १२ ॥ बारह संत तो आगै
हुंता कांई स्वाम भिक्खु पै सोय । हेम हुवा संत
तेरमा, त्यां पछे न घटियो कोय ॥ १३ ॥ भा ावली
भिक्खु तणो, शिष्य हेम हुवा वृद्धिकार । ाडी
पग मांडे नहीं, पड़ै हेमनी धाक अपार ॥ १४ ॥ चौथे
रे सांभलया, एतो क्षमा शूरा अरिहन्त । प्रत्यक्ष
रे पञ्चमे, एतो हेम सरीषा सन्त ॥ भि० ॥ १५ ॥
भिक्खु भारीमाल षराय रे, बर्तारा में हेम बदीत ।
चर्चा वादी शूरमा, लिया घणा पाखण्ड्यां ने जीत
॥ भि० ॥ १६ ॥ घणा जणा ने संजम दियो, देश
व्रत घणानें सुलम्भ । बहु भणाया पंडित किया, हेम
जिन शासन रो थम्भ ॥ भि० ॥ १७ ॥ हेम नवरसा

में कह्यो, वर हेम तणुं विस्तार । ग्रन्थ वध तो जाणने, इहां संक्षेप्यो धिकार ॥ भि० ॥ १८ ॥ भारी माल चलियां पछै, अपराय तणो वरतार । उगणीसे चौके समै, शिरियारी में न्यार ॥ भि० ॥ १९ ॥ भाग अब भिक्खु तणा, हुवा सन्त शासण शिणगार । हेम गजेन्द्र समोगुणी, वलि खं अवर णगार । भि० ॥ २० ॥ आठ चालीसमी ोभती खी ढाल रसाल र । स्वाम भिक्खु गण सुर तरु, ो तो जय जश करण उदार ॥ भि० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

तदनन्तर तपसी भलो, वर चपलोत विचार ।
वासी केलवा नो पवर, उदैराम अधिकार ॥ १ ॥
पचावने पाली मझे, पूज भीखणजी पास ।
श्रावण में संजम लियो, अधिको धर्म उजास ॥ २ ॥
अति उमंग तप आदर्यो, वर आंबल वर्द्धमान ।
चयालीस ओली लगें, चल्योज चढ़ते ध्यान ॥ ३ ॥
अवर तप कीधो अधिक, छठ २ आदि विचार ।
आठ सौ इकतालीस आसरे, आंबल किया उदार ॥४॥
सांडे स्वाम पछै सही, सखरो कर संथार ।
चेलावास चलतो रह्यो, भारी माल उतारो पार ॥५॥

॥ सोरठा ॥

तदनन्तर तिणवार रे, खुशालजी संजम लियो ।
प्रकृति कठिण अपार रे, कर्म जोग थी नीकल्यो ॥१॥

मोटो जाति सोनार रे, वासी बारचिया तणो ।
स्वाम कने समाचार रे, आय कहै इह रीत सूं ॥ २ ॥
अति कायो हुवो वाप रे, आज्ञा दी मुझ इण परे ।
तू मुझ क्यूं दे ताप रे, कर तुझ दाय आवे जिसो ॥३॥
म्हारी कानी सूं जाण रे, जोगी जति के ढूंढ़ियो ।
इक नर सुणतां कहि वाण रे, स्वामी तब संजम दियो ॥४॥
प्रकृति तणे प्रताप रे, म पालणो दोहिलो ।
कठिन परीषाह ताप रे, छूटो ते तब छिनक में ॥५॥
नाथो जी पोरवाल रे, वासो देवुरी तणो ।
सुत गृह छांडी सार रे, संजम सतरे स्वाम पै ॥ ६ ॥
जीवा लोलपी जाण रे, मुनि बांधी मर्याद ने ।
छूटो तेह पिछाण रे, पिण श्रद्धा सनमुख तो ॥ ७ ॥

ढा ४६ मी

(जै जै जै गणपति रे नमूं पदेशी)

समत ठारे वर्ष सतावने, गाम रावलियां गुणिये । लघु वेस ऋषराय दीख्या ली, थिर चित्त सेती थुणिये, जै जै जै गणपति रे नमुं ॥ १ ॥ बंध जाति चातुरो साह सुतवर नाम रायचन्द नीको । वर्ष इग्यारह आसरे वय में, संजम स र सधीको ॥ ॥ जै० ॥ २ ॥ हथिणी होदे हर्ष हुओ अति, मातु कुशालां वारु । साथे संजम पूज समाणयो, चैत्री पुनम चारु ॥ जै० ॥ ३ ॥ प्रबल बुद्धि गुण पुन्य पेखने, पर्म पूज फरमायो । पद लायक ए पुन्य पोरसो,

वचनामृत वरसायो ॥ ४ ॥ दिशावान ऋषराय दीपतो, भाग्य वलो वुद्धि भारी। हस्तमुखी मूर्त्ति हद हर्षत, पेखत मुद्रा प्यारी ॥ ५ ॥ पाट तीजै आगुंच परूप्या, स्वाम वचन सुखदाया। जम्बू स्वाम जैसा जैवन्ता, जाभा ठाठ जमाया ॥ ६ ॥ अन्तकाल भिक्खु ने अधिको, साभ्क सखर सुखदा।। भारी माल रे पास भुजागल, रायचन्द ऋषराया ॥ ७ ॥ गुणंतरै वर्ष भारीमाल नी आज्ञा ले अगवाणी। प्रथम शिष्य ऋष जीत कियो, निज पाट लायक सुविहाणी ॥ ८ ॥ भारीमाल ने साभ्क दियो अति, अन्त समय अधिकायो। आप ओजागर अधिक अनोपम, दीन दयाल दीपायो ॥ ६ ॥ तस उपगार तणो वर्णन, करतां अति ग्रंथ वधियो। भिक्खु तणो सम्बन्ध इहां, तिण कारण संखेपियो ॥ १० ॥ संसारी लेखे मामा सतजुगी महा मतिवन्ता। भल भाणेज रायचन्द भणिये, जशधारी जैवंता। भिक्खु ऋष अति भाग वली, शिष्य मिलिया रायचन्द नीका। गिरवा गहर गंभीर गुणागर पूज्य, प्रथम ही परी।। ॥ १२ ॥ वहु वर्षां लग मार्ग नी वृद्धि, जिन जी गुं जाणी। भिक्खु रे ति भाग्यवली, ऋष-राय मिल्या शिष्य आणी ॥ १३ ॥ ऐसा भिक्खु

...प उजागर, शिष्य पिण मिल्या सरी । तस पग
छेहड़े सन्त हुवा ते, सांभलिये सु छिका ॥ १४ ॥
ए गुणपचासमी ढाल अनुपम, मिलशो सन्त मन
मान्यो । कहिये धर्म बृद्धि नो कारण, जय जश
णं सुजाणयो ॥ १५ ॥

दोहा

समत अठारे सतावने, जेठ मास में जोय ।
पिता पुत्र घर चरण पक्ष, हर्ष घणो अति होय ॥ १ ॥
ताराचन्दजी तात सुत डूंगरसी महामण्ड ।
पिता भार्या परहरी, सुतन सगाई ॥ २ ॥
बड़ बैरागी सन्त बिहुं, सखरो कर संथार ।
भिक्खु स्वाम पछे उभय, समचित्त जन्म सुधार ॥ ३ ॥
अणशण इकतीस दिन, ताराचन्द उवेख ।
दश दिन अणशण दीपतो, डूंगरसी ने देख ॥ ४ ॥
तदनन्तर संजम लियो, बरल्या बोहरा ताहि ।
जीवो मुनि तासोल नो, महा मोटो मुनिराय ॥ ५ ॥
सरल भद्र प्रकृति सखर, तीन पाट नी ताम ।
सेव करी साचे मने, धुन सुविनय में धाम ॥ ६ ॥
भिक्खु भारीमाल पाछे भलो, नेउए वर्ष निहाल ।
गोगुंदे अणशण गुणो, महा मुनि गुणमाल ॥ ७ ॥

॥ ढाल ५० मीं ॥

(चेत चतुर नर कहे तने सतगुरु परदेशी)

जोगीदासजी स्वामी जोरावर, तदनन्तर त्रि
हथागी । स्वाम भीखणजी संजम दीधो, बाल

पणौ वड़ वैरागो। भ्रम छांड भिक्खु शिष्य भजले, तज मिथ्या मति तालंदा। कम जा काटो करणी र, पर्म ज्ञान पर्मानन्दा ॥ १ ॥ हर केलवा रा वासी शुद्ध. जोगीदास साचा जोगी। सखर सौभागी मता त्यागी, भ सुमति पिण नहीं भोगी ॥ २ ॥ अल्प काल में अचाण चकरो. शहर पीसांगण में सुणियो। चौविहार संथारो चोखो. थिर चित्त सूं मुनिवर थुणियो ॥ ३ ॥ गुणसटे वर्ष मुनि गुणवन्तो. पूज्य छतां परभव पहुंतो। त्म तास्यो जन्म सुधास्यो, हियै निर्म ऋषराज हुंतो ॥ ४ ॥ तदनन्तर जोधो मारू ते, गाम केरड़ा ना गुणियो। स्वाम भिक्खु स्वहथ संजम शुद्ध. भारी तपसी तप भणियो ॥ ५ ॥ । । रे, तप उतकृष्ट पणो पियो। सरल भद्र मुनिवर सौभागो, जाप विविध तन मन जपियो ॥ ६ ॥ दिन अड़तीस कोचलै दोप्यो संथारो खरो सुणियो। स्वाम पछै परभव सुमति शुद्ध, धो धन माता जणियो ॥७॥ शहर खेरवा रा भगजी शुद्ध, आज्ञा दे बहिन वड़ी। संजम भिक्खु स्वाम समाप्यो. खर विनय थी शोभ चढ़ी ॥ ८ ॥ ति वैद हता जश धारी भगजो भक्ति करी भारी। भिक्खु भारीमा ऋषराय तणी भल,

पेखत ही मुद्रा प्यारी ॥ ६ ॥ वराय तणो वरतारे रूड़ो. पंडित मरण मुनि पायो। निनाणूवे आत्म ने निन्दी, शुद्ध परिणामे शोभ गो ॥ १० ॥

॥ सोरठा ॥

जोगड़ जाति सुजाण रे, वासी बीदासर तणुं।
पूज समीप पिछाण रे, भागचन्द आधी करी ॥ १ ॥
बारु गुणसठे वासरे, चारित्र पालो चूंप सूं।
वर्ष कितेक विमास रे. कर्म जोग थी नीकल्यो ॥ २ ॥
चन्द्रभाणजी माँहि रे, रह्यो पञ्च मास आसरे।
भारीमाल पै आय रे, कहै मुझ ने ल्यो गण मझे ॥ ३ ॥
हूं रह्यो चन्द्रभाण माँहि रे, त्यांने साध न श्रद्धियो।
थे मोटा मुनिराय रे, साध श्रद्धतो स्वाम गण ॥ ४ ॥
भारीमाल ऋषराय रे, छेद दियो षटमास रो।
लियो तास गण माँहि रे, अवलोकी भि लिखत ॥ ५ ॥
आपां मांहिलो जाण रे, जाय चन्द्रभाणजी मझे।
अल्पकाल पहिछाण रे, आहार पाणी भेलो करे ॥ ६ ॥
पिण आपां ने साध रे, श्रद्धे शुद्ध मन सूं सही।
श्रद्धे तास असाधं रे, नवी दीख्या देणी न तसु ॥ ७ ॥
यथायोग दण्ड जाण रे, दे लेणुं तसु गण मझे।
वर्ष सैंतीसे वाण रे, लिखत भिक्खु ऋष नो कियो ॥ ८ ॥
पहलो लिखत अवलोक रे, नवी दीख्या दीधी न तसु।
छेद दे मेट्यो दोष रे, भारीमाल व्यवहार थी ॥ ९ ॥
पासत्था पास पिछाण रे, आहार आद लेवै देवै तसु।
निशीथ बीस में जाण रे, डंड चौमासी दाखियो ॥ १० ॥
चौमासी डंड स्थान रे, वार वार सेव्यां छतां।
व्यवहार प्रथम कही वाण रे, चौमासी प्राछित तसु ॥ ११ ॥

इम बहु न्याय विचार रे, वलि मर्याद विमास ने।
वारु देख व्यवहार रे, छेह देई माहें लियो ॥ १२ ॥
बीत्यो कितोयक काल रे, फिर छुटक थयो एकलो।
इक शिष्य कीधो न्हाल रे, नाम भवानजी तेहनो ॥ १३ ॥
दण्ड ले आया माहि रे, तपनो अभिग्रह आदर्‌यो।
नायो पालणी ताहि रे, तिण कारण थयो एकलो ॥ १४ ॥
काल केतोक वदीत रे, फिर आयो भारीमाल पै।
सन्त सत्यां ने सुरीत रे, कर जोड़ी वंदना करी ॥ १५ ॥
बोले बेकर जोड़ रे, मुझ ने लेवो गण मझे।
अढ़ी द्वीप ना चोर रे, त्यां सूं हूं अधिको घणो ॥ १६ ॥
छठ २ तप पहिछाण रे, जावजीव अदराय दो।
कहो तो करूं संथार रे, पिण मुझ ने ल्यो गण मझे ॥ १७ ॥
भारीमाल बहु जाण रे, दीख्या दे माहि लियो।
संवत अठारे पिछाण रे, एकोतरे वर्ष आदर्‌यो ॥ १८ ॥
मास खमण बहु वार रे, विकट तप मुनिवर कियो।
सत्ताणुवे सुखकार रे, जन्म सुधार्‌यो यश लियो ॥ १९ ॥

॥ ढाल तेहिज ॥

भारी तपसी भोप हुवो भल, कोसीथल वासी कहियो, जाति तणो चपलोत जाणिजे, लाभ स्वाम हाथे लहियो ॥ ११ ॥ पाली में संजम ले चं, मुनि तपस्या करवा मंडियो। कबहि छासठ कबहिक अड़सठ * चढ़त २ अधिको चढ़ियो ॥ १२ ॥ ..दहिक

* नोट—मूल पद्य में 'अठावन' ऐसा पाठ है किन्तु गाथे के चतुर्थ चरणके भाव से 'अड़सठ' ही ठीक जंचता है तथा प्रथमावृत्ति में भी 'अड़सठ' ही छपा हुआ था। इस लिये अड़सठ रक्खा गया है। —संशोधक

चार मास में कीधा, सतर पारणा सुमति सहु। ग्रन्थ बहुल भय तप वर्णन गुण, तिण कारण सहु ते न कहूं ॥ १३ ॥ साढ़ी चार पहोर संथारो, र म पछैं शुद्ध गति सारु। प ी धर्म उद्योत प्रगट हद, वर्ष छासठे मुनि बारु ॥ १४ ॥ मुनि महिमागर अधिक उजागर, गुण सागर गर ज्ञानी। बचन सुधा गर धर्म जागर. धर्म धुनि धर. महा ध्यानी ॥ १५ ॥ अन मंजन चन्दन अञ्जन शिव शंजन रंजन साधी। भ्रम भंजन भिक्खु गुरु भेटो, अरि गंजन मति आराधी ॥ १६ ॥ स्वाम शरण सुख करण तरण शुद्ध, तम म हरण र म तरणी। शिव वधू वरण धरण दुधर म, कहा कहूं मुनि नी करणी ॥ १७ ॥ सुर गिर धीर गंभीर मीर, दा सीर सुतार जै। तोड़ जंजीर वीर बड़ तुम हो. ष भिक्खु गुण हीर रजै ॥ १८ ॥ पर्म प्रतीत रीत प्रभु बच से, लोक वदीत अनीत ऊजे। ान संगीत नीत हद गुणियण, भ भिक्खु ब जीत भजे ॥ १९ ॥ बाण बिमल अति निमल कम र, जम अमल शिव मग जाणी। सम तम मिथ्या मति सोषी, आप सूर्ति अघदल ाणी ॥ २० ॥ ाप तणो प्रसाद अनोपम, तंत मुनीश्वर बहु तरिया। आप सुरतरु ाप गुणो दधि,

आप घणा अघ हरिया ॥ २१ ॥ स्मरण ह तणो नित साधूं, स्व तणो मुझ नित शरणो। आशा पूरण स्वा अनोप, निर्मल चित्त धो निरणो ॥ २२ ॥ सखरा स्वाम मुनि गुण साचा, म्हे संक्षेप थकी गुणिया। जल गर किम झालै गागर, गुण नन्त अथग अनघ गुणिया ॥ २३ ॥ निम पचासमी ढाल निहाली, भल भिक्खु गुण भरिया। य जश स्पति करण जाणजो, इण खण्ड भिक्खु अवतरिया ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

अड़तालीस मुनि अव्या, पूज छतां पहिचाण।
चारित्र लीधो चित्त धरी, उज्झम अधिको आण ॥१॥
अट्ठवीस गुण में सही, सखर रह्या सुजगीस।
गुरु छन्दे गिरवा गुणी, अलग रह्या छे बीस ॥ २ ॥
बीसां मांहे एक वर, रूपचन्द शुद्ध रीत।
छेहड़े अणशण चर्ण लियो, पूज आण प्रतीत ॥ ३ ॥
पूज थकां चारित्र प्रगट, अब सतियां अधिकार।
वारै नीकली, पहोंती केक पार ॥४॥
साथ व्रत आदरया, तीन जण्यां तिण चार।
कुशलां जी वड़ी करी, कुशल क्षेम अवतार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ५१ मी ॥

(सम्यावंत जोय भगवन्त रो ज्ञान एदेशी)

पवर चरण शुद्ध पालताजी, कुशलांजीने विचार।

दीर्घ पृष्ठ गुदोच में जी, ते डंरियो तिणवार ॥
खिम वंत धिन तियां वतार ॥ १ ॥ ज
ड़ा भणी . बंछ्यो नहीं तिण वार । शुद्ध परि-
णामे महासती जो, पोंहती पर ो र ॥ २ ॥
मटूजो मोटो ती जी, र ण शिर धार । पद
राधक पामियोजी, ो भिक्खु नो उपगार ॥ ३ ॥

॥ र ॥

अजबू प्रकृति अजोग रे, जोग सूं नीकली ।
प्रकृति कठिण प्रयोग रे, चारित्र खोवे छिनक में ॥ १ ॥

ढाल ते ।

म सुजाणा निरम जी देऊजो दी । स्वा
तणे गण में सही जी, परभव पोंहती ॥ ४ ॥

॥ सोर ॥

तदनन्तर तिण धार रे, साधुपणो लीधो सही ।
नेऊ नाम निहाल रे, कर्म प्रयोगे नीकलो ॥ २ ॥

ाल ते ज ।

ती गुमाना ोभती जी, ज वर र । इ
कसूं जी जी, ण ण धि उदार ॥ ५ ॥
जीऊ बले जाणिये जी, स्व तणे गण र ।
पोते बहू सुत परहरी जी, वासी रीयां रा विचार ॥६॥

६। किते पछै कियो जी, शहर पीपांड संथार।
इगताली डी ओपती जो, मांढी करी तिवार ॥७॥

॥ सोरठा ॥

फतू अखूजी न्हाल रे, अजबू चन्दूजी अजा।
भेषधारयां में भाल रे, पछे चर्ण लियो पूज पै ॥ १ ॥
समत अठारे सोय रे, वर्ष तेंतीसे वारता।
लिखत करी अवलोय रे, मुनि लीधी टोला मम्हे ॥ २ ॥
आप मते अवधार रे, मन छन्दे रही मोकली।
अति तसु कठिण अपार रे, छांदे गुरां रे चालणो ॥३॥
अशुद्ध प्रकृति अविनीत रे, सुमते जाणो स्वामजी।
शिष्य भिक्खु शुद्ध रीत रे, तन्तु धाम्यो तेहने ॥ ४ ॥
तुझ ने कल्पे तेह रे, ते तन्तु लेवो तुम्हे।
इम कही कपड़ो देह रे, फतु आदि पांचां भणी ॥ ५ ॥
पूछयो तास प्रमाण रे, कहै मुझ अधिको को नहीं।
पूज करे पहिछान रे, निसुणो निरणय निर्मलो ॥ ६ ॥
अखैराम अणगार रे, मेल्यो कपड़ो मापवा।
तस थानक तिणवार रे, माप्यां अधिको नीकल्यो ॥७॥
इम तन्तु अति राख रे, झूठ बोली बले जाणने।
शुद्ध नहीं संजम साख रे, नीत चरण पालण तणी ॥८॥
च्यारु ते पहिछान रे, चेना मेली पंचमी।
थां पांचूं ने जाण रे छोड़ी चंडाचल मझे ॥ ९ ॥

मेणाजी मोटी ती जी, वासी पुरना विचार।
स्वा कने संजम लियो ी, छांडो निज भरतार ॥८॥
पढ़ी भणी पंडित थई जी, बहु सूत्रां नी रे जाण।
साठे संथारो करेजी, कीधो जन्म किल्याण ॥ ९ ॥

॥ सोरठा ॥

धनू केलीजी धार रे, रत्तू नन्दूजी वली ।
माढा गाम मझार रे, छोड़ी थां ब्यारां भणी ॥ १२ ॥

ढाल तेहिज ।

रंगूजी रलियामणाजी, ।जीद्वारा ना सार ।
पोरवाल प्रगट पणे जी, संजम लियो सु कार ॥
अड़तीसे व्रत ।दस्यो जी, स्वाम खेतसी रे साथ ।
शिरियारी चलता रह्या जो, वारु भणी विख्यात ॥११॥
सदांजो मोटी तीजी, तलेसरा सार । श्री जी
द्वारना सहीजी, स र कियो संथार ॥ १२ ॥ सुत बहु
तज संजम लियोजी कंटाल्या ना कहिवाय । अण ण
लाढोती मझेजी, फूलांजी सु दाय ॥ १३ ॥ उत्तम
अमरां आर्यांजो, स्वाम तणे उपगार । जीतब जन्म
सुधारियोजी, सखरो कर थार ॥ १४ ॥ ल एक
पचासमो जी, भिक्खु ने गण भाल । बड़ी २ तियां
हुई जी, वारु गण सुविशाल ॥ १५ ॥

॥ सोरठा ॥

रत्तू ले चारित्र रे, हुटी खोयो चर्ण ने ।
पाली मांहि पवित्र रे, पछे संथारो पचखियो ॥ १ ॥
उपाय किया अनेक रे, भेषधारयां लेवा भणी ।
तो पिण राखी टेकरे, त्यां मांहे तो ना गई ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

शुद्ध चित्त सुं तेजुं सती, पोरवाल पहिछाण ।
वासी ढोल कंबोल रा । संजम लियो सुजाण ॥ ३ ॥
काल कितेक पछे कियो, संथारो सुविहाण ।
दिवस वैशाली दीपतो, कीधो जन्म किल्याण ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

पनांजी सुविचार रे, संजम लीधो शुद्ध मनें ।
कर्मा करी खुवार रे, टोला सूं न्यारी टली ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

बंगतुजी बगडी तणा, वर कुल जाति सचेत ।
हीरां हीर कणी जिसी, भारीमाल ना नेत ॥ ६ ॥
नाम नगी गुण निर्मली, वेणीरामजी री बहेन ।
एक दीवस तीनूं अजा, चर्ण धार चित्त चेन ॥ ७ ॥
चौमालीसे वर्ष स्वामजी, संजम दे इक साथ ।
नूंप्या रंगुजी भणी, वारू जश विख्यात ॥ ८ ॥
ए तीनूं भिक्खु पछै, संथारा कर सार ।
महियल मोटी महसती, पामी भवनो पार ॥ ९ ॥
सरूप भीम भृष तीन नी, मजबू भुवा सुजोग ।
चौमाले भ्रासो चर्ण, अठासीये परलोग ॥ १० ॥
शिरियारी ना महासती, पन्नाजी पहिचाण ।
संजम पाल्यो स्वाम गण, संथारो सुविहाण ॥ ११ ॥

॥ सोरठा ॥

फाकोली री कहाय रे, लालांजी संजम लियो ।
परवश सीत सुपाय रे, इण कारण गृह आविया ॥ १ ॥

बहु वर्षां सुविचार रे, श्रावक धर्मज साधियो ।
तप जप कियो उदार रे, फिर चारित्र नहीं पचखियो ॥१३॥

॥ ढाल ५२ मीं ॥

(उधांरा इन्द्र चन्द्र रखवाला एदेशी)

गुमाना महा गुणवन्ती, तासोल तणी चित्त शान्ति । जीवा मुनि री बड़ी मा जाणी, ती संजम लियो सुखदाणी हो लाल ॥ सतियां नामज मोटो ॥१॥ एक मास कियो अति भारो, दोय मास छेहड़े दिलधारो । शुद्ध राजनगर संथारो, सती सर भद्र सुखकारो हो ॥ २ ॥ वर शहर बुन्दी रा वासी, बारु श्रावगी त्त सुविमासी । खेरवे संथारो खन्ती, खेमा जो खेम करन्ती हो ॥ ३ ॥

॥ सोरठा ॥

जूं परीषह थी जाण रे, छूटी जसु छिनक में ।
चोखी टली पिछाण रे, कांफोलो री विई कही ॥ १ ॥

॥ ढाल तेहिज ॥

सतजुगी री वहिन सुखवासो, ऋष रायचन्दजी री मासी । पिउ पुत्र तज्या पहिछाणी, रूपांजी महा-रलियामणी हो ॥ ४ ॥ संजम वात्रने सधीको, सतावने संथारो नीको । खुशालांजी री लघु वहिन कहिये, रूपांजी जग जश लहिये हो ॥ ५ ॥ रूपांजी कंटाल्ये

संथारो, अग्रवाल जाति अवधारो। माधोपुर ना वसँवानो, सुत तीन तज्या व्रत ध्यानो हो ॥ ६ ॥ वरजूजी वदीत विमासी, रूड़ी शील गुणा री रासी। तिण रो भिक्खु तोल वधायो, सती सुयश शासण में पायो हो ॥ ७ ॥ वीजांजी महा वृद्धकारी, धर चरण शील सुखकारी। करड़ो तप छेहड़े कीधो, सती जग माहे यश लीधो हो ॥८॥ वनाजी सुविनयवन्ती, शुद्ध चरण पालण चित्तशान्ति। सुखदायक गण सुविशाली सती आतम ने उजवाली हो ॥ ६ ॥ शुद्ध यां तीना ने सिख्या, दीधी भिक्खु एक दिन दीख्या। सखरो छेहड़े संथारो, समणी हद मुद्रा सारो हो ॥ १० ॥

॥ सोरठा ॥

वीरां जाति कुमार रे, संजम लीधो स्वाम पैं।
प्रकृति अशुद्ध अपार रे, तिण कारण गण सूं टली ॥२॥

ढाल तेरं ज।

उदांजी उद्यमवंती, सती जाति सोनार सोहंती। वहु-वर्ष चरण सुविचारो, आंबेट माहें संथारो हो ॥ ११ ॥ झूमांजी जाति पोरवाल, श्रीजी द्वारा ना र। छपने वर्ष संजम लीधो, ाम पछे संथारो सिद्धो हो ॥ १२ ॥ वर्ष सतावने सुविचारो, अपराय चरण हित-

कारो। तिण बहुत हुवो उपगारो, तिणरो सांभलजो विस्तारो हो ॥ १३ ॥ संसार लेखे शोभाया, लखपति छोड़े सजनाया। मतिवन्त हस्तु महि मंडी, लीधो चरण पिउ सुत छंडी हो ॥ १४ ॥ दुःख घरका बहुलो दीधो, सती अडिग पणे व्रत लीधो। सताणुवें लाडवे संथारो, हस्तु गुण ज्ञान भंडारो हो ॥१५॥ कुशलांजी रावलियां रा कहिये, सतजुगी री बहिन व्रत लहिये। खूबरायचन्दजी नी माता, संजम ले पामी साता। ओतो जिन शासन में सुखदाता हो ॥ १६ ॥ भल हस्तुजीनी भणी, सती कस्तुरांजी शुभ लणी। सुत पिउ छाड़ व्रत धारो, सलंतरे उजैण संथारो हो ॥ १७ ॥ छावा थी संजम लीधो, पिउ छांड़ धर्म रस पीधो। गणी बुद्धि अकल गुणवन्ती, जोतांजी महा जशवन्ती हो ॥ १८ ॥ शिरियारी रा सुमगन में, छोड्यो पिउ सती तिण छिन में। संथारो बहुतरे सिद्धो, नोरांजी जग जश लीधो हो ॥ १९ ॥ शुद्ध एक वर्ष में शिक्षा, दुर्मति तज लीधी दीक्षा, पांचां ही पिउ ने छंडी, त्यांरी प्रीत मुक्ति सूं मंडी हो ला० ॥ २० ॥ गुणसठे वर्ष गुणवन्ती, बहु चरण धार बुद्धिवंती। त्यांमें तीन गयां एक साथे, हद दीक्षा भिक्खु ने हाथे हो ॥ २१ ॥ कुशलांजी नाथां

जी बीजांजी, पाळी ना तिहुं भ्रम भांजो। तीनूं शीलामृत कूंपी, दीख्या देई व्रजुजी ने सूंपीहो॥ २२॥ सतंतरे कुशगांजी संथारो, भारीमाल भेला सुविचारो। माधोपुर मास कार्तिक में, परलोके पोंहता छिनक में हो॥ २३॥ नाथांजो गाम जसोल न्हाली, वर संथारो सुविशाली। संसार लेखे ऋद्धि वंती, मणी शुद्ध प्रकृति सोहंती हो॥ २४॥ तप दिवस बतीस सु तपियो, जिन जाप बीजांजी जपियो। तीन दिवस तणो संथारो, वर्ष छियासीये अवधारो हो॥ २५॥ सरूप भीम जीत ना ताह्यो, कलुवै काकी कहिवायो। गुणसठे दीक्षा गुणवंती, गोमांजी नेवुये पार पहोंती हो॥ २६॥ जशोदा खेरवा निवासी, डाहीजी नोजांजी विमासी। संजम भिक्खु छतां सारो, बहु वर्ष पाछै संथारो हो॥२७॥ ए म तणो गण सारु, छपन गण चर्णं प्रकारु। सतरे छुटक हुई अज्जा, छोड़ी लोकिक लोकोत्तर लज्जा हो॥२८॥ रही गुणचालीस गण राची, पिउ छांड़ सात व्रत जाची। दोय बहिन भायां रा जोड़ा, सतजोगी वेणीराम सु होडा हो॥२९॥ ऋष रायचन्द मा साथे, संजम लीधो पूज हाथे। आख्यो समणी नो अधिकारो, ओ तो भिक्खु तणो उपगारो हो॥ ३०॥ आगे

मंन्त कह्या अड़ताली, अजा छपन इहां भाली। सहु थया एक सौ चार, स्वामी गण लीधो चर्ण सुख कार हो ॥ ३१ ॥ बीस तरे गण बारी, ठवीस गुणचालीस सुधारी। बीसां में रूपचन्द शुद्ध रीत, रा ी स्वाम तणी प्रतीत हो ॥ ३२ ॥

छन्द भुजंगी

थया सन्त मोटा वड़ासु थिरपालं १ भलूं नन्द नीको फतेचन्द भालं २। विनयवंत वारु सु टोकर विशालं ३ निजानंदकारी हरुनाथ न्हालं ४॥१॥ भला धर्म धोरी मुनी भारीमालं ५ चलया आप वारु बड़ा नी सुचालं। अखे स्थान काने अखैराम आछा ६ सदानन्दकारी सुखराम साचा ७ ॥ २॥ शिवानन्द सारु शिवो स्वाम शीशं ८ नगो स्वाम नीको नगेन्द्र नमीशं ९ भला स्वामजी सन्त हुवा सुभारी १० सही खेतसी जी सदा शान्तिकारी ११ ॥३॥ ऋपिराम रुड़ो भिक्खु शीश राजे १२। वलि नान जी स्वामी स्वामी निवाजे १३ ॥ ४ ॥ निमे नेम जाचा मुनि नेम नामं। वड़ो सन्त ज्ञानी भला वेणीरामं १५ ॥ ५॥ वलि सन्त मोटा वड़ो वर्द्ध-मानं १६। सुखो स्वाम साचो शुभ ध्यान सुजानं १७ ॥ ६ ॥ हदा हेम जेसा सु हेमं हजारी १८। उदेराम आछो तपस्वी उदारी ॥ ७ ॥ ऋषि पाट थाप्यो मुनि रायचन्दं २०। दीपे तेज तीखो सुमेरु दिनन्दं २१ ॥८॥ भला सन्त तारासुचन्द्र भणीजे २१। गिरेन्द्र समो सन्त डूंगर गिणीजे २२ ॥ ९ ॥ जयो जीतराजं २३ अरु जोगीद.सं २२। दमीश्वर जोधो तपे देह त्रासं २५ ॥ १० ॥ भगो नाम नीको भिक्खु शीश भारी २६। सही भागचन्द पछेहि सुधारी २७ ॥ ११ ॥ थयो मोप भारी तपे ध्यान थापी २८। पक्का संत शूरा भिक्खु ने प्रतापी ॥ १२ ॥ रह्या स्वाम आण धुरा छेह रुड़ा। सही केटली ने थया फेर शूरा ॥ १३ ॥ आख्या सन्त नाम अठावीस आछा। जिके जीव तासा भिक्खु स्वाम जाचा ॥१४॥

॥ छप्पय ॥

इमा भिक्खु अणगार, सार जिण मारग शोधी।
अधिक कियो उपगार, बहु भवि ने प्रतिबोधी॥
श्रमणी सन्त सुजाण, सखर कीधा सुखकारी।
परम धर्म पहिचाण, धुरा जिण आणा धारी॥
अरु देश व्रत धारक अधिक, नित्य कृत भजन नूं नामको।
सुख करण शरण इद जग सुयश, सखर भीखणजी स्वामको॥१॥

दोहा ॥

अष्टवीस मुनिवर अख्या, सखरा गण शिणगार।
वीस थया गण बाहिरे, तास नाम अवधार॥ १॥
वीरभाण १ लिखमो २ वलि अमरोजी ३ अभिधान।
तिलोक ४ मौजीरामजी ५, चन्द्रभाणजी ६ जान॥ २॥
अणंदोजी ७ पनजी ८ अख्या, सन्तोष ९ शिवजीराम १० ।
शंभु ११ संघजी १२ रूपजी १३, लघुरूपजी ताम१४॥३॥
सुरतोजी १५ संघ सूं टल्यो, मयाराम १६ पहिचाण।
बीगतो१७खुशालजी १८ वलि,ओटो१९ नाथू २०जाण॥४॥
केइका ने न्यारा किया, केइक टलिया आप।
अब कहिये छै आर्जिका, चतुर सुणो चुपचाप॥ ५॥

॥ छप्पय ॥

कुशलां १ मट्ट २ कहाय सुजाणा ३ कहिये साची।
देउ ४ गुमाना ५ देख, कसुंबांजी ६ नहिं काची॥
जीऊ ७ मेणा ८ जहाज, रहु ९ सदां १० फूलां ११ सुखकारी।
अमरां १२ तेजु १३ आण, वलि वगतु १४ वृद्ध कारी॥
हीरां हीर कणी जिसी १५, सती शिरोमणी शोभती।
निकलंक नगां १६ अजबू १७ निमल, महियल प मोटी सती॥१॥

पन्ना १८ सती पिछाण, गुमाना १६ खेमां २० गुणिये।
रूपांजी २१ वर रीत, सफां २२ समणी सुणिये॥
वरजु २३ बीजां २४ विशाल, बनां २५ उदां २६ हद वारु।
भूमां २७ हस्तु २८ जिहाज, कुशालां २६ गण सुखकारु॥
कस्तुरां ३० अेतांजी ३१ कही, शुद्ध संजम नीरां सजी।
इक वर्ष माहिं व्रत आदर्‌या, पांचूं यां प्रीतम तजी॥ २॥
सखर खुशालां ३३ सती, पवर नाथां ३४ पुनवन्ती।
विनय बीजां ३५ सुविनीत, घणूं गोमां ३६ गुणवन्ती॥
चर्ण यशोदा ३७ चित्त, हिये माहीं ३८ हरषन्ती।
नौजां निमल निहाल ३६, साम आणा समरन्ती॥
ए गुण चालीस अजा गण में अखी, एक सोनार सुजाणिये।
कुलवन्त इतरी सतियां कही, वड़ी वैराग वखाणिये॥३॥

॥ दोहा ॥

सतरे छुटक नाम तसु, अजवू १ नेतू २ ताय।
वलि फतू ३ ने अखू ४, फिर अजवू ५ कहिवाय॥१॥
चन्दूजी चैना ७ छुटक, धनु ८ केली धार ६।
रतू १० नंदू ११ फिर रनु १२ वरा १३ थई गण बार॥२॥
लालां १४ परवश नीकली, जसु १५ चोखी १६ वीरां १७ जान।
सतरै छुटक सांभली, गण गुण्याली सुजान॥ ३॥

॥ ढाल तेहिज ॥

भिक्खु हुवा उजागर भारी, हद करणी री बलिहारी। नित याद आवे मुझ मन. तन मन अति होय प्रसन्न हो॥ ३२॥ सुमतागर शासण स्वामी, जशधर अन्तरजामी, सखरो कुण स्वामी सरषो, पूज गुण

म दृग परखो ॥ ३४ ॥ आशा पूरण ापो, पूं आप तणुं नित जापो । पूर्ण भ ाप ॅ प्रीतं, निर शुद्ध ापरी नीतं ॥ ३५ ॥ कहीं ए बावनमी ढ़ा , वर जय श रण बि । ।मोने भाग प्रमाणे ि वि या, मननाज नोर्थ फलिया । मुंह ंग्या पासा ढलिया ॥ ३६ ॥ तीजो गड ग्रो तहतीको, निर्मल भिक्खु गण नीको । शासण सु दाय सधोको, जय जश वृद्धि शिव नो टीको हो ाल ॥ ३७ ॥ सोरठा २ गाथा ३७ ॥

कलश

मुनि सुगुण । वर विशा ।, सु ति पा ।णिये । तम गति ता म ञ्ता । परम द्या पिछाणिये ॥ सु भ्र संत महंत सुन्दर भ्रान्त भंजन अति भलो, सुमति सुसागर श्रम ।गर निमल मुनि गण गुण निलो ॥ १ ॥



चतुर्थ खण्ड ।

॥ सोरठा ॥

समरुं गोयम स्वाम रे, सुधर्म जम्बू आद मुनि ।
 धले भिक्खु गुरु नाम रे, चौथो खण्ड कहुं चूंप सूं ॥ १ ॥
मुरधर देष मेवाड़ रे, हाडोती ढूंढाड़ में ।
 चावा देशज चार रे, समचित विचरया स्वामजी ॥ २ ॥
गेरुलालजी व्यास रे, श्रावक तेरा मांहिलो ।
 ते कच्छ देशे गयो तास रे, टीकम ने समझावियो ॥ ३ ॥
टीकम डोसी आम रे, देश कच्छ में दीपतो ।
 तेथने गुणसठे ताम रे, पूज्य कने आयो प्रगट ॥ ४ ॥
प्रगट तेह प्रयोग रे, कच्छ देशे धर्म वाधियो ।
 स्वाम तणे संजोग रे, जीव हजारां उद्धरया ॥ ५ ॥
धर्म कल्याण पिछाण रे, इण भव भावी जाणजो ।
 सुणजो चतुर सुजाण रे, पूज भिक्खु नों प्रगट हिव ॥६॥

॥ दोहा ॥

पाचूं इन्द्रयां परवरी, न पड़ी कांई हीण ।
 वृद्ध पणे पिण पूजजी, शीघ्र चाल शुभ चीन ॥ १ ॥
थाणे कठेई ना थया, उद्यमी अधिक अपार ।
 चारु चरचा करण चित, पूज तणे अति प्यार ॥ २ ॥
उठे गोचरी आप नित, अतिशय कारी ऐन ।
 पूज सुमुद्रा पेखतां, चित्त में पावें चेन ॥ ३ ॥
छेहला २ पाम फरसेता, छेहलाई करत विहार ।
 पाणोद सूं पीपाड़ लग, विचरया स्वाम उदार ॥ ४ ॥

ढाल ५३ मी

(सल्हा मारुनां गीतनी पदेशी)

भ्रम भय भंजन हो जन रंजन गुण जिहाज, सुमति सुमंडन म शोभाविया। कुमति विहंडन हो मिथ्या खण्डन काज, विचरत २ सोजत आविया॥ १॥ चोहटे चारु हो छत्री छै सुविचार, आज्ञा लेई नें स्वामी तिहां उतर्या। जन मन हर्षे हो निरख्यो पूज्य दिदार, जाणै के श्रीजिन आप समवसर्या॥२॥ दर्शण कारण हो धारण चर्चा बोल, संत सती बहु स्वाम पै आविया। आज्ञा लेवा हो चौमासा री मोल, पर्म पूज्य पे आवी सुख पाविया॥ ३॥ दम सम सागर हो स्वामी परम दयाल, भलाया चौमासा संत त्यां भणी। एटले आयो हो हुकमचन्द आछो न्हाल, पूज दर्शण कर प्रीत पामी घणी॥ ४॥ बेकर जोड़ी हो मान मरोड़ी बोलंत, विविध विनय करि कर रह्यो विनती। स्वामी चौमासो शिरियारी करो संत, सुजती छै पकी हाट मुझ शोभती॥ ५॥ गुण निधि ज्ञानी हो गिरवा आप गम्भीर, नृपपति अर्ज करूं हूं रीत सूं। चारू वचने हो विनती कीधी वजीर, सुगरु प्रसन्न हुवे शिष्य सुविनीत सूं॥ ६॥ स्वामी मानी हो विनती तसु सार, विहार करी ने वगड़ी

आत्रिया। निर्मल चित्त सूं हो अर्ज करे नर नार, शहर टाल्ये वगड़ी सुशोभाविया ॥ ७ ॥ गति गयवर-सी हो इर्या धुन गुण जिहाज, र तांकर मुनिवर परवस्था। प्रत्यक्ष कहिये हो ऋषि भव दधि नी ाज, शहर शरियारी में स्वाम समवसस्था ॥ ८ ॥ शहर शरियारी हो शोभै कांठा नी कोर, दोलो मगरो गढ़ कोट ज्यूं दीपतो। जन बहु बस्ती हो महाजनारो जोर, जूना २ केई पुर भणी जोपतो ॥६॥ निर्भय नगरी हो ऋद्धि समृद्धि निहोर, ज्यां धर्म ध्य घणी तप जापनो। राज करै छै हो दौलतसिंह राठोड़, कूंपावत कहिये करड़ी छापनो ॥ १० ॥ तिहां मुनि ाया हो सप्त ऋषि तंत सार, जय जश भणे कणे मन जोपता। स्वामी शोभे हो गण नाथ सिरदार, दमीश्वर पूज्य भीखणजी दीपता ॥ ११ ॥ भरत क्षेत्र में हो भिक्खु साम्प्रत भाण, ज्ञा लेई ने पकी हाट उतस्या। न बहु हर्ष्या हो पूज पधा । जाण, धर्मानुराग करि तन मन भस्था ॥ १२ ॥ वखाण वाणी में हो आगेवाण त्रिशाल, थिर पद पूज भीखणजी थापियो। भार लायक हो शोभे मुनि भारीमाल, पद युवराज पहिलाही मापियो ॥ १३ ॥ ..खर सेवा में हो खेतसीजी सुवनीत, सतजुगी नाम

अपर शोभावियो। पूर्ण त्यारं हो पूजजी री प्रतीत चार तीर्थ माहिं जश तसु छावियो ॥ १४ ॥ उदैराम जी हो तपसी अधिक उदार, प रायचन्दजी बालक वय राजता। जोवो मुनि हो भगजी गुण ना भण्डार स्वाम तणीं हद सेवा सुसाभता ॥ १५ ॥ ए तो खी हो तीन पचासमी ढाल, शरियारी में स्वाम या सुख कारणा। रूड़ी निसुणो हो गल बात रसाल, जय जश करण भिक्खु जन तारणां ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

श्रावण मासे स्वामजी, पूनम लगे पिछाण।
सखरी गोचरी शहर में, आप फर्या अगवाण ॥ १ ॥
आवसग अर्थ अनोपम, लिख लिख ने अवलोय।
शिष्य ने आप सिखावता, जश धारी मुनि जोय ॥२॥
श्रावण सुद छेहड़े सही, मुनि तणे तन माहीं।
कांइक कारण ऊपनो, फेरा तणोज ताही ॥ ३ ॥
तो पिण उठे गोचरी, गाम माहि मुनिराय।
दिसा बाहिर जावे सही, लावो गिणती न काय ॥ ४ ॥
औषध लियो थणाय ने, कारण मेटण काम।
पिण कारण मिटियो नहीं, पूज समा परिणाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल ५४ मीं ॥

(केते पूजा गोराज्या केते ईश पदेशां)

चम कल्याण चतुर सुणो, मास भाद्रवा मांयो ए सुखदायो ए। धर्म वृद्धि अति धर्म नो क भवियण

ए ॥ १ ॥ पजुसणा में परवड़ा, बारु हुवे ब णो ए सुविहाणो ए। दरशे तीन टंक देशना क मुनिवर ए ॥ २ ॥ सुन्दर वाण सुहामणी, निसुणे बहु नर नारो ए सुखकारो ए। चौथज आई चांदणी ॥ मु० ॥ ३ ॥ पिंजर तन हीणो पड्यो, पर्म पूज्य पहिचाणयो ए। मन जाणयो हे आउ नेड़ों उनमानथी ॥ मु० ॥ ४ ॥ स्वाम कहे सतजुगी भणी, थे रुखर शिष्य सुविनीतो ए धर प्रीतो ए। साझ दियो संजम तणो क ॥ मु० ॥ ५ ॥ टोकर जो तोखा हुंता, विनय वंत सुविचारी ए। हितकारी ए। भक्ति करी भारी घणी क ॥ मु० ॥ ६ ॥ भारमल जो सूं भेळप भली, रहीज रूड़ी रीतो ए। अति प्रीतो ए। जाण के पाछल भव तणी क ॥ मु० ॥ ७ ॥ स..र तीनां रा साझ सूं, वर संजम उजवालशो ए। म्हे पाल्यो ए। प्रत्यच्च ही शूरा पणे क ॥ ८ ॥ चित्त समाधि रही घणी. म्हारा मन मझारो ए। हुंशियारो ए। यां तीनां रा साझ थी क ॥ मु० ॥ ६ ॥ शिष्य सुवनीत हुवे सही, गुरु रहे आणंदो ए। चित्त चंदो ए। देव जिनेंद्र दाखियो क ॥ मु० ॥ १० ॥ गुण ग्राही एहवा गुणी, पूज्य भीखण जी पेखो ए। दिल देखो ए। स्वाम गुणज्ञ सुहामणा क ॥ मु० ॥११॥ ऐसी कीजे प्रीतड़ी

जैसी भिक्खु भारी मालो ए। सुविशालो ए। त
जुगी टोकरजी सारिषी क ॥ मु० ॥ १२ ॥ जोड़ी वीर
गोयम जिसी, पवर स्वाम शिष्य प्रोतो ए। हद रीतो
ए। चाल सखर चौथा तणी क ॥ मु० ॥ १३ ॥ ए
चौपनमी ढाल में, सखरो कह्यो संबंधो ए। प्रबंधो ए।
स्वाम भिक्खु नो शोभतो क ॥ मु० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

साध श्रावक ने श्राविका, बहु सुणतां तिणवार।
सिखामण दे स्वामजी, हद सखरी हितकार ॥ १ ॥
वीर जी मोक्ष विराजिया, आरु किया बखाण।
सोलह पहोर रे आसरे, सीख दीधी सुविहाण ॥ २ ॥
इण दुखम आरा मझे, स्वाम भिखणजी सार।
प्रत्यक्ष श्री जिन नी परे, आखी सीख उदार ॥ ३ ॥
सखर बुद्धि बाणी सखर, सखर कला सुखकार।
नीत सखर चित निरमले, वचन वदे सुविचार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ५५ मी ॥

(आगे लातां भरवी आवे ए देशी)

जिम मुझ ने जाणता, म्हांरी प्रतीतो रे। तिम
हिज राखज्यो, भारमालजी री रीतो रे। सो स्वामी
तणी ॥ १ ॥ सहु सन्त सत्यां रा, भारीमालजी नाथो
रे। आज्ञा आराधज्यो, मत लोपज्यो वातो रे ॥ २ ॥
यांरी आण लोपी ने, निकले गण बारो रे। तसु

गिणज्यो मति, चिहुं तीर्थ मझारो रे ॥ ३ ॥ यांरी आण ाराधे, सदा रहे सुविनीतो रे। तसु सेवा करो, ए जिन मग रीतो रे ॥ ४ ॥ मैं पदवी ापी, भारलायक जाणी रे, भारमलजी भणी, शुद्ध प्रकृति सुहाणी रे ॥ ५ ॥ नीत चर्या पालण री, भल ऋष भारीमालो रे। शंक म राखज्यो, शुद्ध साधु नी चालो रे ॥ ६ ॥ शुद्ध श्रमण सेवजो, अणाचार्यां सूं दूरा रे। सीख दोनूं धर्यां, हुवे मुक्ति हजूरा रे ॥ ७ ॥ अरिहंत गुरु आज्ञा,लोपे कर्म जोगो रे। प-छन्दा तिके, नहीं वंदण जोगो रे ॥ ८ ॥ उस ा ने पासत्था, कुशीलया प्रमादी रे। अपछंदा इण, जिण आण विराधी रे ॥ ९ ॥ यां ने वीर निषेध्या, ज्ञाता में विशालो रे। संग करणो नहीं, बांधी जिनपालो रे ॥ १० ॥ आणंद लियो अभिग्रहो, जिण गण थी न्यारु रे। तसु वांदू नहीं, पहली वचन उचारु रे ॥ ११ ॥ अन्यमति ना देव गुरु, थवा जमाली रे। ता नमूं नहीं; नहिं वंदू न्हाली रे ॥ १२ ॥ बलि विगर बोलायां, बोलण रो नेमो रे, आहार आपूं नहीं, अभिग्रह लियो एमोरे ॥ १३ ॥ अभिग्रह जिन आगल, आणंद ए लीधो रे। सप्तम अङ्ग में, शुद्ध पाठ प्रसिद्धो रे ॥ १४ ॥ रीत एहिज रा णो, चिउं

संघ ने चारु रे। टा गेकड़ तणी, संग दूर नि रु रे॥ १५॥ ए रीत आराध्यां पामो भव पारो रे। श्रीजिन सीखड़ी, रध्यां सुख रो रे॥ १६॥ हु ध धवी, वर हेत विशेपो रे। रूड़ो रा जो, धरणुं नहीं द्वेपो रे॥ १७॥ वलि ज़ि ो न वांधणो, गुरु ण सुगामी रे। सीख प्रथम सही, दी भिक्खु स्वामी रे॥ १८॥ गुरु ज्ञा गोपी, बांधे जे जि ो रे। अति विनीत ते, दियो कर्मां टिल्लो रे॥ १६॥ एकल सूंई खोटो, इसड़ो अविनीतो रे। तसु समभायने, राखणी शुद्ध रीतो रे॥२०॥ दिल देख देखने, दीख्या शुद्ध दीजो रे। वलि जिण तिण भणी, गण मुंडीजो रे॥ २१॥ श्र ा चार रो, कल्प सूत्र नो बोलो रे। गुरु बुद्धिवन्त री, राखो तीत ोलो रे॥ २२॥ कोई बोल न वैसे, केवलियां ने भलावी रे। ताण कीजो मती, मन ने समभावी रे॥ २३॥ अपछंदे विण ज्ञा, नहिं थापणो बोलो रे। गुरु ज्ञा थकी, तीखो गण तोलो रे॥२४॥ ए दो तीन आदि, निकले गण वारो रे। साध रध जो, शुद्ध सीख श्रीकारो रे॥ २५॥ इक आज्ञा रहिजो, ए रीत परंपर रे। लिखत गै कियो, हु धरजो रा खर रे॥ २६॥ कोई दोप गावी, व

बोलै कूड़ो रे। प्राश्चित ना लिये, तिण नें कर दीज्यो दूरो रे ॥ २७ ॥ शासण प्रवर्तावण, सिख दीधी स्वामी रे। और कारण नहीं, भल अन्तर जामी रे ॥ २८ सुणतां सुखदाई स्वामी ना बोलो रे। बहु सुणतां कह्या, आज्ञा ने अमोलो रे ॥ २६ ॥ ऐसा स्वाम अनोपम, गण तारक ज्ञानो रे। कहा कहिये तसु, वतका सुविहानी रे ॥ ३० ॥ पचावनमी वारु, कहि ढाल रसालो रे। बात सुणो बलि, जय जश सुविशालो रे ॥ ३१ ॥

दोहा ॥

सीखावण दी स्वामजी, आछी अधिक अनुप।
हलुकर्मी धारे हिये, सखरी सीख सरुप ॥ १ ॥
नीर गंगा ज्यूं निर्मला, पूज तणा परिणाम।
निर्मल ध्यान निकलंक चित, समता रमता स्वाम ॥२॥
पद युवराज सु आदि मुनि, पूजा करे सुजोय।
अछे खेद सूं आपरे, स्वाम कहै नहिं कोय ॥ ३ ॥
निर्मल चर्ण वर कर्ण निज, विमल सुधा सम वाण।
अमल दिये उपदेश, अरु सुणजो चतुर सुजाण ॥ ४ ॥

॥ ढाल ५६ मी ॥

(सायर लहर सूं जाणै मींडक पदेशी)

भारीमाल शिष्य भारोजी, आदि साधां भणी. स्वाम कहे सुविचारीजो। बाण सुहामणी ॥ १ ॥

पर भव निकट पिछाणो जी। दोसे मुझ तणुं, मुझ भय मू म जाणोजो, हर्ष हिये घणो ॥ २ ॥ घणा जीवां रे घट माह्यों जी। सम्यक्त रूपीयो, म्हे बीज अ ो वाह्यो जी। मग गोलखावियो ॥ ३ ॥ देश व्रत दीपायो जी, । धि लियो। साधपणो सुखदायो ी, बहु जन ने दियो ॥ ४ ॥ म्हे जोड़ां री सूत्र न्यायो जो, शुद्ध जाणो सही। म्हारे मन रे मांह्योजो, उणायत ना रहो ॥ ५ ॥ थे पिण थिर चित्त थापो जी, प्रभु पंथ पा जो। कुमति कलेश ने ापी जी, आतम उजवालजो ॥ ६ ॥ रायचन्द ब्रह्म- ारी ने जाणो जी, सीख दे शोभती। तूं बा क छै बुद्धि ानो जी, मोह कीजै ती ॥ ७ ॥ ब्रह्मचारी हे वाणोजी, शुद्ध वच सुन्दरु। आप करो जन्म रो किलयाणो जी, हूं मोह कि करूं ॥ ८ ॥ बले स्वामी सीख दे ारोजी, सहु सन्ता भणी। ारा- धजो चारो जी, त चूको णी ॥ ९ ॥ इरिया भाषा उदारो जी, धिकी एषणा। व ादि लेतां वि ारो जो, परठत पेखणा ॥ १० ॥ खरी पांच सुमति जी, गुप्त गुणो धरो। दय त शी सुदती ी, ता मत करो ॥ ११ ॥ ि ष्य शिष्यणी पर गोयो जी, उपग्रण ऊपरे। मुर्छा म कीजो कोयोजी,

प्रमाद ने परहरो ॥१२॥ पुद्गल ममत प्रसंगोजी, तन न सूं तजी। संजम सखर सुचंगोजी, भल भावे भली ॥ १३ ॥ आछी सीख अनूपी जो, अति अभिरामजी। अमृत रस नी कुंपीजी, दीधी स्वामजी ॥१४॥ आ ी ढाल उदारो जो, षट पचासमी। जय जश करण ीकारोजी, स्वामी मति समी ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

दीख सखर दे स्वामजी, हद वाणी हितकार।
स्वाम वचन सुणतां छतां, चित पामे चमत्कार ॥ १ ॥
समता खमता सखर चित, दमता रमता देख।
नमता क्षमता निमल मुनि, बमता बंक विशेष ॥ २ ॥
भव समुद्र तिरवा भणी, भिक्खु भलेज भाव।
वृद्धि भाव हद वीर रस, जाणे तिरणरो दाव ॥ ३ ॥
वर वायक वाणी विमल, दायक अभय दयाल।
पद लायक भिक्खु प्रगट, नायक स्वाम निहाल ॥ ४ ॥

॥ ढा ५७ मी ॥

(धन धन जंबू स्वामी ने पदेशी)

शिष्य भारीमाल सोहामणा, पर्म भक्ता पहिछाण हो मुणन्द। पण्डित मर्ण पेखी पूज रो, बोलै एहवी वाण हो मु० धन धन भिक्खु स्वाम ने ॥१॥ धन धन निर्मल ध्यान हो मु० धन धन पवर शूरापणुं, धन धन स्वामी नो ज्ञान हो॥ २ ॥ खर स्वाम ना ंग थो

मन हुंशियारी माहिं हो मु० अबै विरहो पड़ै आपरो, जाणै श्री जिणराय हो ॥३॥ प्रभु गोयम री प्रीतड़ी, चौथे आरे पिछाण हो मु० प्रत्यक्ष आरे पंचमें, भिक्खु भारीमाल री जाण हो ॥ ४ ॥ तिण कारण भारी-मालजी, आखो अल्प सीं बात हो मु० विरह तुमारो दोहिलो, जाणै श्री जगनाथ हो मु० ॥ ५ ॥ भिक्खु वलता इम भणै, थे संजम पालसो सार हो। निर अतिचारे निर्मलो, होसो देव उदार हो ॥ ६ ॥ महा विदेह क्षेत्र मझे, मुझ थकी मोटा अणगार हो मु० अरिहन्त गणधर आद दे देखजो तसु दिदार हो ॥७॥ सतजुगी भाखै स्वाम ने, आप जांता दिसो झंड़ माहिं हो मु० स्वामी कहे सुणो साधजी, चिंत्त में झंड तणी नहीं चाहि हो ॥ ८ ॥ सुख स्वर्गादिक ना सहु, पुद्गल रूप पिछाण हो मु० पामला सुख पोचा घणा, ज्यांने जाणुं जहर समान हो ॥ ९ ॥ वार अनन्ती भोगव्या, अधिका सुख अहमन्द हो मु० तो पिण नहीं हुवो तृपतो, तिण कारण ए सुख फंद हो ॥ १० ॥ तिण सूं म्हारे झंड तणी, वंछा नहीं लिगार हो मु० मुझ मन एकन्त मोक्ष में, शाश्वता सुख श्रीकार हो ॥११॥ वैरागी एहवा मुनिवरु, जाण्यो पुद्गल जहर हो मु० स्वाम सम्बन्ध सुणावतां, आवै

संवेग नी लहर हो ॥ १२ ॥ सखर सतावनमी सांभली, ढाल रसाल पार हो मु० समरण भिक्खु स्वाम नो, जय जश करण ओकार हो ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

सुख कारण तारण सुजन, कुगति निवारण काम।
विघन विदारण अंति पवर, सीख समापी स्वाम ॥१॥
पंडित मरण सुकरण पर, धरण आराधक धाम।
शिव वधू वरण रु तरण शुद्ध, पूज पर्म परिणाम ॥२॥
निर्मल नीत शुद्ध रीत निज, पूज प्रथमहि पेख।
अंतकाल आयां छतां, वारु अधिक विशेष ॥ ३ ॥
समय जाण स्वामी सखर, आलोवण अधिकार।
आतम शुद्ध करे आपरी, ते सुणज्यो विस्तार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ५८ मी ॥

(कोसी जल नहिं भेदे तिम ज्यारे एदेशी)

स्वाम भिक्खु तिण अवसरे रे, उ नेड़ो आयो जाण। करे आलोवण किण विधे रे, स र रीत सुविहाण। भविक रे भिक्खु गुण रा भण्डार ॥ १ ॥ तस थावर जीवां तणी रे, हिन्सा करी हुवै कोय। त्रिविध २ कर तेहनो रे, मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥ २ ॥ क्रोध मान माया करो रे, लोभ वशे अवलोय। झूठ लागो हुवै जेहनो रे, मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥ ३ ॥ अदत्त जे कोई आचर्यो रे, ज्यांरा भेद अनेक

सुजोय। हद जिन आज्ञा लोपी हुवै रे, मिच्छामि दुक्कडं मोय॥ ४॥ ममत धरी हुवै मैथुन सूं रे. सुता जागतां सोय। मन वचन काय माठा तणो रे मि० ॥ ५॥ परिग्रह नवूं प्रकार नो रे, शिष्य शिष्यणी उपधि पर सोय। त्रिविध २ ममता तणुं रे मि० ॥ ६॥ किणहि सूं क्रोध कियो हुवे रे, वलि क्रोध वशे वच कोय। करड़ी सीख किण ने कही रे॥ मि०॥ ७॥ मान माया लोभ मन में धस्यो रे, दिल धस्या राग द्वेष दोय। इत्यादिक पाप अठार नो रे॥ मि० ॥ ८॥ राग कियो हुवे रागी थकी रे, द्वेषी सूं धस्यो हुवे द्वेष। मन साचै हिवे मांहरै रे, वर मिच्छामि दुक्कडं विशेष॥ ९॥ पांचूं आस्रव पाडुआ रे, लागो जाणयो किण वार। सांभल २ स्वामीजी रे, आलोया अतिचार॥ १०॥ पञ्च सुमति तीन गुप्ति में रे, पञ्च महाव्रत मझार। याद करे अतिचार ने रे. आलोवै भिक्खु अणगार॥ ११॥ सहु जीवाजोनि संसार में रे, चउरासी लाख सुचिन्त। ज्यांरा भेद जुजूआ जाणजो रे, खमावूं धर खन्त॥ १२॥ वड़ा शिष्य सुविनीत छै रे, अन्तेवासी अमोल। आगै लहर आई हुवै रे, खमावे दिल खोल॥ १३॥ वले संत अने सतियां मझे रे, कैकांने करड़ा देख। कठिण

सीख कड़वो कह्यो रे, खमावूं सु विशेष ॥ १४ ॥ श्रावक ने वले ाविका रे, केई कठिण प्रकृति रा कहाय। कठिण बचन कह्यो हुवै रे, ंत करी ने खमाय ॥ १५ ॥ केई गण बारै निकल्या रे, ाध साधवी सोय। करड़ो काठो कह्यो हुवे रे, ज्यां सूं खमत खामणा जोय ॥ १६ ॥ चन्द्रभाणजी थली मझे रे, तिलोकचन्दजी त । कहिजो मत खामणा मांहरा रें, त्यां सूं पड़ियो बोहलो काम ॥१७॥ चरचा कीधी चूंप सूं रे, घणा जणा सूं बहु म। वच कठण कह्या जाएया तसु रे, मावे ले नाम ॥ १८ ॥ केई धर्म तणा द्वेषी हुंतारे, छिद्रपेही अव्यवसाय। त्यां ऊपर ेद आई तिकारे, सगलां ने देऊं खमाय ॥ १९ ॥ चऊं तीर्थ शुद्ध चलायवा रे, सीखामण देता सोय। कठिनवचन जो कह्यो हुवे रे, मुझ खतम खामणा जोय ॥ २० ॥ इण विध करि आलोवणा, रे गिरवा महा गुणवंत। स्वाम भीखणजी शोभता रे, पदवीधर पूज महंत ॥ २१ ॥ एहवी आलोवण कानां सुणयां रे, आवे अधिक वैराग। करे त्यांरो कहिवो किसूं रे त्यांरे माथे मोटा भाग ॥ अठावनमी शोभती रे, आखो ढाल सुपेन। जय . श करण भिक्खु भलारे, चित्त सुणतां पामे चैन ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

इण विध करि आलोवणा, निर्मल निरतिचार ।
स्वाम हुआ शुद्ध रीत सूं, अब अणशण अधिकार ॥१॥
भाद्र शुक्ल पंचम भली, सम्वत्सरी नो सार ।
स्वाम कियो उपवास शुद्ध, त्रिव उजल चौविहार ॥२॥
अतुल तृषानी ऊपनी, अधिक असाता आम ।
सखर आण शूरा पणो, समचित सहिज स्वाम ॥ ३ ॥
पूज कियो छठ पारणो, औषध अल्प आहार ।
पिण ते समो न परगम्यो, वमन हुवो तिण वार ॥४॥
तिण दिन तीनूं आहारना, त्याग किया तहतिक,
पुद्गल स्वरूप पिछाणियो, निर्मल स्वाम निरभीक ॥५॥

॥ ढाल ५२ मीं ॥

(राजा राघव रायरा राय पदेशी)

१ ात आठम भिक्खु स्वाम ी, अल्प सो लियो अहारो । ततरि ण त्याग कियो मन तीखै, हद पू रो मन हुंशियारो ॥ भिक्खु स्वामी आप जिन मत अधिक जमायो ॥ १ ॥ खेतसीजी स्वामी कहै ंच क र, तरकै न रणा त्यागो । पूज कहे देहो पत ी पाड़णी, वांरु विशेष चाहिजे वैरागो ॥ २ ॥ भाद्र शुक्ल नवमी दिन भिक्खु, हे करूं आ र ना पच ाण । कहे खेतसी ी मुझ र केरो, चमं आहार ों पिछाण ॥ ३ ॥ अलन आहार खेतसीजी आणियो, चाख किया पचखाणो । वारु मन राख्यो शिष्य

सुविनीत रो, पिण बहुल इच्छा मत जाणो ॥ ४ ॥ दशम दिन भारीमालजी विनवै, स्वामी आहार कीजे सुविहाणो । चाली च्या दश मोठ रे आसरे, चाख किया पचखाणो ॥ ५ ॥ इग्यारस आहार त्याग दियो मुनि, अमल पाणी उपरन्तो । भ हिव आहार लेतो मत जाणजो, कह्यो बयण मोल तन्तो ॥ ६ ॥ बारस दिन बेलो कियो पूज, तीन आहार तणा किया त्यागो । सखर संथारो कर्ण स्वामी मो, वारु चढ़तो वैरागो ॥ ७ ॥ सा ी हाट सूं उठ नीश्वर चलिया २ आयो । पकी हाट ने पका नीश्वर पको संथारो सुहायो ॥८॥ संयण शिष्यां कीधो सुखदाई, रु पूज लियो विसरामो । इतले रायचन्दजी आय ने, रूड़ा वचन वदैं अभिरामो ॥ ६ ॥ स्वामी कृपा कीजे द ण दीजिये, वदै ब्र चारीजो विख्यातो । पूज स्हामुं जोवे नेत्र ोलने, हद मस्तक दीधो हाथो ॥ १० ॥ पूज ने कहे प्रा म हीण पड़िया, षराय तणी सुण वायो । भिक्खु पहिलां तन तोल त्यारी था, सुण सिंह ज्यूं उठ्या मुनिरायो ॥ ११ ॥ भिक्खु कहे बोलावो भारीमाल ने, बले तसी जी ने विचारो । याद करंतांई सन्त दोनूंई, झट आय उभा है तिवारो ॥ १२ ॥ नमोथुणो कियो अरिहन्त

सिद्धा ने, तीखे वच बोल्या तामो। बहु नर नारी सुणतां ने देखतां, संथारो पचख्यो भिक्खु स्व गो ॥ ३ ॥ शिष्य पर्म भक्ता कहै स्वामी ने, क्यूं न राख्यो अमल रो ।गारो। पूज कहै ।गार ि ो हिवै, किसी करणी काया नी सारो ॥ १४ ॥ भा . । सुदि बार भलो तिथी, सोमवार सुविचारो। अण-शण ाद ो वैराग आणी ने, शुद्ध छेहलो दुघड़ियो ।रो ॥१५॥ घणा जन न्ता गुण गावन्ता, बोलत बेकर जोड़ो। धिन २ हो थे मोटा मुनीश्वर कीधी वड़ा वडेरां री होडो ॥ १६ ॥ केई नमु ।या ने प्रणमें पाया, वि सत होवै वि । । ंत करी ने स्वामी ने खमावंता, हिवड़े ।ण हु ।सं ॥ १७ ॥ धिन २ पूज रो धीरापणुं. धिन २ पूजरो ध्यानो। धिन २ स्वाम ूरा घणा दरा, न कियो मेरू समानो ॥ २८ ॥ । ी ए गुणसठमी ओपती, ुद्ध ढाले स्वाम थारो। भल य जशकर स्वा भिक्खु नों, रण महा सुखकारो ॥ १६ ॥

दोहा

केकां अभिग्रह पहवो कियो, यां शुद्ध मत काढ्यो सार।
छेहड़े अणशण आ ी पको उतरसी पार ॥ १ ॥
इण विध अभिग्रह आदर्यो, भोला लोकां ताम।

बात सुणी कई पचखियो, अणशण भिक्खु स्वाम ॥२॥
द्वेषी था जिन धर्म ना, चित्त पाम्या चमत्कार।
जाण्यो ए मारग खरो, कई वांदे बार बार ॥ ३ ॥
अति नर नारी आवता, गावत मुनि गुणग्राम।
बाजार मांहि अमावता, सरावता त्रिन स्वाम ॥ ४ ॥

॥ ढा ६० मी ॥

(राम को सुजश घणो एदेशी)

स्वाम तणो थारो सुणी हो, आवे ो नेक। कोड री ने करे घणा हो, वारु वैराग विशेष ॥ स्वामी नो सुजश घणो ॥ १ ॥ कोई कहे थारो सीझै स्वामी नो हो, त्यां लग काचा पाणी ना त्याग। कोई करै त्याग कुशील रा हो, वर चित आण वैराग ॥ २ ॥ केई म्र आरम्भ न ादरै हो, केई रै हरी ना पच ाण ॥ ३ ॥ केई धर्म तणा द्वेषी हुन्ता हो, ते पण अचरज पाम्या तिणवार। नमी कई ावी नम्या हो, स्वाम तणे संथार ॥ ४ ॥ पडिकमणो कीधां पछै हो, स्वाम भिक्खु सुविहाण। भारीमाल आदि शिष्य भणी हो, कहै बारु करो बखाण ॥ ५ ॥ शिष्य सुविनीत कहै सही हो, संथारो ापरे सोय। बखाण नो विशेष छै हो, तब पूज्य बोल्या अवलोय ॥ ६ ॥ किणहि ..ारजियां अणशण कियो हुवै

हो, तो रो वखाण त्यां जाय। मुझ अणशण माहें देशना हो, नहिं करो थे किण न्याय ॥ ७ ॥ वखाण कियो विस्तार सूं हो शिष्य सुविनीत श्रीकार। भागवली भिक्खु तणो हो, मिलियो जोग उदार ॥८॥ परिणाम चढ़ता पूज रा हो, इण विध निकली रात। दिन तेरस हिव दीपतो हो, प्रगटियो भात ॥९॥ गाम २ रा आवै घणा हो, दर्शण करवा देख। जाणक लो मंडियो हो, वारु हर्ष विशेष ॥ १० ॥ गुण स्वामी ना गावता हो, आवता अति जन वृन्द। हिवड़े हर्ष हुलसावता हो, पामता परमानन्द ॥ ११ ॥ जश करमो था जीवड़ा हो, जय जश करता जन। पर्म पूज मुख पेखने हो, तन मन होय न ॥१२॥ धुर ही थी धर्म छाण ने हो, शुद्ध मग लियो र। अन्त तांई उजवालियो हो, जिन मारग जयकार ॥१३॥ धोरी थे जिन धर्म ना हो, इम बोलै नर नार। शूर पणै खरो कियो हो, स्वामी थे संथार ॥ १४ ॥ ऐ ठमी गुण आगलो हो, रूड़ो ढा रंसाल। जय जश करण स्वामी तणो हो, वारु गुण विशाल ॥१५॥

॥ दोहा ॥

पाणी पीधो पूज जी, आफे चित उजमाल।
पोहर दिवस आभो प्रगट, आयो थो तिण काल ॥ १ ॥

साध बैठा सेवा करे, आणी हर्ष अपार।
श्रावक श्राविका स्वाम नो, देख रह्या दिदार ॥ २ ॥
भिक्खु ऋष शुद्ध भाव सूं, ध्यावत निर्मल ध्यान।
सकेतो जाणो स्वाम ने, उपनो अवधि सुज्ञान ॥ ३ ॥
साध श्राविक होवे सही, वैमानिक विख्यात।
अवधि ज्ञान तनु उपजै, आगम वचन आख्यात ॥ ४ ॥
दिन चढ्यो पहोर दोढ आसरे, सांभलतां सहु कोय।
वचन प्रकाशे किण विधे, मल सुणिये भवि लोय ॥५॥

॥ ढाल ६१ मी ॥

हेमराज जी स्वामी कृत
(नमो अरिहंताणं नमो सिद्ध निरवाणं एदेशी)

साधु आवे साहमां जावो, मुनि प्रकाशे वाणं। बले साधवियां आवे वारे, स्वामी बोले बचन सुहाणं॥ भवियण नमो गुरु गिरवाणं, नमो भिक्खु चतुर सुजाणं ॥ १ ॥ के तो कह्यो अटकल उनमाने, के कह्यो बुद्धि प्रमाणं। के कोई अवधि ज्ञान उपनो, ते जाणे सर्वनाणं ॥ केई नर नारी मुख सूं इम भाखै, स्वामी रा जोग साधां में बसिया। इतले एक मुहूर्त्त आसरे, साध आया दोय तिसिया ॥ ३ ॥ विकसत २ साधु वांदे, चर्ण लगावै शीशं। नरं नारी जाणे अवधि उपनो, साचो विश्वावीसं ॥ ४ ॥ स्वामी साधू आया जाणी, मस्तक दीधो हाथं। एटले दोय मुहूर्त्त आसरे, आयो साधवियां रो साथं ॥ ५ ॥ वैणी

रामजी साध वर्डीता. साथे खुशालजी आया। साधवियां वगतुजी जुमां डाईजी, प्रणमे भिक्खु पाया ॥ ६ ॥ परचा ज्यूं ज्यूं आय पुगे छै. नर नारी हर्पत थावें। धिन हो धिन थे मोटा मुनीश्वर, आप तुले कुण आवे ॥ ७ ॥ आया ते साधु गुण गावे, भांत २ प्रणाम चढ़ावे। थे मोटा उपगारी महिमा भारी, सखरो सुजश सुणावे ॥ ८ ॥ थे पका २ पाखण्डी हटाया, सूत्र न्याय बताया। दान दया आज्ञा दीपाया। बुद्धिवन्तां मन भाया ॥ ६ ॥ सावद्य निर्वद्य भला निवेड़ा, कीधा बुद्धि प्रमाणं। सूत्र न्याय श्रद्धा शुद्ध लीधी, धारी अरिहन्त आणं ॥ १० ॥ साधां जाणयो स्वामी सुतांने, घणी हुई छै वारं। आप कहो तो बैठा करां हिव, जब भरियो कांय हुंकारं ॥ ११ ॥ बैठा कर साधु लारे बठा, गुण स्वामी रा गावें। बहु नर नारी दर्शण देखी, मन में हर्पत थावें ॥ १२ ॥ आयो आऊखो अण चिन्तवियो, बैठा २ जाणं। सुखं समाधे वाह्य दिसत, चट दे छोड्या प्राणं ॥१३॥ अणशण आयो सात भगत नो, तीन भक्त संथारं। सात पोहोर तिण माहें वरत्या, पको उतार्यो पारं ॥ १४ ॥ मांहडी सीवे दरजी पूगा, कहे सूई पग में घाली। अचरज लोक पाम्या अधिको, चट स्वामी

गया चाली ॥ १५ ॥ सम्वत् अठारे साठे वर्षे, भाद्रवा सुद तेरस मंगलवारं। पूज पोंहता परलोक शिरियारी, गुण गावै नर नारं ॥ १६ ॥ दिन पाछलो दोढ पोहर आसरे, उण वेलां आऊषो आयो। दिवसे मरवो रात्रि जनमवो, कहै बिर । ने थायो ॥१७॥

॥ दोहा ॥

संथारो कीधो सखर, सखर स्वाम श्रीकार।
शुभ पणे सिझ्यो सखर, सखर सुजश संसार ॥ १ ॥
साधां तन वोसिरायनें, चिउं लोगस चित्त धार।
कियो तदा शुद्ध काउसग्ग, अरु तिण दिन तज आहार ॥२॥
पूज तणो विरहो पड्यो, कठिण अधिक कहिवाय।
याद कियां अरिहंत नें, समभावे सुख पाय ॥ ३ ॥
अहो अथिर संसार ए, संजोग जठे विजोग।
पूज सरीषा पुरुष था, पोंहता आज पर लोग ॥ ४ ॥
देख्या भिक्खु दिलकरी, वारु निसुणी वाण।
याद करे ते अति घणा, ऊन गुण ग्राही जाण ॥ ५ ॥
चिउं तीर्थं आवी मिल्या, स्वाम तणे संथार।
मास भाद्रवा रे मझे, अचरज ए अधिकार ॥ ६ ॥
प्रबल पुन्य ना पोरसा, प्रबल गुणागर जाण।
पूज हुन्ता प्रगट पणे, परभव कियो पयाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल ६२ मी ॥

(आनन्दा रे एदेशी)

स्वाम संथारो सीझियां गुणधारी रे, म्हेल्या मांढी रे मांहिं ॥ स्वाम सुखकारी रे ॥ तेरह ...ण्डी

मांहढ़ी तणी गु० महिमा कीधी अथाय स्वा ॥ १ ॥
रुपया सैंकड़ा लगाविया गु० अनेक उछाल्या लार ॥
भिक्खु कृष भारी रे ॥ ए विच किरतव संसार ना
गु० तिणमें नहीं तन्तसार स्वा ॥ २ ॥ वात हुई
जिसी वरणवे गु० मभावे सुविचार स्वा० तिण
माहें पाप म ताणजो गु० दम्भ तजी दिलधार स्वा०
॥ ३ ॥ अति घन जन वृन्द आविया गु० आदरे सूंस
नेक स्वा० त्रिविध वैराग वधावता गु० वारु आण
विवेक स्वा० ॥ ४ ॥ पूज संथारो पेखने गु० गावै
जन ण म स्वा० धिन २ भिक्खु स्वामजी गु०
निस्य त लीजे नाम ० ॥ ५ ॥ आदेज वचन
सु ओपतो गु० स्वामी सिंघ सरूप स्वा० खिम्यावन्त
स्वामी रा गु० खरा स्वाम सद्रूप ॥ ६ ॥ नीत
स्वाम नो निरमली गु० प्रीत स्वाम गुण पूर स्वा०
जीत लिया न दुरमती गु० स्वाम वदीत सनूर ॥७॥
स्वाम बुद्धि ना सागरू गु० निरमल मेल्या न्याय
स्वा० त्यच आरे पांचमें गु० जिन मत दियो
जमाय ॥ ८ ॥ उद्यमी स्वामी ति घणा गु० स्वाम
सुमति सुखदाय स्वा० स्वाम गुपति हद शोभती गु०
निरम स्वाम नरमाय ॥ ६ ॥ मणिधारी स्वाम
महा मुनि गु० स्वाम प्रबल तोष स्वा० जग तारक

स्वाम जाणजो गु० पूरण स्वाम नो पोष ॥ १० ॥
दिशावान स्वाम दीपतो गु० धिकी द्धि उत्पात
स्वा० मिथ्या तिमिर धुमेटवा गु० सूर्य स्वाम ख्यात
॥ ११ ॥ सखर भिक्खु नाम सांभली गु० पाखण्ड
भय पामंत स्वा० जश भिक्खु नो जगत में गु० देश
२ में दीपंत ॥ १२ ॥ स्वाम तिलक शासण तणो गु०
स्वाम आज्ञा सु उवेख स्वा० स्वाम समी हद शोभता
गु० स्वाम दमोसर देख ॥ १३ ॥ स्वाम सुदान
दीपावियो, गु० स्वाम सुज्ञान सरछ स्वा० स्वाम
सुजान शोभावियो गु० स्वाम सुमान मरछ ॥ १४ ॥
द्रव्य भाव स्वाम देखाविया गु० स्वाम आ व गो र-
खाय १० पुन्य पाप ने पर ने गु० स्वाम दिया
सरधाय ॥ १५ ॥ स्वाम संवर अरु निरजरा गु० वंध
मोक्ष पहिचाण स्वा० स्वाम जीवादिक जुजूआ गु०
स्वाम देखाया सुजाण ॥ १६ ॥ स्वाम दया ओल-
खाय ने गु० अति घन कीध उद्योत स्वा० स्वाम
सावद्य निरवद्य सोधने गु० घण घट घाली जोत ॥
१७ ॥ शुभ जोगां ने स्वाम जी गु० ओलखाया हद
रीत स्वा० आसता स्वाम नी आद ं गु० जाय
जमारो जीत ॥ १८ ॥ इन्द्रवादी ओलखावियो गु०
कर कालवादी निकन्दन स्वा० प्रज्ञावादी पिछाणियो

गु० स्वा चेलो चन्द ॥ १६ ॥ आचार सरधा ऊपरे गु० स्वाम शोध्या शुद्ध न्याय स्वा० स्वाम सूत्र वच शिर धरी ० व्रत अव्रत बताय ॥ २० ॥ सोध्या तो. धे नहीं गु० स्वाम सरीषा साध स्वा० करोड़ो पड्यां चरचा तणो गु० विला भिक्खु याद ॥ २१ ॥ स्वा भीखणजी रो । गु० भरत क्षेत्र रे हि स्वा० हुवा ने होसी वले गु० हिवड़ां नहिं देखाय ॥ २२ ॥ ए । भिक्खु ऋष ओपता गु० याद करे नर नार स्वा० पूज गुणा रो पंजारो गु० स्वाम कल सुखकार ॥ २३ ॥ स्वाम तणो नाम भरयां गु० आवे र्ष अथार स्वा० तो च नो कहिवो किसूं गु० पामें तन न प्यार ॥ २४ ॥ शरियारी में स्वामजी गु० ठे बर्प थार, । भाद्रवा में भलो गु० जीत गर्भ में जिवार ॥ २५ ॥ पञ्चम काले ऊपनो गु० पिण इक मुझ हर्प पर्म स्वा० आप शुद्ध ग धा पछै गु०जन्म थई पायो धर्म ॥२६॥ आशा पूरण आप छो गु० मेटण संताप स्वा० मरण नित्य ति स्वाम नो गु० जपूं तुम्हारो जाप ॥ २७ ॥ सठमी गोपती गु० समरया स्वाम सुजाण स्वा० जय जश करण भिक्खु भला गु० पूरण प्रीत पिछाण ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

बरस तयालिस विचरिया, जाझो कांयक जोय।
चारित्र पाल्यो चूंप सूं, हर्ष हिये अति होय ॥ १ ॥
अधिक बल इर्यां तणो, निरमल देह निरोग।
भिक्खु सूरत अति भली, श्रम तीखो उपयोग ॥२॥
खबर चौमासा स्वाम ना, बाद अधिक विशाल।
सांभलजो भवियण सहु, बरस सहित चौमाल ॥३॥
आठ चौमासा आगे किया, असल नहिं अणगार।
सतरा सूं साठा लगे, बरत्यो शुद्ध व्यवहार ॥ ४ ॥
किहां २ चौमासा किया, जूजुआ नाम सुजाण।
संक्षेपे निरणय सहु, आखूं उत्क्रम आण ॥ ५ ॥

॥ ढाल ६३ मी ॥

(सीता आवे रे धर राग पदेशी)

शहर केलवे षट चोमासा, तरे इकवीसे सोय। पचीसे अड़तीसे गुणपचासे, अठावने त्रलोय ॥ भिक्खु भजले रे धर भाव ॥ १ ॥ चारु एक चौमासो वड़लु, बरस अठारे विचार। राजनगर बीसे शुद्ध रोते, कियो घणो उपकार ॥ २ ॥ दोय चौमासा किया दीपता, पवर टाल्ये पि ,ण। चौबीसे अठावीसे चारु, जन्म भूमि निज जाण ॥ ३ ॥ बगड़ी तीन चौमासा बारु, सतवीसे सुविशेष। तो रु छतीसे त्यां द्रव्य दीख्या महोछब देख ॥ ४ ॥ गढ़ रिणत भंवर किलारी तलेटो, नगर माधोपुर म्हाल। दोय

चौमासा किया दीपता इकतीसे इता ॥ ५ ॥
दोय चौमासा किया दीपता प्रगट शहर पींपार।
चउतीसे पैता ीसे वर्षे, कियो घणो उपगार ॥ ६ ॥
एक चौमासो शहर आंवेट में, वर्ष पैंतीसे विचार।
तीसे पादु सु दाई, भिक्खु गुण भण्डार ॥ ७ ॥
ोजत शहरे क ो स्वा जी, वारु एक चौमा ।
बर उपगार तेपने धर्म बृद्धि, हेम चरण तिण वास ॥
८॥ ीजी दुवारे तीन चौमासा, तसु धूर वरष तयाल।
पवर पचासे छपनै पूरण, बर उपगार विशाल ॥ ६ ॥
पुर में दोय चौमासा प्रगट, स्वाम क्रिया सुविहाण।
सैंतालीसे वर्ष सतावने, जूओ छोडायो जाण ॥ १० ॥
शहर खेरवे पांच चौमासा, छावीसे वतीसे छाण।
वर्ष इकताले अरु छयाले, वलि चौपने जाण ॥ ११ ॥
सात चौमासा पाली शहरे, तेवीसे ततीसे थाट।
च्या ीसे च ाले बावने, पच्चावने गुणसाट ॥ १२ ॥
चौमा ा शरियारी में, उगणीसै बावीसै सार।
गुणतीसे गुणा वया एकावने, साठे कियो संथार
॥ १३ ॥ पनरे गाम चौमासा प्रगट, स्वाम क्रिया
ेकार। ज्ञान दिवाकर घण घट घाली, मेट्यो
अंधार ॥ १४ ॥ श्री वर्द्धमान तणो शासण,
खरो दीपायो स्वाम। वहु जीवां ने प्रतिबोधी ने,

पोंहता परभव ठाम ॥ १५ ॥ सुख कारण तारण भव सारण, विघन विदारण वीर। नरक निवारण जनम सुधारण, सखरा स्वाम सधीर ॥ १६ ॥ समता दमता खमता रमता, नमता जमता न्हाल। तमता भ्रमता बमता तन मन गमता वचन विशाल ॥ १७ ॥ आप उजागर गुण मणि आगर, साघर स्वाम सुजाण। वयण सुधावागर धर्म जागर, नागर नाथ निध्यान ॥ १८ ॥ भरम विहण्डन दुरमति खण्डन, महि मण्डन मुनिराज। कुमति निकन्दन मन आनन्दन, पूज भवो दधि पाज ॥ १९ ॥ सुमती करण अघ हरण स्वामजी शिव वधू वरण सनूर। भव दधि तरण करण सुख सम्पति, चरण धरण चित्त शूर ॥ २० ॥ परम धरम भज भरम करम तज, शरम नरम उभ साज। शिव पद अचरम आप आराधण, रूडे भिक्खु ऋषराज ॥ २१ वर वायक पद लायक वारु, नायक नाथ निहाल। वोद्धि पमायक धरम वधायक, दायक स्वाम दयाल ॥ २२ ॥ ज्ञान गम्भीरा सखर सधीरा, षट पीहरा तज खार। हिवड़ै स्वाम अमोलक हीरा, तोड़ जंजीरा तार ॥ २३ ॥ जप तपनी तरवारे झटको पाखण्ड पटको पेल। समय सुलटको गुण नो गटको मटको मन को मेल ॥ २४ ॥ ऐसा भिक्खु आप ओजागर

अन्तरियां इण आर। स्वाम जिसा चौथै आरे पिण, विरला संत विचार ॥ २५ ॥ जन्म किल्याण कंटाल्यो जाणो, शरियारी चरम किल्याण। द्रव्य दीख्या महोछव बगड़ी में, जोड़ै ए त्रिहुं जाण ॥ २६ ॥ स्वाम भिक्खु हिवड़े संभरियां, हियो तन मन हुलसाय। सूक्ष्म बुद्धि करी सुविचार्यां, विमल कमल विकसाय ॥ २७ ॥ भाद्र शुक्ल तेरस दिन भिक्खु परभव कियो पयान। तिथे चउदस धरती धूजी अति, न्याय जाणै बुद्धिवान ॥ २८ ॥ तीन प्रकारे धरती धूजै, ठाणांग तीजै ठाण। भेद जुजूआ श्री जिन भाख्या, समझै सखर सयाण ॥ २९ ॥ घर में वर्ष पचीस आसरै, आठ भेष में तास। पछै संजम ले परभव पोंहता, चमालीस में वास ॥ ३० ॥ सर्व आउ सतंतर वरष आसरे, साध्यो भिक्खु स्वाम। जीव खणा समझाविया रे, कीधो उत्तम काम ॥ ३१ ॥ साध साधवी स्वाम छतां आसरे, एक सौ चार बोद्धि। देशव्रत दीधो बहुने, सखरी रीत सुशोध ॥ ३२ ॥ अड़तो सहंस आसरे कीधो, युक्ति न्याय सूं जोड़। मुरधर मेवाड़ ढूंढार हाडोती, विचर्या शिरमणि मोड़ ॥३३॥ राम नाम ज्यूं रटे स्वाम ने मुझ मन अधिक निहोर। हंसा मानसरोवर हरषे, चित्त जिम चन्द

चकोर ॥ ३४ ॥ चात्रक मोर पपइया घन चिन, गरजी ध्यान गगन। राग विलासी राग लापे, मुझ भिक्खु में मन ॥ ३५ ॥ पतिवरता समरे जिम पिउ ने, गोप्यां रे मन कान्ह। तंबोली रा पान तणी पर, धरूं स्वाम नो ध्यान ॥ ३६ ॥ आशा पूरण आप तणा गुण, कह्या कठा लग जाय। सागर जल गागर किम मावे, किम आकाश मिणाय ॥ ३७ ॥ श्री वीर तणे पट स्वाम सुधर्मा, भिक्खु पट भारी माल। रायचन्द ऋष तीजे पाटे, दाख्यो आगुंच दयाल ॥ ३८ ॥ आप तणा गुण हूं किम विसरूं, आप तणो आधार। समरण आप तणो नित्य समरूं, आप दयाल उदार ॥ ३९ ॥ नाम आपरो घट भींतर मुझ, जपूं आपरो जाप। तुझ नामे दु दोहग दूरा, कटै पाप सन्ताप ॥ ४० ॥ मन वंछित मिलिये तुझ समरण, साध्यां सेती सोय। भजन तुम्हारो भय भव भंजन, हर्ष अनोपम होय ॥ ४१ ॥ मंत्राक्षर जिम समरण मोटो, परख्यो म्हें तन मन। इह भव परभव में हितकारी, भिक्खु तणो भजन ॥ ४२ ॥ नमो २ भिक्खु ऋष निरमल, मोक्ष तणा दातार। समरण स्वाम तणो शुद्ध साध्या, शिव सुख पामें सार ॥ ४३ ॥ हूंस घणा दिन सूं मुझ हूंती, आज फली

मन आश। भिक्षु यश रसायण नामें, ग्रंथ रच्यो सुविलास ॥ ४४ ॥ विस्तार रच्यो भिक्खु मुनिवर नो, सुणियो तिण अनुसार। भिक्षु दृष्टान्त हेम लिखाया, देखो ते अधिकार ॥ ४५ ॥ वेणीरामजी हेम कृत वर, भिक्खु चरित सुपेख। इत्यादिक अवलोकी अधिको, ग्रंथ रच्यो सुविशेष ॥ ४६ ॥ अधिको ओछो जे कोई आयो, विरुद्ध आयो हुवे कोय। सिद्ध अरिहन्त देव री साखे, मिच्छामि दुक्कड़ं मोय ॥ ४७ संवत उगणीसे आठे आसोज, एकम सुदि सार। शुक्रवार ए जोड़ रची, बीदासर शहर मझार ॥४८॥ तेसठमो ढाले स्वामी समरया, कर्म काटण रे काम। कर जोड़ी ऋष जीत कहे, नित्य लेऊं तुम्हारो नाम ॥४॥

॥ कलश

मतिवन्त सन्त महन्त महा मुनि, तन्त भिक्खु ऋष तणा। गुण सघन गाया परम पाया, हद सुहाया हिये घणा ॥ तज जंत्र मंत्र सुतंत्र लौकिक, भज ए मंत्र मनोहरु। सुख सद्म पद्म सुकरण जय जश नमो भिक्खु मुनिवरु ॥

॥ सम्पूर्णम् ॥